हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 7, अंकः 273, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 | 28 मार्च, 2023 दिन मंगलवार | गाजीपुर/वाराणसी

नैनी जेल लाया गया अतीक अहमद कल 11 बजे कोर्ट में किया जाएगा पेश

चित्रकूट में 10 मिनट तक रुका माफिया का काफिला

प्रयागराज। उमेश पाल हत्याकांड में नामजद माफिया अतीक अहमद को गुजरात की साबरमती जेल से पुलिस प्रयागराज की नैनी जेल लेकर पहुंच गई है। कल 11:00 बजे अतीक अहमद को प्रयागराज कोर्ट में पेश किया जाएगा। कोर्ट ने आदेश जारी कर कहा कि 28 मार्च को 11:00 बजे अतीक अहमद को कोर्ट में पेश करें।

अतीक अहमद को प्रयागराज कोर्ट में पेश किया जाएगा। कोर्ट ने आदेश जारी कर कहा कि 28 मार्च को 11:00 बजे अतीक अहमद को कोर्ट में पेश करें। एमपी एमएलए कोर्ट के न्यायाधीश दिनेश चंद्र शुक्ला ने निर्देश जारी किया है।

चित्रकूट में 10 मिनट तक रुका माफिया का काफिला – चित्रकूट में पुलिस लाइन के पास रेलवे क्रॉसिंग बंद होने के कारण लगभग 10 मिनट तक माफिया अतीक अहमद का काफिला खड़ा रहा। इस दौरान कड़ी सुरक्षा के बीच अतीक अहमद से बातचीत करने का प्रयास किया गया लेकिन वह कुछ नहीं बोला। दो बार वह है अपने बंदी वाहन के गेट तक आया लेकिन उसमें मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने उसे

लौटा दिया। लगभग 20 वाहनों के बीच अतीक अहमद को कड़ी सुरक्षा में रखा गया था।

न्यायालय के आदेश का हमारी सरकार पालन करवाएगी-भूपेंद्र चौधरी- भूपेंद्र चौधरी ने कहा कि सीएम योगी ने माफिया के तंत्र को समाप्त करने का काम किया है। अतीक अहमद के संबंध में हमारी सरकार का कर्तव्य है कि जो भी न्यायालय का आदेश होगा उसका हमारी सरकार पालन करवाएगी।

मैं सरकार से यही अपील करूंगी कि इनका अस्तित्व खत्म किया जाए-उमेश पाल की पत्नी- प्रयागराज में उमेश पाल की पत्नी जया पाल ने कहा कि मैं चाहती हूं कि अतीक अहमद को कोर्ट फांसी की सजा दे। मैं सरकार से यही अपील करूंगी कि इनका अस्तित्व खत्म किया जाए नहीं तो इनका अगला टार्गेट कोई भी हो सकता है, हो सकता है मैं ही हूं।

जैसे मेरे बेटे की हत्या की थी, वैसे ही इसका होना चाहिए-उमेश पाल की मां- उमेश पाल की मां शांती देवी ने कहा कि जो भी अदालत का फैसला होगा वह हमें मंजूर हैं। यह (अतीक अहमद) जेल से बैठकर सारा कार्यक्रम करता आ रहा है। अगर इसकी मौत हो जाएगी तब मुझे तसल्ली मिलेगी। जैसे मेरे बेटे की हत्या की थी, वैसे ही इसका होना चाहिए।

गाय से टकराकर पलटते-पलटते बची माफिया अतीक की वैन, मूंछों पर ताव देकर बोला- मुझे कोई डर नहीं

शिवपुरी। उत्तर प्रदेश का माफिया डॉन अतीक अहमद का काफिला सोमवार सुबह मध्यप्रदेश की सीमा में प्रवेश करते हुए शिवपुरी के रामनगर टोल प्लाजा से गुजरा। यहां सुबह करीब 6:30 बजे अतीक अहमद को भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच वैन से वॉशरूम के लिए नीचे उतारा गया। इस दौरान अतीक ने मूंछ पर ताव दिया और पहले कुछ भी कहने से मना दिया। लेकिन जब उससे दोबारा पूछा गया कि जिस तरह की खबरें चल रही है क्या आपको डर लग रहा है तो उसने जवाब देते हुए कहा कि मुझे कोई डर नहीं लग रहा है। शिवपुरी जिले से होकर गुजरे गैंगस्टर अतीक अहमद का काफिला जैसे ही खराई चेकपोस्ट से होकर गुजरा वहां, अचानक अतीक अहमद की वैन के सामने एक गाय आ गई और वैन से टकरा गई। हादसे में गाय की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई।

अब 'सावरकर' वाले बयान पर घिरे राहुल गांधी, उद्धव गुट ने कांग्रेस की बैठक का किया बहिष्कार

नई दिल्ली। राज्यसभा के नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने आज रात दिल्ली में अपने आवास पर एक बैठक के लिए एक-समान विचारधारा वाले दलों के नेताओं को आमंत्रित किया है। वही संजय राउत ने कहा कि उद्धव ठाकरे गुट ने आज मल्लिकार्जुन खरगे के आवास पर बैठक में शामिल नहीं होने का फैसला किया क्योंकि राहुल गांधी ने कहा कि मैं सावरकर नहीं हूं, मैं गांधी हूं। वही सावरकर के पोते रंजीत सावरकर ने कहा कि राहुल गांधी कह रहे हैं कि वह माफी नहीं मांगेंगे क्योंकि वह सावरकर नहीं हैं, मैं उन्हें चुनौती देता हूं कि वे ऐसे दस्तावेज दिखाएं जिनमें सावरकर ने माफी मांगी हो। इसके उलट वह दो बार रउ से माफी मांग चुके हैं। राहुल गांधी जो कुछ भी कर रहे हैं वह बचकाना है। राजनीति को बढ़ावा देने के लिए देशभक्तों के नाम का इस्तेमाल निंदनीय है। इससे पहले शिवसेना (यूबीटी) के नेता उद्धव ठाकरे ने रविवार को चेतावनी दी थी कि सावरकर को नीचा दिखाने से विपक्षी गठबंधन में दरार पैदा होगी। उन्होंने कांग्रेस नेता से सावरकर का अपमान करने से बचने को कहा। उद्धव ने कहा कि अगर राहुल गांधी सावरकर को निंदा करना जारी रखते हैं तो विपक्षी गठबंधन में दरार आ सकती है।

सुप्रीम कोर्ट से केजरीवाल को राहत, चुनाव कानून के उल्लंघन को लेकर यूपी में कार्यवाही पर बढ़ाई रोक

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को राहत देते हुए उनके खिलाफ यूपी में चुनाव कानून के उल्लंघन को लेकर कार्यवाही करने पर लगी रोक को बढ़ा दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल के खिलाफ 2014 के संसदीय चुनाव प्रचार के दौरान उत्तर प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस के खिलाफ कथित रूप से आपत्तिजनक टिप्पणी करने के मामले में उनके खिलाफ दर्ज एक मामले में कार्यवाही पर लगी अंतरिम रोक बढ़ा दी है। केजरीवाल ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ के एक आदेश के खिलाफ शीर्ष अदालत का दरवाजा खटखटाया था। दरअसल, लखनऊ पीठ ने पिछले महीने सुल्तानपुर में एक निचली अदालत के समक्ष लंबित आपराधिक मामले में उन्हें आरोपमुक्त करने से इनकार कर दिया था। प्राथमिकी में, केजरीवाल पर जनप्रतिनिधित्व (आरपी) अधिनियम, 1951 की धारा 125 के तहत अपराध का आरोप लगाया गया था, जो चुनाव के दौरान वर्गों के बीच दुश्मनी या नफरत को बढ़ावा देने से संबंधित है। न्यायमूर्ति केएम जोसेफ और न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना की पीठ ने उत्तरदाताओं की ओर से किसी की उपस्थित नहीं होने के बाद मामले की सुनवाई मई के पहले सप्ताह में तय की है। पीठ ने कहा, इस मामले में अंतरिम आदेश जारी रहेगा।

मामले में केजरीवाल की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता एएम सिंघवी पेश हुए। केजरीवाल ने चुनाव प्रचार के दौरान कथित तौर पर कहा था, 'जो कांग्रेस को वोट देगा, मेरा मानना होगा, देश के साथ गद्दारी होगी... जो भाजपा को वोट देगा उसे खुदा भी माफ नहीं करेगा।'

माओवादियों की आइईडी से एक जवान शहीद

जगदलपुर (ईएमएस)। बीजापुर जिले में माओवादियों की बारूदी सुरंग की विस्फोट से एक जवान शहीद हो गया। बस्तर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक सुंदरराज पी ने बताया कि बीजापुर जिले तिमेनार में चल रहे सड़क निर्माण कार्य की सुरक्षा में निकली पुलिस पार्टी का जवान माओवादियों द्वारा लगाए गए प्रेशर आइईडी की चपेट में आने से शहीद हो गया है। श्री सुंदरराज पी ने बताया कि मिरतुर थाना क्षेत्र में स्थित छत्तीसगढ़ आर्म फोर्स कैम्प एटापाल और तिमेनार केम्प के बीच सड़क निर्माण का कार्य चल रहा है। जिसकी सुरक्षा देने तिमेनार कैम्प से छत्तीसगढ़ आर्म फोर्स का एक दल निकला था इसी दौरान सुबह एटेपाल केम्प से महज एक किलोमीटर दूरी पर सड़क से लगे टेकरी में माओवादियों द्वारा पूर्व से लगाये गए प्रेशर आईईडी की चपेट में आने से छत्तीसगढ़ आर्म फोर्स 19 बटालियन के वाहिनी डी कम्पनी के एसीसटेंट सहायक प्लाटून कमांडर विजय यादव शहीद हो गया। शहीद जवान को भैरमग थाने में गॉड ऑफ ऑनर दिए जाने की तैयारी की जा रही है। शहीद जवान का जगदलपुर धरमपुरा स्थित दुर्गा मंदिर के पास अस्थायी निवास है।

राहुल गांधी की सदस्यता के मुद्दे पर संसद में संग्राम

नई दिल्ली। राहुल गांधी को लोकसभा सदस्यता से अयोग्य घोषित किए जाने के बाद सियासी संग्राम छिड़ा है। इसे लेकर पूरा विपक्ष एकजुट नजर आ रहा है और सरकार पर हमलावर है। इसके चलते लोकसभा की कार्यवाही शाम 4 बजे तक तथा राज्यसभा की कार्यवाही दोपहर दो बजे तक स्थगित कर दिया गया। लोकसभा की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्ष ने जोरदार हंगामा किया और सदन में पेपर उछालने लगें। हंगामे के कारण लोकसभा की कार्यवाही शुरू होते ही स्पीकर ओम बिरला ने शाम चार बजे तक के लिए स्थगित कर दिया। वहीं राज्यसभा में भी विपक्ष ने नारेबाजी की और हंगामे के कारण राज्यसभा की कार्यवाही दोपहर दो बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। आज बजट सत्र के दूसरे चरण का 10वां दिन है। संसद के दोनों सदनों में हंगामे के पूरे आसार हैं। विपक्षी दल संसद के भीतर सरकार को घेरने के मूड में हैं। राहुल गांधी की सदस्यता जाने के बाद काले कपड़ों में संसद पहुंचे विपक्ष के सदस्यों ने विरोध-प्रदर्शन किया. संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही स्थगित होने के बाद विपक्षी दलों के सांसद संसद परिसर में स्थित गांधी प्रतिमा के पास जुटे और अडानी मुद्दे को लेकर तख्तियां लेकर विरोध-प्रदर्शन किया। इससे पहले राहुल

गांधी की लोकसभा सदस्यता को लेकर विपक्षी की रणनीति क्या होगी, इसे लेकर रणनीति बनाने के लिए विपक्षी दलों की बैठक हुई। इस बैठक में कांग्रेस के साथ ही अन्य विपक्षी दलों के नेता मौजूद हैं।

राहुल गांधी को अयोग्य ठहराने के विरोध में कांग्रेस सांसद काले कपड़े पहन संसद पहुंचे- पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के लोकसभा से निष्कासन और अडाणी मुद्दे के विरोध में सोमवार को कांग्रेस सांसद काले कपड़ों में संसद पहुंचे। इनके अलावा, कुछ अन्य विपक्षी नेता भी काले कपड़े पहनो हुए थे। इन लोगों ने संसद में गांधी प्रतिमा के पास विरोध प्रदर्शन किया। विपक्षी सदस्यों ने विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा उनके कक्ष में बुलाई गई बैठक में भाग लिया और सदन में एक संयुक्त रणनीति पर मंत्रणा की। कांग्रेस सांसदों ने राहुल गांधी की अयोग्यता के खिलाफ लोकसभा में स्थगन नोटिस दिया है और राज्यसभा में विपक्ष के सांसदों ने हिंडनबर्ग मामले में निलंबन नोटिस और राजनीतिक नेताओं के खिलाफ जांच एजेंसियों के दुरुपयोग का प्रस्ताव दिया है। कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने लोकसभा में एक स्थगन नोटिस पेश किया, जिसमें कहा गया यह सदन राहुल गांधी की अयोग्यता पर चर्चा करने के लिए शून्यकाल और दिन के अन्य कार्यों को स्थगित करता है।

भारत ने लिखा नेपाल सरकार को पत्र, अमृतपाल को नेपाल के रास्ते विदेश भागने से रोके, करे गिरफ्तार

काठमांडो। इस वक्त भारत का मोस्ट वांटेड खालिस्तानी अलगाववादी अमृतपाल सिंह कहां है, इसे लेकर कई तरह की अटकलें लग रही हैं। यह खबर भी आई कि वह नेपाल भाग गया है और वहां से वह लंदन या कनाडा भाग सकता है। इस आशंका को लेकर काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास ने नेपाल सरकार से कहा है कि वह अमृपाल को नेपाल के रास्ते किसी और देश जाने से रोके। विदेश मंत्रालय को लिखे गए पत्र में भारतीय दूतावास ने आशंका जताई है कि अमृतपाल नेपाल में है और अगर वह यहां से किसी और देश भागने की कोशिश करता है, तो नेपाल सरकार उसे तत्काल गिरफ्तार कर भारत के हवाले करे। भारतीय दूतावास की ओर से भेजे गए पत्र में कहा गया है कि अमृतपाल के पास कई फर्जी पासपोर्ट हैं और वह किसी भी तरह नेपाल के रास्ते किसी और देश में भागने की कोशिश कर सकता है। इसलिए नेपाल सरकार अपने सभी हवाई अड्डों और अहम ठिकानों पर अलर्ट जारी करे और अमृतपाल को बाहर जाने से रोके और गिरफ्तार करे। नेपाल के मशहूर अखबार काठमांडू पोस्ट को मिली जानकारी के मुताबिक नेपाल सरकार ने भारतीय दूतावास की ओर से भेजे गए पत्र और अमृतपाल सिंह से जुड़ी तमाम जानकारियां, उसकी तस्वीरें और अहम दस्तावेज एयरलाइंस से जुड़े सभी होटलों, सभी संबंधित विभागों और एजेंसियों को भेज दी हैं, जिसमें यह भी बताया गया है कि अमृतपाल अलग अलग नाम और हुलिये में भी पाया जा सकता है। इधर भारतीय पुलिस तेजी से अमृतपाल की तलाश में जुटी है और तमाम संभावित ठिकानों पर पुलिस और खुफिया विभाग सक्रियता के साथ काम कर रही है।

सुप्रीम कोर्ट से लालू को राहत, जमानत को चुनौती देने वाली सीबीआई की याचिका पर नोटिस से इनकार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट से सोमवार को लालू प्रसाद यादव को राहत मिली। सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड के डोरंडा कोषागार मामले में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की जमानत को चुनौती देने वाली सीबीआई की याचिका पर नोटिस जारी करने से इनकार कर दिया और इसे लंबित अपील की सूची में डाल दिया। इस मामले में लालू यादव को पांच साल की जेल की सजा सुनाई गई थी। न्यायमूर्ति अजय रस्तोगी और न्यायमूर्ति बेला एम त्रिवेदी की पीठ ने कहा कि वह नोटिस जारी नहीं कर रही है बल्कि मामले को सीबीआई द्वारा दायर इसी तरह की लंबित अपील के साथ जोड़ रही है। अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू और अधिवक्ता रजत नायर ने मामले में नोटिस जारी करने की मांग की, लेकिन पीठ ने कहा कि वह मामले की एक साथ सुनवाई करेगी और नोटिस जारी करने को लेकर इच्छुक नहीं है। सीबीआई ने अपनी याचिका में लालू यादव को जमानत देने के झारखंड उच्च न्यायालय के 22 अप्रैल, 2022 के आदेश को चुनौती दी थी। 74 वर्षीय यादव चारा घोटाले के विभिन्न मामलों में दोषी ठहराए जाने के बाद खराब स्वास्थ्य के कारण वर्तमान में जमानत पर बाहर हैं। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू को डोरंडा कोषागार से 139 करोड़ रुपये से अधिक के गबन से जुड़े पांचवें चारा घोटाले के मामले में रांची की एक विशेष सीबीआई अदालत ने पांच साल की जेल की सजा सुनाई थी और 60 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया था। चारा घोटाला मामले में यादव को सीबीआई अदालत ने पिछले साल 15 फरवरी को दोषी ठहराया था और 21 फरवरी को उन्हें पांच साल कैद और 60 लाख रुपये जुमार्ने की सजा सुनाई गई थी। शीर्ष अदालत ने सोमवार को सीबीआई की याचिका को एजेंसी की अन्य याचिका के साथ टैग कर दिया जिसमें उसने यादव को जमानत देने के उच्च न्यायालय के 2019 के आदेश को चुनौती दी थी।

राहुल को मिला नीतीश का साथ, महागठबंधन के विधायकों के साथ लोकसभा की सदस्यता रद करने का किया विरोध

पटना। मानहानि मामले में दो साल की सजा के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता रद करने को लेकर बिहार में महागठबंधन के नेताओं ने सोमवार को केंद्र के खिलाफ सदन के बाहर से लेकर अंदर तक प्रदर्शन किया।

महागठबंधन में शामिल जदयू, राजद और अन्य पार्टी के विधायक अपने हाथ और सिर पर काली पट्टी बांधकर विधानसभा पहुंचे। हाथों में गांधी की पोस्टर लेकर विधायकों ने 'लोकतंत्र और संविधान खतरे में' जैसे नारे भी लगाए। एक समाचार एजेंसी के मुताबिक, इस पूरे विरोध प्रदर्शन के दौरान जो सबसे अहम बात रही कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी राहुल के समर्थन में दिखे। ये पहला मौका है जब सीएम ने कांग्रेस नेता की लोकसभा सदस्यता रद करने को लेकर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की और केंद्र का विरोध किया। अबतक उनकी चुप्पी से कई तरह की चचाएं हो रही थी। सुबह 11 बजे जब बिहार विधानसभा के बजट सत्र की कार्यवाही शुरू हुई, तो कांग्रेस के विधायक नारेबाजी करते हुए आसन के पास आ गए। इसके बाद भाकपा माले के सदस्यों ने भी कांग्रेस का समर्थन दिया, जो नीतीश कुमार सरकार को बाहर से समर्थन देते हैं। काफी हो-हंगाने के बीच भाजपा के सभी विधायक सदन से वॉक आउट कर गए। इसके बाद कांग्रेस और वामपंथी सदस्य भी अपनी-अपनी सीटों पर लौट आए और सदन ने प्रश्नकाल की कार्यवाही शुरू की।

भोजपुरी गायक समर सिंह ने बर्बाद किया...आकांक्षा दुबे की मां ने लगाया आरोप

वाराणसी। अभिनय के क्षेत्र में मेरी फूल सी बच्ची आकांक्षा ने अपनी प्रतिभा के दम पर एक अलग मुकाम बनाया था। समर सिंह ने मेरी बेटी की जिंदगी बर्बाद कर दी। वह आकांक्षा से इतनी बेरहमी से पेश आता था कि ऐसा दुश्मन भी नहीं करते हैं। यह कहते हुए सोमवार को वाराणसी के सारनाथ थाने में भोजपुरी अभिनेत्री आकांक्षा दुबे की मां मधु दुबे दहाड़ें मार कर रोने लगीं। उन्होंने कहा कि हमेशा खुश रहने वाली मेरी साहसी बिटिया को समर सिंह की काली नजर लग गई। और वह हमें आखिरी सांस तक न भूलने वाला जख्म देकर न जाने कहां चली गई। रोती बिलखती हुई मधु दुबे को उनके परिजन और सारनाथ थाने की महिला पुलिसकर्मी बड़ी ही मुश्किल से संभाले हुई थीं।

रोते-रोते कहा कि मेरी बेटी को इंसाफ चाहिए। गुस्से में पूछा कि अगर समर सिंह ने कुछ नहीं किया तो वह कल से क्यों गायब है। उन्होंने भोजपुरी गायक समर सिंह व उनके भाई संजय सिंह पर प्रताड़ित करने समेत अन्य आरोप लगाकर तहरीर दी। पुलिस ने आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। समर सिंह मूलरूप से आजमगढ़ के मेंहनगर का रहने वाले हैं। आकांक्षा दुबे की मौत के बाद से वो लापता हैं।

आकांक्षा दुबे भोजपुरी गायक समर सिंह के साथ वाराणसी के टकटकपुर क्षेत्र में लिव इन रिलेशन में रहती थीं। हाल के दिनों में दोनों अलग हुए थे। समर सिंह के दुर्व्यवहार से ही आकांक्षा दुखी रहने लगी थीं। इसी वजह से अवसादग्रस्त थीं। हालांकि, गायक से मनमुटाव व विवाद का आकांक्षा के काम पर कोई असर नहीं पड़ा था। रविवार सुबह आकांक्षा सारनाथ क्षेत्र के बुद्धा सिटी कॉलोनी स्थित एक होटल के कमरा नंबर 105 में मृत मिलीं। वह अपने बेड पर बैठी हुई थीं और उनके गले पर पंखे के हुक

के सहारे दुपट्टे का फंदा था। भोजपुरी अभिनेत्री आकांक्षा दुबे की मां मधु दुबे अपने बेटे के साथ सोमवार सुबह मुंबई से वाराणसी पहुंची। सारनाथ थाने में उन्होंने अपनी बेटी की मौत के संबंध में भोजपुरी गायक समर सिंह और उनके भाई संजय सिंह पर सनसनीखेज आरोप लगाए। कहा कि समर सिंह मेरी बेटी आकांक्षा को रोजाना प्रताड़ित करता था। पैसे हड़प लेता था। तीन साल से टॉर्चर कर रहा था। समर और संजय सिंह ने साजिश के तहत हत्या की है। आरोप लगाते हुए आकांक्षा दुबे की मां ने कहा कि समर चाहता था कि आकांक्षा सिर्फ उसके साथ ही फिल्म और गाने में काम करे। काम करने पर वह पैसे भी नहीं देता था। किसी और के साथ काम जाती थी तो उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित और मारता-पीटता करता था। मधु दुबे ने कहा कि आकांक्षा ने समर सिंह की करतूतों के बारे में बताया था। एक बार समर ने मेरी बेटी के साथ मारपीट की तो मैंने उससे पूछा था कि वह क्यों ऐसा कर रहा है। आकांक्षा दुबे की मां मधु दुबे के अनुसार, समर सिंह और उसके भाई संजय सिंह ने आकांक्षा से करोड़ों रुपयों का काम कराकर पैसा नहीं दिया। 21 मार्च को समर सिंह के भाई संजय सिंह ने आकांक्षा दुबे को जान से मारने की धमकी दी थी, जिसके बारे में आकांक्षा दुबे ने खुद उनको फोन कर बताया था। मधु दुबे ने कहा कि बीते 21 मार्च को आकांक्षा बस्ती में शूटिंग कर रही थी। उस दिन मोबाइल पर भोजपुरी गायक समर के भाई संजय सिंह का फोन आया था। धमकी दी थी कि तुमको जान से मरवा देंगे। उनके मुताबिक, आकांक्षा की असिस्टेंट रेखा ने भी बताया कि मैडम सेट पर जोर-जोर से रो रही थीं। मधु दुबे का यह भी कहना है कि जिस अवस्था में आकांक्षा दुबे का शव मिला है उसे देखकर कोई भी कह सकता है कि वह आत्महत्या नहीं बल्कि हत्या है। जो तस्वीरें सामने आई है, उसमें साफ तौर पर देखा जा रहा है कि आकांक्षा दुबे बैठी हुई है। उन्होंने पूछा कि कोई बैठकर कैसे फांसी लगा सकता। आकांक्षा की मां ने कहा कि कोई इंसान पार्टी से इंजॉय कर आता है, तो फांसी नहीं लगाता। उनका आरोप है कि समर सिंह और उसके भाई ने मिलकर उनकी बेटी आकांक्षा दुबे को मार डाला और अब उन्हें इंसाफ चाहिए। मधु ने बताया कि शनिवार शाम सात बजे मोबाइल से आकांक्षा से बात हुई थी। तब वो खुश थी। कोई परेशानी नहीं बताई। 12 बजे रात में फोन किया था तो उसने फोन नहीं उठाया था। किसी पार्टी में जाने की बात भी नहीं बताई थी। रविवार सुबह उसकी मौत की सूचना मिली। मैंने समर सिंह और संजय सिंह पर मुकदमा कराया है। अपर पुलिस आयुक्त संतोष कुमार सिंह ने कहा कि युवती ने आत्महत्या की है, यह स्पष्ट है। आत्महत्या के कारणों की जांच की जा रही है। डॉक्टरों के पैनल से पोस्टमार्टम कराया जाएगा। युवती की मां की तहरीर पर समर सिंह और संजय सिंह के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का मुकदमा दर्ज किया गया है। विवेचना कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

संपादकीय

संवेदना की कीमत

झारखंड में एक बच्चे को जन्म देने के तुरंत बाद कथित रूप से बेच दिए जाने की घटना को प्रथम दृष्टया मां की संवेदनहीनता और ममता के कारोबार के रूप में देखा जा सकता है। लेकिन ऐसी घटनाएं कई बार परतों में गुंथी होती हैं और उसमें समाज, परंपरागत धारणाएं, गरीबी और विवशता से लेकर आपराधिक संजाल तक के अलग-अलग पहलू शामिल होते हैं। झारखंड के चतरा में जिस बच्चे को साढ़े चार लाख रुपए में बेचे जाने की खबर आई, उसमें मां के हाथ में एक लाख रुपए आए। बाकी के साढ़े तीन लाख रुपए बिचौलियों या दलालों के हाथ लगे। चूंकि इसकी सूचना पुलिस तक पहुंच गई और समय रहते सक्रियता भी दिखी, इसलिए बच्चे को बरामद कर लिया गया और कई आरोपी पकड़े गए। बच्चे को बेचे और खरीदे जाने में जितने लोग, जिस तरह शामिल थे, उससे साफ है कि इसे सोच-समझ कर अंजाम दिया गया। निश्चित रूप से इस मामले में मां की ममता कठघरे में है, मगर कई बार अपने ही बच्चे के बदले पैसा लेने की नौबत आने में हालात भी जिम्मेदार होते हैं। वरना अपने बच्चे का सौदा करना किसी मां के लिए इतना आसान नहीं होता है। हालांकि यह कोई पहला मामला नहीं है, जिसमें बच्चे की बिक्री मां के हाथों ही होने की घटना सामने आई हो। झारखंड और ओड़ीशा के गरीब इलाकों से अक्सर ऐसी खबरें आती रहती हैं, जिनमें कुछ हजार रुपए के लिए ही बच्चे को किसी के हवाले कर दिया जाता है। सवाल है कि बच्चे को बेचने के पीछे क्या कारण होते हैं, उनके खरीदार कौन होते हैं और ऐसी सौदेबाजी को आमतौर पर एक संगठित गतिविधि के रूप में क्यों अंजाम दिया जाता है। झारखंड की ताजा घटना में एक दंपति को पहले से तीन बेटियां थीं। सामाजिक स्तर पर मौजूद रूढ़ियों से संचालित धारणा के मुताबिक उस दंपति को एक बेटे की जरूरत थी। यानी तीन बेटियां उसकी नजर में इतना महत्त्व नहीं रखती थीं कि उसके बेटे की भूख की भरपाई हो सके। इसलिए उसने ऐसी सौदेबाजी कराने वाले दलालों के जरिए किसी अन्य महिला से उसका नवजात बेटा खरीद लिया। यानी मन में बेटा नहीं होने के अभाव से उपजे हीनताबोध और कुंठा की भरपाई के लिए कोई व्यक्ति पैसे के दम पर गलत रास्ता अपनाने से भी नहीं हिचकता। इसके अलावा, मानव तस्करी करने वाले गिरोह दूरदराज के इलाकों में और खासतौर पर गरीबी की पीड़ा झेल रहे लोगों के बीच अपने दलालों के जरिए बच्चा खरीदने के अपराध में लगे रहते हैं। झारखंड, ओड़ीशा जैसे राज्यों के गरीब इलाकों में ऐसे तमाम लोग होते हैं, जिन्हें महज जिंदा रहने के लिए तमाम जद्दोजहद से गुजरना पड़ता है। सतह पर दिखने वाली अर्थव्यवस्था की चमक की मामूली रोशनी भी उन तक नहीं पहुंच पाती है। मानव तस्कर ऐसे ही अभाव से गुजरते लोगों को निशाना बनाते हैं, जहां वे मामूली रकम देकर बच्चा हासिल करके उसे पैसे वाले परिवारों या फिर अंगों का कारोबार करने वालों को ऊंची कीमत पर बेच देते हैं या भीख मांगने या देह व्यापार की त्रासदी में झोंक देते हैं। सवाल है कि कोई परिवार अगर अपने अभाव और लाचारी की हालत में मानव तस्करों या अन्य दलालों के जाल में फंस कर बच्चा बेचने की नौबत तक पहुंचता है, तो उसकी इस हालत के लिए कौन जिम्मेदार है? मानव तस्करी में लगे आपराधिक गिरोह अगर आसानी से यह सब कर पाते हैं, तो उन पर काबू पाने की जिम्मेदारी किसकी है? जाहिर है कि किसी मां के हाथों अपने नवजात की बिक्री से जुड़ी बहुस्तरीय परतों पर विचार किए बिना इस समस्या के वास्तविक संदर्भों पर विचार अधूरा रहेगा।

हो रहा उपयोग !

आगे आगे गाड़ी ।
पीछे पीछे लोग ।।
कैमरे का पल पल ।
हो रहा उपयोग ।।
छूट न जाए कुछ भी ।
ऐसा ही है प्लान ।।
कर के रहेंगे कैद ।
अब हर वो सामान ।।
बढ़ रही टीआरपी ।
उधर भी घुमाओ ।।
हर उस जगह की ।
पिक्चर हमें दिखाओ ।।
खबरों के हम बादशाह ।
आंकना ना कम ।।
जोश रहेगा ज़िंदा ।
जब तक हममें दम ।।

–कृष्णेन्द्र राय

भविष्य का वैकल्पिक ईंधन

सरकार ने एथेनाल युक्त तेल को 2030 तक जारी करने का लक्ष्य रखा था, मगर इसे अभी शुरू कर दिया गया है। सात साल पहले लक्ष्य तक पहुंचने का जो श्रेय सरकार को जाता है, उसमें एथेनाल के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने वालों को भी निहित समझा जाए। 2013-14 की तुलना में आज एथेनाल का उत्पादन छह गुना तक बढ़ा है, जिससे लगभग चौवन हजार करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा बची है। दुनिया में कच्चे तेल के लिए संघर्ष अपने आप में किसी महायुद्ध से कम नहीं है। यह तमाम देशों के लिए अक्सर चुनौती बनता रहा है। रोचक यह है कि तेल को लेकर अमेरिका जैसे देश कई खेल भी इसी दुनिया में खेलते रहे हैं। गौरतलब है कि अमेरिका भारत का रणनीतिक मित्र है और वर्षों से दोनों के संबंध कहीं अधिक सकारात्मक हैं, मगर ईरान से उसकी दुश्मनी की कीमत भारत को भी तब चुकानी पड़ी, जब उसने मई 2019 में ईरान से कच्चा तेल लेने पर प्रतिबंध लगा दिया था।

आखिरकार इस ऊर्जा की भरपाई के लिए भारत को सऊदी अरब की ओर रुख करना पड़ा था, जो ईरान की तुलना में महंगा सौदा था। फरवरी, 2022 से बदले हालात के बाद रूस से भारत सस्ता तेल धड़ाधड़ खरीद रहा है, जबकि रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते अमेरिका और यूरोप के कई देशों के अलग खेमे बने हुए हैं और भारत को ऐसा करने से रोक पाने में सक्षम भी नहीं हैं। भारत कच्चे तेल के मामले में आत्मनिर्भर नहीं है। वह अपनी जरूरत का महज सत्रह फीसद तेल उत्पादन कर पाता है, बाकी के लिए आयात पर निर्भर है। ऐसे में ई-20 ईंधन का स्वरूप इस निर्भरता को कम करने में मदद करेगा, मगर जिस गति से कच्चे तेल की आवश्यकता देश को है, उसे देखते हुए इसे अंतिम उपाय नहीं कहा जा सकता।

गौरतलब है कि ई-20 ईंधन का आशय पेट्रोल में एथेनाल के बीस प्रतिशत मिश्रण से है। अभी तक देश में मिलने वाले पेट्रोल में इसकी मिलावट महज दस फीसद होती थी। हालांकि इसे लेकर पेट्रोल के आयात पर असर पड़ेगा, मगर बड़ा असर लाने के लिए इलेक्ट्रानिक वाहन और एथेनाल मिश्रित पेट्रोल को पूरे देश में विस्तार देना होगा। फिलहाल ई-20 ईंधन को ग्यारह राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के चौरासी पेट्रोल पंपों पर उपलब्ध कराया जाएगा। गौरतलब है कि भारत सरकार ने ‘इंडिया एनर्जी वीक 2023’ में बीस प्रतिशत एथेनाल मिश्रित पेट्रोल को बीते फरवरी महीने में शुरू किया था और उम्मीद जताई गई थी कि इस पहल से पेट्रोल पर निर्भरता को कम किया जा सकेगा। इसमें कोई दो राय नहीं कि जैव ईंधन को लेकर जितनी सक्रियता आई है, उसके लाभ भी विभिन्न आयामों में विस्तार लेंगे। ई-20 ईंधन कई लाभों से युक्त है, पर चुनौतियों से भी भरा हुआ है। भारत कृषि अर्थव्यवस्था वाला देश है, यहां व्यापक पैमाने पर कृषि अवशेष उपलब्ध हैं। ऐसे में जैव ईंधन के उत्पादन की संभावना अधिक रहेगी। फलस्वरूप, नई नगदी फसलों के रूप में ग्रामीण और कृषि विकास में यह मदद कर सकता है, बशर्ते नियोजनकर्ता किसानों की सक्रियता और महत्ता को ऊर्जा का केंद्र समझें, न कि महज एक साधन। शहर अकूत अपशिष्ट और कचरे से भरे पड़े हैं। इनका उपयोग कर ईंधन में बदलना संभव होगा, जो भोजन और ऊर्जा दोनों प्रदान कर सकती है।

ई-20 ईंधन से वाहनों को चलाना तो आसान रहेगा ही साथ ही बड़ा लाभ यह होगा कि जहरीली गैसों से शहर मुक्त भी होंगे। कच्चा तेल खरीदने में तुलनात्मक कमी आएगी, इससे विदेशी मुद्रा के खर्च में कमी आएगी। यह हरित ईंधन का एक ऐसा उदाहरण है, जिससे कार्बन डाईआक्साइड और हाइड्रो कार्बन आदि के उत्सर्जन में कमी संभव है। पड़ताल बताती है कि वर्तमान में भारत में एथेनाल की उत्पादन क्षमता लगभग एक हजार सैंतीस करोड़ लीटर है, जिसमें सात सौ करोड़ लीटर गन्ना आधारित और बाकी अनाज आधारित है। 2022-23 में पेट्रोल और एथेनाल वाले ईंधन की आवश्यकता पांच सौ बयालीस करोड़ लीटर थी, जबकि 2023-24 में यह बढ़ कर छह सौ अट्ठानबे करोड़ लीटर है। बता दें कि कच्चा तेल दुनिया के किसी देश से किसी भी कीमत पर शायद खरीदा जाना संभव है, मगर एथेनाल के औसत को बनाए रखना कहीं अधिक आवश्यक रहेगा। हालांकि आंकड़े इशारा कर रहे हैं कि एथेनाल के मामले में भारत परिपक्व है, मगर सरकार को यह नहीं भूलना चाहिए कि यह पूरी तरह किसान आधारित है और उन्हें इस ऊर्जा में मदद के बदले आर्थिक शुचिता बनाए रखना होगा।

महत्त्वपूर्ण यह भी है कि देश में ऐसी कारें कम हैं, जो ई-20 पेट्रोल से चल सकती हैं। हालांकि कई कंपनियां अपनी गाड़ियां ई-20 ईंधन के अनुरूप बना रही हैं। पूरे देश में जैसे-जैसे ई-20 ईंधन का विस्तार होगा, इससे चलने वाली गाड़ियों का निर्माण भी उसी के अनुरूप होगा। स्पष्ट है कि जैव ईंधन और हरित ईंधन पर निर्भरता लगातार बढ़ रही है, जिसमें कृषि अर्थव्यवस्था और किसानों को सुदृढ़ करने के संदर्भ निहित रहेंगे। गौरतलब है कि केंद्रीय मंत्रिमंडल ने जनवरी में राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन को मंजूरी दी, जिसका उद्देश्य भारत को स्वच्छ ऊर्जा का केंद्र बनाना है। तेल की बढ़ती कीमतें और डालर के मुकाबले गिरता रुपया न केवल कच्चे तेल के लिए मुसीबत बनता है, बल्कि देश के जनमानस को भी इसकी कीमत चुकानी पड़ती है। हालांकि सस्ता कच्चा तेल मिलने के बावजूद देश की जनता को सरकार ने इसका लाभ नहीं दिया है। तेल का खेल सरकारें भी खूब खेलती हैं और इससे अपनी तिजोरी आसानी से भर पाने में सफल होती हैं। जीएसटी लागू होने के बावजूद पेट्रोल, डीजल तथा रसोई गैस समेत ह पदार्थ अब भी इसके दायरे से बाहर हैं, जिसके उतार-चढ़ाव से जनता की जेब ढीली होती रहती है। यह विडंबना ही है कि जो तबका नीतियों से सबसे अधिक प्रभावित होता है और जिसके लिए अधिकांश नीतियां बनाई जाती हैं, वही हाशिये पर है। भारत का किसान अन्न उत्पादन करके इस मामले में देश को आत्मनिर्भर बना रहा है। आज वही, चाहे गन्ना किसान हो या अनाज उत्पादन करने वाला, ई-20 ईंधन को भी बड़ा मुकाम दे सकता है। मगर क्या उसकी आय दोगुनी करना सरकार के लिए संभव है।

साल 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य सरकार ने रखा था, मगर इस पर कुछ खास पता नहीं चला। सरकार इस कसौटी को और कस कर देखे, क्या पता किसानों की किस्मत ई-20 ईंधन के ईर्द-गिर्द पलटी मारे और उनकी आय दोगुनी हो जाए? मगर सरकार पहले इस बात की भी पड़ताल कर ले कि उनकी पहले आय क्या थी? हालांकि दिसंबर 2018 से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के माध्यम से प्रति चार महीने पर जो दो हजार रुपए सीमांत किसानों के खाते में जाते हैं, अब वे भी कई नई समस्याओं के चलते मामूली हो गए हैं। गौरतलब है कि सरकार ने एथेनाल युक्त तेल को 2030 तक जारी करने का लक्ष्य रखा था, मगर इसे अभी शुरू कर दिया गया है। सात साल पहले लक्ष्य तक पहुंचने का जो श्रेय सरकार को जाता है, उसमें एथेनाल के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने वालों को भी निहित समझा जाए। 2013-14 की तुलना में आज एथेनाल का उत्पादन छह गुना तक बढ़ा है, जिससे लगभग चौवन हजार करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा बची है।

क्या म्यूट हो रहा है लोकतंत्र?

एक बार एक आदमी डॉक्टर के पास गया और बोला डॉक्टर साब शरीर में जहां उंगली लगाता हूं वहां दर्द होता है। डॉक्टर ने पूरे शरीर को चेक किया तो पता चला समस्या शरीर में नहीं,उंगली में है। ठीक वैसे ही 2014 के बाद वाली भाजपा ये बात बहुत पहले समझ गई थी कि 'सच और सत्ता' के बीच में जो मैकनिज्म आ रहा है वो है 'लोकतंत्र'।

दरअसल लोकतंत्र ही वो उंगली है जो समूचे विपक्ष,जनता,मीडिया और अन्य संगठन जो विपक्ष की भूमिका में हैं उनको ऑक्सीजन दे रहा है। तो क्या जिस जनता के लिए,जनता के द्वारा और जनता के शासन वाली प्रक्रिया से भाजपा सत्ता में आई थी अब उसी तंत्र को म्यूट कर देना चाहती है? ये सवाल लगातार विपक्ष के द्वारा उठाया जा रहा है कि सरकार लोकतंत्र का अंत्येष्टि कर देना चाहती है। संसद में जनता के सवाल पर माइक म्यूट कर देती है तो सड़क पर सवाल पूछने वालो के यहाँ सरकारी एजेंसियों को भेज कर ताकत का गलत दुरुपयोग कर रही है।

ताजा घटना का जिक्र करें तो जिस तरीके से राहुल गांधी की संसद सदस्यता रद्द की गई, ये लोकतंत्र को म्यूटतंत्र में बदलने का खुला उद्घोष सा लगता है। आखिर क्या राहुल को इसलिए संसद से म्यूट करा दिया गया क्योंकि वो लगातार सरकार से अडानी,चीन,अर्थव्यवस्था,क्रोनी कैपटलिज्म,महंगाई और बेरोजगारी पर सवाल पूछ रहे थे। ये सवाल इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाते है कि राहुल के संसद में दिए पिछले भाषण को 18 जगह से स्पंज किया गया।

भारतीय कानून और कोर्ट के फैसले का सम्मान है लेकिन जो कालक्रम है जिसका आरोप कांग्रेस भी लगा रही है। उसको लेकर जरूर संदेह किया जा सकता है की मानहानि के केस में पहली बार किसी नेता को जेल की सजा मुकर्रर किया गया और वो भी अधिकतम। 24 घण्टे के अंदर संसद सदस्यता को रद्द करना, जबकि सरकार को बड़ा दिल दिखाते हुए विपक्ष के नेता के तौर पर राहुल को ऊपरी अदालत में जाने का मौका दिया जा सकता था। उसके बाद जो फैसला आता उस पर अयोग्यता का निर्णय लिया जाता तो न केवल भारतीय लोकतंत्र को बल मिलता बल्कि भाजपा और मोदी जी का कद भी बढ़ता। आश्चर्य इस बात पर भी है कि जिस कर्नाटक के कोल्हार में दिए भाषण पर राहुल को सजा हुई है। उस पर चुनाव आयोग ने संज्ञान क्यों नहीं लिया? और सजा गुजरात के सूरत में मिला। गुजरात मॉडल का डंका 2014 से ही इस देश मे गूंज रहा है।

मदर ऑफ डेमोक्रेसी को म्यूटतंत्र में बदलने को बल इस बात से भी मिल रहा है कि 2014 के पहले भाजपा, सरकार को घेरने के लिए जिन नारो का सहारा लेती थी अब उन्ही नारो और पोस्टर पर दिल्ली में ऋक्फ व गिरफ्तारियां हो जाती है। कन्नड़ एक्टर के हिंदुत्व पर दिए बयान पर जेल हो जाता है, तो पवन खेड़ा को एयरपोर्ट से गिरफ्तार कर लिया जाता है। देश के प्रमुख जांच एजेंसियों के छापे विपक्ष के नेताओं पर ही क्यों पड़ रहे हैं? और ये वही नेता क्यों होते है जो लगातार सत्तापक्ष के खिलाफ मोर्चा खोले हुए है? क्या भाजपा के सभी नेता पाक साफ है? और अगर नहीं तो उनपर छापा क्यों नहीं? इसलिए कि वो म्यूट है? सवाल ये भी है कि विपक्ष में रहते जिन नेताओं पर आरोप लगता हैं वो भाजपा में आते ही आरोपमुक्त कैसे हो जाते है ?

ADR रिपोर्ट की ही माने तो देश मे 233 सांसदों के खिलाफ आपराधिक मुकदमे लंबित है जिनमे 159 सांसदों के खिलाफ हत्या, बलात्कार और अपरहण के गंभीर मामले लंबित है। जिनमें भाजपा के 116 सांसद दागी है। इन सांसदों पर कारवाई कब होगी? इन सारे मुद्दों पर विपक्ष लगातार हमलावर है।

तो क्या इन कारवाइयों से विपक्ष के अंदर खौफ पैदा किया जा रहा है या सरकार अपने सत्ता के लिए इन नेताओं से खौफजदा है इसलिए करवाई कर रही है? परिणाम चाहे जो भी हो लेकिन एक बात तो स्पष्ट है सामान्य जन जो बहुत सारे समस्याओं से पहले से जूझ रहा है वो अब और डर जाएगा और हो सकता है कि सच बोलने से पहले काँपने भी लगे। अगर सरकार सच मे विपक्ष के म्यूटतंत्र के आरोप को खारिज करना चाहती है तो उसे जनता,छोटे मीडिया और सवाल पूछने वाले लोगो को भरोसा और ताकत देना होगा। विपक्ष जो सवाल उठा रहा है उसपर प्रधानमंत्री सहित सरकार के शीर्ष लोगो को जवाब देना होगा। साबित करना होगा कि वो एक लोकतंत्र के प्रहरी के तौर पर काम कर रहे है और सभी प्रकार के आलोचनाओं को स्वीकार करते है क्योंकि लोकतंत्र जन और सत्ता के भरोसे से चलता है। अटल जी कहा करते थे 'सत्ता का खेल तो चलेगा,सरकारें आएंगी-जाएंगी,पार्टियां बनेगी बिगड़ेगी,मगर यह देश रहना चाहिए इस देश का लोकतंत्र अमर रहना चाहिए।

दयानन्द मिश्र 'शुभम'
छात्र जनसंचार एवं पत्रकारिता
(यह लेखक के अपने विचार हैं)

वृक्ष का जीवन

हमारे गांव में एक समय में दर्जन भर अमराइयां थीं जो देखते-देखते कट गईं। वहां आज बस्तियां बस गई हैं। यह आज की आधुनिक जीवन पद्धति का नमूना है। गांव-कस्बे में रहने वाले लोग आमतौर पर वृक्षों से प्रेम करते थे, उनके महत्त्व को समझते थे, अमरैया सजाते थे। आम, जामुन और अन्य फलदार वृक्ष किसी मायावी चमत्कार से नहीं उगते थे। हमारे पुरखों ने इन्हें बड़े जतन से लगाया होगा। उन्हें मालूम था कि आने वाली पीढ़ी के लिए ये कितने उपयोगी साबित होने वाले हैं। क्या ऐसा नहीं लगता कि उन्होंने अपनी दृष्टि से आने वाली पीढ़ी को एक ऐसा प्राकृतिक संबल दिया था, विरासत दी थी कि जिसकी छाया में, हम सुख-समृद्धि से भरपूर और खुशहाल जीवन जीएं? मगर हमारी लालच और अकर्मण्यता की शायद कोई इंतिहा नहीं है।

एक अनपढ़ व्यक्ति भी इस मामले में अपनी संवेदना से बता सकता है कि वृक्ष हमारा जीवन है। कम संसाधन वाले लोग भी गांव या खेत में अपनी जरूरत से या कभी यों भी कहीं पेड़ लगा देते हैं, उसका पोषण करते हैं और उसे फलता-फूलता देख कर खुश होते हैं। उस पेड़ से उन्हें केवल संतोष मिलता है, लेकिन दुनिया को जीवन मिलता है। आज उन संवेदनाओं के संरक्षण का दारोमदार जिन हाथों में है, वे खामोश हैं। सब कुछ जान कर भी लोग अनजान बनने का नाटक करते हैं। हमारे बीच इस मसले पर कोई गंभीर विमर्श और काम नहीं दिखाई देता। शहरों को जोड़ने के लिए उच्चमार्ग बन रहे हैं। बताया जाता है कि जितने हरे वृक्ष कटेंगे, उससे चार गुना ज्यादा सरकार और ठेकेदार के कारिंदे वृक्ष लगाएंगे। मगर हकीकत में इसी आश्वासन का इंतजार रहता है। जहां उच्च मार्ग या एक्सप्रेस-वे बन रहे हैं वहां प्रतिदिन पेड़ कट रहे हैं। सोचने की बात है कि स्थानीय लोगों को इस काम में लगे देखना थोड़ा मुश्किल ही है। बल्कि अन्य प्रदेशों के लोग इस काम में लगे दिखते हैं। सवाल है क्या इसलिए कि स्थानीय लोगों या मजदूरों की ओर से वृक्ष काटने पर कोई आपत्ति उठ सकती है। कटने वाले वृक्षों में फलदार और छायादार भी होते हैं, जो कई दशकों में तैयार हुए होते हैं। एक समय सड़क बनने के बाद उसके दोनों ओर पेड़ लगाए जाते थे, जबकि अब बेहतरीन सड़कें बन रही हैं और उसके लिए पेड़ काटे जा रहे हैं। शायद ऐसा हर एक जगह हो रहा है। कस्बे, गांव का नाम बदल दिया जाए, देश-दुनिया में यही हो रहा है। यह दिखावे की जिंदगी और दुनिया बन चुकी है, जहां संवेदनाएं मर रही हैं। कुदरत से मिली जिंदगी और संपत्ति को खत्म करने के खिलाफ कोई मजबूत आवाज नहीं दिखती। कहते हैं कि मनुष्य की तरह ज्ञान और संवेदना सृष्टि में किसी भी अन्य प्राणी में नहीं है।

लोकसभा चुनाव में भगवा खेमे से एक और ब्यूरोक्रेट ताल ठोंकने की तैयारी में

उत्तर प्रदेश की नौकरशाही में आजकल एक आम चर्चा सुनने को मिल रही है। चर्चा इस बात कि है कि जल्द ही यूपी कैडर का एक नामित और चर्चित नौकरशाह जोकि कुछ ही माह में सेवानिवृत्त होने वाला है, वह जल्द ही राजनीति के मैदान में अपनी दूसरी पारी शुरू कर सकता है। यह वही अधिकारी है जिसने सपा प्रमुख मुलायम सिंह के एक इशारे पर अखिलेश सरकार के समय लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस वे मात्र ढाई वर्षों में तैयार करा दिया था, जिस पर जगुआर जैसे फाइटर प्लेन तक की लैंडिंग कराई गई थी। यही नौकरशाह कोरोना काल में खादी विभाग के प्रमुख सचिव रहते आनन-फानन में पचास लाख खादी के मास्क तैयार कराने की महत्वाकांक्षी योजना को हकीकत में बदलकर योगी का विश्वास पात्र बन गया था, जबकि इस नौकरशाह को सपा का करीबी समझ कर मुख्यमंत्री योगी ने पहले हाशिये पर डाल रखा था और खादी विभाग जैसा कम महत्वपूर्ण महकमा सौंपा था। कोरोना के खिलाफ जंग में खादी का सुरक्षा कवच (मास्क) तैयार करने वाले इस ब्योरोक्रेट के चलते ही यूपी इसी काल खण्ड में रैपिड टेस्टिंग किट से कोविड-19 की जांच करने वाला पहला प्रदेश बन पाया था।

योगी ही नहीं सपा-बसपा और पूर्व की भाजपा सरकार के दौरान भी इस नौकरशाह का खूब सिक्का चला। कल्याण सिंह सरकार में इस नौकरशाह को फैजाबाद जैसे महत्वपूर्ण जिले की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इस दौरान यह अधिकारी अयोध्या में राम जन्मभूमि से जुड़े साधू-संतों के काफी करीब आ गया। यह अधिकारी लखनऊ जैसे महत्वपूर्ण जिले में डीएम रहा। 2007 में बसपा सरकार बनने पर केन्द्र से पांच आईएएस यूपी लौटे जिनमें से एक नाम इस अधिकारी का भी शामिल था। यह अधिकारी अपने नाम से नहीं, काम के चलते सुर्खियां बटोरता है। सरकार किसी भी पार्टी की हो, यह अपना काम पूरी ईमानदारी से करता मिल जाता है। इस अधिकारी के बारे में यहां तक कहा जाता है, "जहां रहेगा वहीं रोशनी लुटाएगा, किसी चराग का अपना मकां नहीं होता। यह अधिकारी और कोई नहीं पंजाब में जन्मे और 1988 बैच के यूपी कैडर के अधिकारी नवनीत सहगल हैं जो कुछ माह बाद 31 जुलाई 2023 को रिटायर होने वाले हैं। सहगल को सेवा विस्तार मिलने की कोई संभावना नजर नहीं आ रही है, ऐसा इसलिए है क्योंकि सहगल भी अब नौकरशाही' छोड़कर राजशाही का स्वाद चखना चाहते हैं। आईएएस नवनीत सहगल के बारे में कहा जा रहा है कि ब्यूरोक्रेसी से सेवानिवृत होने के बाद वह भी अन्य कुछ नौकरशाहों की तरह भगवा रंग में रंग सकते हैं। इस बात या चर्चा में

इसलिए दम भी लगता है क्योंकि पिछले कुछ वर्षों से यह देखने में आ रहा है कि बीजेपी आलाकमान पूर्व नौकरशाहों को केन्द्र और राज्यों की राजनीति में लाकर अपनी केन्द्र और राज्यों की सरकारें चलाने के लिए इनके अनुभव का खूब फायदा उठा रहा है।

इस कड़ी में कई नौकरशाहों के नाम गिनाए जा सकते हैं। वैसे नौकरशाहों का राजनीति से प्रेम नया नहीं है। इसकी शुरूआत करीब 70 वर्ष पूर्व हो गई थी, जब 1952 में फैजाबाद के जिलाधिकारी केकेके नायर (आईसीएस जो अब आईएएस कहलाते हैं) रिटायर्ड होने के बाद जनसंघ में शामिल हो गए थे। हाल फिलहाल में 2022 के विधानसभा चुनाव की घोषणा होते ही कानपुर के कमिश्नर असीम अरुण ने वीआरएस के लिए आवदेन किया तो प्रवर्तन निदेशालय के जॉइंट डायरेक्टर राजेश्वर सिंह का भी वीआरएस आवदेन स्वीकार कर लिया गया। अब दोनों बीजेपी से विधायक और मंत्री भी हैं। पुरानी बात की जाए तो 1967 में जनसंघ के टिकट पर बहराइच से लोकसभा सांसद बने श्रीश चंद्र दीक्षित जो कि आईपीएस रहे, वह पहले बीजेपी में आए और बाद में विश्व हिन्दू परिषद यानी विहिप में चले गए। विहिप के ही नेता अशोक सिंघल के भाई बीपी सिंघल जो कि आईपीएस थे उनको बीजेपी ने राज्यसभा भेजा। इसके अलावा समाजवादी पार्टी के बेहद करीबी अधिकारी नीरा यादव के आईपीएस पति महेंद्र सिंह यादव भी बीजेपी में शामिल हुए।

इस लिस्ट में कई सारे पूर्व नौकरशाहों के नाम जुड़े रहे हैं, जिसमें अरविंद शर्मा यानी ए0के0शर्मा भी कम खास नहीं हैं, जो कि गुजरात कैडर के आईएएस रहे हैं। वह योगी सरकार के दूसरे कार्यकाल में नगर विकास जैसे महत्पूर्ण विभाग की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चहेते नौकरशाह अरविंद कुमार शर्मा उत्तर प्रदेश में करीब चार वर्ष पूर्व विधान परिषद चुनाव के समय अचानक प्रकट हुए थे। चट से वीआरएस लिया, पट से भाजपा में शामिल हुए और दूसरे ही दिन विधान परिषद के टिकट से निर्विरोध उत्तर प्रदेश विधान परिषद के माननीय सदस्य बन गए। अरविंद कुमार शर्मा मऊ के काजाखुर्द गांव के रहने वाले हैं। गुजरात कैडर, मुख्यमंत्री कार्यालय तथा केंद्र में प्रधानमंत्री कार्यालय में रहकर शर्मा मऊ के लिए कुछ नहीं कर सके। अब मंत्री बनने के बाद नई पारी में उनकी परीक्षा होनी है। क्योंकि शीर्ष नेतृत्व उन्हें यूं ही प्रदेश में स्वैच्छिक सेवानिवृति दिलाकर नहीं लाया है। भविष्य की राजनीति में वह हिंदुत्व के एजेंडा के साथ विकास का एजेंडा भी सेट करना चाह रहा है। ज्ञातव्य हो कि अरविंद्र कुमार शर्मा के भाजपा में शामिल होने पर कांग्रेस के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने सवाल उठाया था कि शर्मा को बताना चाहिए कि वे अब तक सरकारी सेवा कर रहे थे या एक पार्टी की सेवा में लगे थे। नौकरशाहों का उत्तर प्रदेश के लिए राजनीतिक प्रेम वर्षों पहले दिखाई पड़ने लगा था। इसकी शुरूआत सात दशक पूर्व केकेके शर्मा से हुई थी। आजादी के बाद प्रदेश में संभवतः पहला वाकया रहा होगा जब अयोध्या में दिसंबर 1949 में बाबरी मस्जिद में मूर्ति रखी जाने के बाद फैजाबाद के जिलाधिकारी केकेके नायर आईसीएस निलंबन और बहाली के बाद सेवामुक्ति लेकर 1952 में जनसंघ में शामिल हो गए थे। उनकी पत्नी हिंदू महासभा के टिकट पर पड़ोसी जिले से सांसद चुनकर लोकसभा पहुंच गई थीं।

मुख्य विकास अधिकरी ने विध्य महोत्सव के पाचवें दिन मां विन्ध्यवासिनी देवी के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का किया शुभारम्भ

प्रखर मिजार्पुर। विंध्याचल में चैत्र नवरात्र मेला में जिलाधिकारी दिव्या मित्तल के विशेष प्रयास से आयोजित विंध्य महोत्सव एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में रविवार को मौसम की बेरुखी के बाद भी सांस्कृतिक संध्या का लुफ्त उठाने के लिए तीर्थ यात्रियों की भीड़ उमड़ी हुई थी। कार्यक्रम का शुभारंभ माता के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर मुख्य विकास अधिकारी श्रीलक्ष्मी वीएस ने किया। विशिष्ट अतिथि मा0 विधायक नगर रत्नाकर मिश्र, मा0 विधायक मड़िहान रमाशंकर सिंह पटेल उपस्थित रहें। तत्पश्चात वाराणसी से पधारी विख्यात भारत नाट्यम कला की डॉ प्रियंमबदा टी पौडयाल ने नाट्य कला के माध्यम से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वाराणसी से ही आए गायन के क्षेत्र में अपना एक मुकाम स्थापित किए डॉ सौरभ श्रीवास्तव ने सर्वप्रथम गणेश महिमा से अपना कार्यक्रम प्रारंभ किया। उन्होंने जय जय हो

श्री गणेश देवा..... प्रस्तुत कर गणेश महिमा का वर्णन किया। तत्पश्चात उन्होंने बम.बम बोल रहा है काशी..... सुना कर लोगों को झूमने पर विवश कर दिया। विंध्य महोत्सव कार्यक्रम में भारत गौरव राष्ट्र से सम्मानित प्रियंमबदा टी पौडयवाल की शिष्या रागिनी साह ने अपने गुरु के पद चिन्हों पर चलते हुए भारतनाट्यम कला नृत्य प्रस्तुत कर लोगों को भावविभोर कर दिया। इसके पूर्व वाराणसी से ही आई डॉ सुचरिता गुप्ता ने देवी गीत, भजन गीतों के माध्यम से लोगों को भक्ति भाव के रस में झूमाया। इसी क्रम में डां शनिस गयावली ने बांसुरी वादन के जरिए बांसुरी के धुन पर लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। कार्यक्रम के पश्चात सभी कलाकारों का जिलाधिकारी दिव्या मित्तल द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य विकास अधिकारी श्रीलक्ष्मी वीएस, अपर जिलाधिकारी वि/रा0 शिव प्रकाश शुक्ला, नमामि गंगे अमरेन्द्र कुमार वर्मा, भू0/रा0 सत्य प्रकाश सिंह, नगर मजिस्ट्रेट विनय कुमार सिंह, विशेष भूमि अध्याप्ति अधिकारी नीरज प्रसाद, जिला होमगार्ड कमांडेंट बी0के0 सिंह, जिला सूचना अधिकारी ओम प्रकाश उपाध्याय, पर्यटन अधिकारी नवीन कुमार सहित सभी विभागों के अधिकारी व भारी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहें।

अस्सी घाट पर लगाया गया चेंजिंग रूम व अर्पण कलश

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। पत्रकार बंधुओं द्वारा बताया गया था कि अस्सी घाट पर महिलाओं को स्नान के बाद कपड़े चेंज करने में काफी दिक्कत आ रही है यहां चेंजिंग रूम होना चाहिए पत्रकार बंधुओं को बात को ध्यान में रखते हुए विधायक श्री सौरभ श्रीवास्तव के नेतृत्व में आज दिनांक 27 मार्च 2023 को मां गंगा के तट अस्सी घाट पर जहां दैनिक आरती होती है पंडित पुजारी लोग चौकी छतरी लगा कर पूजा कराते है जहां गंगा जी मे लोग निर्माल्य कचरा डालते है वहां पर गंगा हरीतिमा अभीयान के अग्रदूत एवं सृजन सामाजिक विकास न्यास के अध्यक्ष अनिल कुमार सिंह के आगुवाई में बिशाल प्रोट्कशन फोर्स की मदद से अनिल कुमार बुछ कमांडेंट 95 बटालियन सीआरपीएफ के देखरेख में एवं सृजन संस्था के सदस्यों तथा भाजपा के पदाधिकारियो द्वारा दो६ चेंजिग रुम और पांच अर्पण कलश रखे गये जिसके मुख्य अतिथि बिधायक कैन्ट सौरभ श्रीवास्तव व ब्रह्मा वेद विद्यालय के छात्रों द्वारा वैदिक मंत्रो चारण के साथ अर्पण कलश रख कर अपने करकमलो द्वारा फूल माला कचरा को डाल महिला चेजिग रुम को रखवाया जिसमे विशिष्ट अतिथि 95 बटालियन के महेन्द्र मिश्रा उप कमांडेंट ने सभी दर्शनार्थियो को जागरुक करते हुए मां गंगा को स्वच्छ बनाने की अपील किया गंगा हरीतिमा अभियान के ब्रांड अम्बेसडर अनिल कुमार सिंह ने सभी को स्वच्छता, पर्यावरण की शपथ दिलाकर हर घाट पर अर्पण कलश एवं चेजिगं रुम रखने की

बात कही, तथा मुख्य अतिथि के द्वारा विशाल प्रोटक्शन फोर्स के जी एम जय प्रकाश सिहं, डिप्टी कमान्डेट महेन्द्र मिश्रा एवं अनिल कुमार सिहं को सम्मानित किया जिसमे मुख्य रूप से सीआरपीएफ के प्रवीण सिंह पूरी टीम के साथ जगन्नाथ ओझा, सुधीर सिहं दिवेन्दु सिहं एवं भाजपा के सभी सम्मानित कार्यकर्ता राजीव सिंह गोबिन्द मिश्रा राजेश चल्लू पार्षद आदि ने अपनी अपनी भागीदारी निभाई` जय मां गंगे, जय हिन्द जय भारत जय के उद्घोष से असि घाट गूंज उठा।

संक्षिप्त खबरें

केदार नाथ संस्कृत महाविद्यालय में सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना का आयोजन

प्रखर दानगंज वाराणसी। केदार नाथ संस्कृत महाविद्यालय गोपपुर चोलापुर वाराणसी में शनिवार को सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना, विशेष शिविर कार्यक्रम के छठवें दिन शनिवार को ग्रामसभा- नवापुरा स्थित शिविर स्थल आर०एस०बालिकाइ0कालेज में छात्रों द्वारा विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये। शिविर कार्यक्रम के दौरान नवापुरा मलित बस्ती में स्वंयसेवक तथा स्वंयसेविकाओं द्वारा वृक्षारोपण एड्स जागरुकता अभियान एवं स्वच्छ भारत अभियान मिशन के अर्न्तगत मतदाता जागरुकता रैली तथा बेटी पढ़ाओं बेटी बचाओं कार्यक्रम का आयोजन किया गया एवं मलिन बस्तियों में लोगों से जनसम्पर्क कर उनको स्वच्छता के बारें में समझाया गया। शिविर की अध्यक्षता कर रही प्राचार्या डॉ० सरिता पाण्डेय एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ० आलोक कुमार चौबे एवं श्री अच्युतानन्द पाण्डेय तथा श्री मधुसूदन चौबे ने स्वंयसेवक तथा स्वंयसेविकाओं को राष्ट्रीय सेवा योजना के महत्व एवं उसके सिद्धान्तो के बारे में समझाया। इस दौरान छात्र / छात्राओं द्वारा विविध विषयों पर संगोष्ठी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गये जिसमें संस्था के सभी छात्रों एवं सभी अध्यापकों की उपस्थिति रही।

दिलीप सिंह पटेल को काशी प्रांत का क्षेत्रीय अध्यक्ष बनाए जाने पर भाजपा किसान मोर्चा के कार्यकताओं ने किया प्रसन्नता व्यक्त

प्रखर अहरौरा मिजार्पुर। इमिलिया चट्टी भारतीय जनता पार्टी काशी क्षेत्र के वर्तमान उपाध्यक्ष को क्षेत्रीय अध्यक्ष बनाए जाने पर भाजपा कार्यकर्ताओ ने प्रसन्नता ब्यक्त की और शीर्ष नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त किया। भाजपा किसान मार्च के पूर्व प्रदेश कार्यकरणी सदस्य हरिचरण सिंह ने दिलीप पटेल जी को क्षेत्रीय अध्यक्ष बनने पर बधाई देते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में पार्टी एक नए आयाम को छुयेगी और 2024 के लोकसभा के चुनाव मे काशी क्षेत्र की सभी सीटें जीतकर पार्टी को मजबूत बनायेगी। इस मौके पर हरिचरण सिंह ,पूर्व मंडल अध्यक्ष जितेंद्र सिंह,जिला सहकारी बैंक के डारेक्टर अरुणेश सिंह , फुलगेन सिंह,पप्पू सिंह,आदि ने बधाई दी।

सुनील यादव ने जनहित में लगाया स्वास्थ परिसर शिविर

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। लक्सर क्षेत्र के नगसर नेवाजू राय गांव में सुनील यादव के सौजन्य से एक दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन जनहित में किया गया। इस शिविर में निजी अस्पताल अशर्फी हॉस्पिटल द्वारा लगभग सैकड़ो ग्रामीणों के स्वास्थ्य का जांच कर दवा का निशुल्क वितरण किया गया।इस जांच शिविर में मुख्य रूप से जनरल फिजिशियन डॉ0 सत्यम मणि के द्वारा इलाज किया गया। इसमे सहयोगी नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ0 सूरज प्रताप सिंह , स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ0 पूजा सिंह, डॉ0 रोहित मेडिसिन व आर्थो के विशेषज्ञ तथा डॉ0 ए के मिश्रा ने आवश्यकतानुसार अपने अपने रोगों के मरीजो की जांच कर दवा दिए। इस मौके पर पूर्व ब्लाक प्रमुख अजय यादव ने कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी चिकित्सकों समेत उपस्थित लोगो का आभार व्यक्त किया। इसमे ग्रामीणों का सहयोग सराहनीय रहा।

पुलिस को बड़ी चुनौती, काली मंदिर का ताला तोड़कर भीषण चोरी

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। नगसर थाना क्षेत्र के गोंहदा गाँव स्थित काली मन्दिर से बीते रविवार की रात्रि को चोरों ने पुलिस के सुरक्षा व्यवस्था को चुनौती देते हुए मन्दिर का ताला तोड़कर दस किलो के पीतल का घंटा व दानपेटी में चढावे का करीब दस हजार नगदी के साथ ही सुरक्षा के लिए लगाया गया सीसीटीवी कैमरा के डीबीआर मशीन चुरा ले गये। इस घटना की जानकारी सुबह लोगों तब हुई जब ग्रामीण मन्दिर में पूजन अर्चन के लिए पहुंचे तो देखा कि दानपेटी व लगा घण्टा सहित सीसीटीवी कैमरा व उसका डीबीआर गायब है। यह देख लोग हक्के बक्के हो गये।इस भीषण चोरी की जानकारी क्षेत्र में आग की तरह फैल गई।चोरी की सूचना पर लोगों की भारी भीड इकठ्ठा हो गई, इसके तुरंत बाद ग्रामीणों ने चोरी की सूचना नगसर थाना पुलिस को दी, जिसके बाद थानाध्यक्ष मय लावलश्कर के साथ घटना स्थल पर पहुंचे। खेत में अगल बगल खोजबीन के साथ ही लोगों से पूछताछ किया मगर कोई भी सुराग नहीं मिल सका। आखिरकार पुलिस अपने स्तर से इस घटना की छानबीन में जुटने के साथ ही कुछ संदिग्ध लोगों से पूछताछ करने में जुटी है।ग्रामीणों ने बातचीत के दौरान बताया कि मंदिर के करीब लाखो का सामान चोरी गया है। जिसमें दिवाल के अंदर बनाए गये दानपेटी को तोडकर उसमें चढावे का करीब दस हजार नगद, दस किलो का पीतल का घंटा व सीसीटीवी कैमरा व उसका डीबीआर शामिल है।लोगों ने बताया कि क्षेत्र में लागातार चोरी की बढ रही घटनाओं के बाद भी पुलिस लापरवाह बनी हुई है। नक्सल थानाध्यक्ष ने बताया जल्द ही मामले का खुलासा कर दिया जाएगा।

गौकसी तथा गैंगस्टर एक्ट का वांछित चढ़ा पुलिस के हत्थे

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक गाजीपुर द्वारा अपराध एवं अपराधियों व वांछित अभियुक्तो के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के कुशल निर्देशन व क्षेत्राधिकारी मोहम्मदाबाद के कुशल मार्गदर्शन में दिनांक 25 मार्च को पंजीकृत गैंगेस्टर एक्ट तथा गो हत्या अधिनियम थाना भांवरकोल से संबंधित वांछित तथा गौवंश तस्कर अभियुक्त चन्दन गुप्ता पुत्र साहब लाल गुप्ता निवासी महुवी थाना मुहम्मदाबाद गाजीपुर को आज सोमवार को थानाध्यक्ष सत्येन्द्र कुमार राय अपनी टीम के साथ क्षेत्र में चक्रमण के दौरान मुखबिर की सूचना पर सोनाडी अन्डर पास थाना भांवरकोल से अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त को अग्रिम कानूनी कार्यवाही हेतु माननीय न्यायालय भेजा गया । गिरफ्तार करने वाली पुलीस टीम मे थानाध्यक्ष सत्येन्द्र कुमार राय थाना

भांवरकोल के साथ, कांस्टेबल देवेन्द्र कुमार यादव थाना भांवरकोल, टेबल अम्बुज मिश्र थाना भांवरकोल, कांस्टेबल शुभम सिंह थाना भांवरकोल तथा महिला कांस्टेबल प्रियंका राव एवम शालू सिंह थाना भांवरकोल गाजीपुर शामिल रहे।

रमजान के महीने में बाजारों से रौनक गायब महंगाई ने आम आदमी के खर्चे पर लगाई लगाम

असलम खान

प्रखर मिजार्पुर। रमजान का पाक महीना चल रहा है जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बाजारों से खरीदार नदारद है बढ़ती महंगाई में आम आदमी ने अपने खर्चे सीमित कर लिए हैं अपने कमाई के हिसाब से अपनी जरूरतों को पूरा करने में ही अपनी भलाई समझते हैं। फिलहाल रमजान के पाक महीने में सभी मस्जिदों में तराबी की नमाज का शिलशिला बा दस्तूर जारी है । आम दिनों के मुकाबले मस्जिदों में नमाजियों की संख्या में काफी इजाफा हुआ है वही मुस्लिम इलाकों में रमजान में बिकने वाले सामान जैसे खजूर सेवई, फल अंजीर मेवे एवं पेय पदार्थ की दुकानें सज गई है इफ्तार के समय इन दुकानों पर रोजेदार एवं खरीदारों की भीड़ काफी संख्या में दिखती है। ग्रामीण क्षेत्रों को छोड़ शहरी क्षेत्र में ईद की खरीदारी अभी थोड़ी बहुत रफ्तार पकड़ी है फिलहाल ग्रामीण क्षेत्रों में अभी ईद की खरीदारी ने कोई रफ्तार नहीं पकड़ा है, पिछले एक दशक पूर्व सिलाई की दुकानों पर कपड़े सिलवाने को ले कर मारामारी रहती थी पर रेडीमेड के प्रचलन ने इन सिलाई के कारीगरो के सामने

मंदी जैसे हालात पैदा कर दिए हैं कपड़े की दुकानों पर पहले के समय में लगने वाले भीड़ गायब हो रहे हैं अधिकांश लोगों की पसंद रेडीमेड हो जाने से कपड़ा खरीद कर सिलवाने के झंझट से लोग दूर हो रहे हैं। वही बढ़ती हुई महंगाई ने भी आम आदमी की जेब पर लगाम लगाने का कार्य किया है अपनी कमाई के हिसाब से ही लोग खर्च करने की सोच रहे हैं जिससे बाजारों में त्यौहारों पर होने वाले भीड नदारद हैं। फिलहाल रमजान व चैत्र नवरात्र एक साथ पड़ जाने से जहां मस्जिदों में आम दिनों की अपेक्षा नमाजी बड़ी संख्या में दिख रहे हैं तो वहीं शिवालयों व मंदिरों में भी आस्थावानो की भीड़ काफी संख्या में देखी जा रही है मंदिर एवं मस्जिदों में मुल्क की तरक्की और भाई चारगी और अमन के लिए और लोगो के रोजी रोजगार में बरक्कत के लिए दोनों धर्मों के लोग पूजा पाठ एवं दुआ कर रहे है।

घरों में दौड़ा 11000 हाई वोल्टेज विद्युत करंट, एक की मौत दर्जन भर घायल

प्रखर मिजार्पुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के बिसौरा गांव में सुबह 10:00 बजे के करीब 11000 हाई वोल्टेज विद्युत करंट की चपेट में आने से एक अधेड़ की मौत हो गई वहीं दर्जनभर लोग घायल हो गए प्राप्त जानकारी के अनुसार बताया जाता है कि बीते रविवार की शाम आई तेज आंधी की वजह से 11000 हाई वोल्टेज का तार टूटकर गांव के सप्लाई लाइन वाले तार पर गिर गया था ।जिसकी जानकारी गांव वालों को नहीं हुई थी। अगले दिन सुबह सोमवार को करीब 10:00 बजे दिन में लाइन आने पर सभी लोग अपना मोबाइल चार्ज पंखा चलाने के लिए जैसे ही लाइन बोर्ड के पास गए और बोड का स्विच ऑन किया कि 11000 हाई वोल्टेज की चपेट में आने से मुकेश प्रजापति पुत्र कृपा प्रजापति उम्र 45 वर्ष की मौके पर मौत हो गई। तथा गांव के ही दर्जनभर लोग घायल हो गए जिसमें सुल्ताना बेगम पत्नी जुनैद खान उम्र 35 वर्ष पिनका पुत्र मनु उम्र 20 वर्ष अनवार खां पुत्र रफीक उम्र 60 वर्ष शबनम पत्नी ईरफान उम्र 35 वर्ष शर्मा देवी पत्नी पांचू प्रजापति पूजा प्रजापति पत्नी राजू प्रजापति

उम्र 28 वर्ष सितारा पत्नी मुमताज उम्र 34 वर्ष बिल्किस बेगम पत्नी मुबारक अहमद उम्र 30 वर्ष सहित एक दर्जन लोग घायल हो गए सभी का निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है वही ग्रामीणों ने इसकी सूचना बिजली विभाग के लाइनमैन को दिया सूचना पर पहुंचकर लाइन मैन ने लाइन को काटकर तार को सही कर लाइन को दुबारा चालू करा दिया। परिजन घटना की सूचना पुलिस एवं राजस्व विभाग को दिये! घटना की सूचना पर अदलहाट पुलिस एवं राजस्व टीम में कानूनगो प्रेम शंकर ओझा व लेखपाल बिजय सिंह घटना स्थल पर पहुँचकर जांच पड़ताल किये! अदलहाट पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया! इस हादसे में कई घरों में विद्युत करेन्ट उतरने से दर्जन भर लोग झुलस गए जिसका स्थानीय प्राइवेट चिकित्सक के यहाँ इलाज चल रहा है! मृतक मुकेश प्रजापति को तीन पुत्री व एक लड़का है! बड़ी लड़की रोशनी 18 वर्ष, पलुई 15 वर्ष, प्रतिभा कुमारी 12 वर्ष व एक लड़का प्रशांत कुमार 8 वर्ष है! मृतक की पत्नि उषा देबी की तहरीर पर उचित कार्यवाही करते हुए शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया!

मासूम बच्चों ने रोजा रख देश की तरक्की के लिए मांगी दुआ

प्रखर ब्यूरो मुहम्मदाबाद/ यूसुफपुर/ गाजीपुर। रमजान माह में तपती धूप की परवाह किए बिना नन्हे-मुन्ने बच्चों ने भी रोजा रखा। अल्लाह ताला और उसके रसूल की रजा हासिल करने के लिए भूख और प्यास की शिद्दत बर्दाश्त कर बच्चों ने देश की तरक्की के लिए दुआ मांगी। क्षेत्र के मोहम्मदाबाद अंर्तगत ग्राम दाउदपुर में आयत तनवीर, 7 वर्ष, नूर फातिमा तनवीर, 5 वर्ष भीषण गर्मी की परवाह किए बिना रोजा रखा। परिवार के बड़े लोगों ने भी बच्चों को हौसला अफजाई की। बच्चों के चेहरे पर खुशी की झलक रही। बच्चों ने रोजा खोल कर देश में अमन-चैन के लिए अल्लाह ताला से दुआ की। कुराने पाक की तिलावत की जा रही है। इस दौरान घरों में अपने बड़ों को रोजा रखता और इबादत करता देख बच्चे भी रोजा रख रहे हैं। उन्होंने मगरिब की अजान को सुनकर खजूर और पानी से रोजा खोला। इसके साथ ही बारगाह ए इलाही में दोनों हाथ को फैला कर दुआ मांगी और अपने वतन के तरक्की के लिए दुआ मांगी।

नेशनल बैडमिंटन में मानसिक दिव्यांग मनोज पाल का हुआ चयन

प्रखर बक्शा/ जौनपुर। जनपद में पहली बार नेशनल में खेलने का मिला मौका हर्षिता इंटरनेशनल दिव्यांग स्कूल बक्शा जौनपुर का मानसिक दिव्यांग छात्र मनोज कुमार पाल का नेशनल बैडमिंटन में हुआ चयन जो स्पेशल ओलम्पिक भारत 29 से 31 मार्च गुड़गांव (हरियाणा) चलेगा इस संस्थान के कर्मचारियों के मेहनत व परिश्रम से एव इस संस्थान से जुड़े सभी लोग जो तन मन धन में सहयोग करते हैं उसी के परिणाम स्वरूप आज मनोज कुमार पाल का नेशनल बैडमिंटन में चयन हुआ यह जनपद के लिए गर्व की बात है प्रबन्धक विनोद कुमार माली ने सभी कर्मचारियो को बधाई दी और संस्थान से जुड़े सभी लोगों से कहा अपना आशिर्वाद दें जिससे यह बच्चा नेशनल बैडमिंटन में प्रथम स्थान प्राप्त कर जनपद का नाम रोशन करें डॉ प्रमोद कुमार सैनी बताया कि इस दिव्यांग संस्थान बक्शा में दिव्यांग बच्चों को निःशुल्क शिक्षण प्रशिक्षण भोजन कपड़ा

स्वास्थ परिक्षण दिव्यांग प्रमाण पत्र उपकरण फिजियोथैरेपी आदि दिया जाता है । तालिम नहीं दी जाती परिदों के उड़ानों की वो खुद ही समझ जाते हैं ऊंचाई आसमानों की।

पुलिस उपायुक्त काशी जोन ने किया चौक थाने का वार्षिक निरीक्षण - आर.एस. गौतम

प्रखर दानगंज वाराणसी। थाना चौक का वार्षिक निरीक्षण किये जाने हेतु श्री आर.एस गौतम पुलिस उपायुक्त जोन- काशी कमिश्नरेट वाराणसी थाना चौक पहुँचे। सर्वप्रथम गार्द साम लेते हुए इनके द्वारा थाने के प्रशासनिक भवन, बैरक, आवास एवं भोजनालय व थाना परिसर का भ्रमण किया गया तथा आवश्यक साफ-सफाई हेतु प्रभारी निरीक्षक चौक एवं हेड मुहर्रिर को निर्देश दिये गये। इसके अतिरिक्त थाने के अभिलेखों, रजिस्टर इत्यादि को चेक किया गया तथा थाने पर नियुक्त आरक्षीगण व उप- निरीक्षणगण के साथ गोष्ठी की गयी। गोष्ठी के दौरान उपस्थित कर्मचारीगणों की समस्या सुनी गयी तथा महिलाओं की सुरक्षा के प्रति सरकार द्वारा प्रचलित योजनाओं यथा महिला सशक्तिकरण, महिला हेल्प डेस्क, महिला हेल्प लाइन 1090, के कर्तव्यों से अवगत कराते हुए आम जनमानस में जागरुकता लाये जाने हेतु सभी को निर्देशित किया गया तथा महिला अपराधों तथा साइबर क्राइम पर प्रभावी अंकुश लगाये जाने के सम्बन्ध में समस्त कर्मियों को निष्ठा / सतर्कता के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन किये जाने हेतु बताया गया। महिला आरक्षियों को यह भी निर्देश दिया गया कि अपने-अपने

बीट क्षेत्र में जाकर स्कूल कॉलेज के पास एण्टीरोमियों के तहत चेकिंग करें, व महिलाओं को एकत्र कर उनकी समस्याओं को जाने व उनको उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करें जिससे नाबालिग बच्चे बच्चियों के अपराधों में कमी लायी जा सके तथा बीट आरक्षियों को निर्देशित किया गया की अपने बीट क्षेत्र में सतर्कता के साथ भ्रमणशील रहे तथा क्षेत्र के माफिया / अपराधी किस्म के व्यक्तियों को चिन्हित करें एवं इसकी सूचना अपने बीट प्रभारी / थानाध्यक्ष बताते हुए अपने बीट बुक में दर्ज करते हुए अन्तर्गत धारा 107 / 116 सीआरपीसी की कार्यवाही करे तथा पाबन्द कराये, उलंघन करने पर अन्तर्गत धारा-122 सीआरपीसी की कार्यवाही करें ताकि अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाया सके। तथा क्षेत्र में शांति/ कानून व्यवस्था को सुदृढं बनाये रखने हेतु यह भी निर्देशित किया गया कि थानाप्रभारी व समस्त उप निरीक्षकगण मय पुलिस फोर्स के नियमित पैदल गस्त करेंगे व जनता के साथ संवाद स्थापित करेंगे। साथ ही आगामी गंगा पुष्कर मेला के संबंध में सभी को निर्देशित किया गया।

घाट पर चेंजिंग रूम का इंतजाम कराया गया एमएलए और सीआरपीएफ के जवानों ने लोगों को किया जागरूक

प्रखर वाराणसी। अस्सी घाट पर लगाया गया चेंजिंग रूम व अर्पण कलश पत्रकार बंधुओं द्वारा बताया गया था कि अस्सी घाट पर महिलाओं को स्नान के बाद कपड़े चेंज करने में काफी दिक्कत आ रही है यहां चेंजिंग रूम होना चाहिए पत्रकार बंधुओं को बात को ध्यान में रखते हुए विधायक श्री सौरभ श्रीवास्तव के नेतृत्व में आज दिनांक 27/03/23 को मां गंगा के तट अस्सी घाट पर जहां दैनिक आरती होती है पंडित पुजारी लोग

चौकी छतरी लगा कर पूजा कराते है जहां गंगा जी मे लोग निर्माल्य कचरा डालते है वहां पर गंगा हरीतिमा अभीयान के अग्रदूत एवं सृजन सामाजिक विकास न्यास के अध्यक्ष अनिल कुमार सिंह के आगुवाई में बिशाल प्रोट्कशन फोर्स की मदद से श्री अनिल कुमार बुछ कमांडेंट 95 बटालियन सी आर पी एफ के देखरेख में एवं सृजन संस्था के सदस्यों तथा भाजपा के पदाधिकारियो द्वारा दो चेंजिग रुम और 5 अर्पण कलश रखे गये जिसके मुख्य अतिथि माननीय बिधायक कैन्ट श्री सौरभ श्रीवास्तव जी व ब्रह्मा वेद विद्यालय के छात्रों द्वारा वैदिक मंत्रो चारण के साथ अर्पण कलश रख कर अपने करकमलो द्वारा फूल माला कचरा को डाल महिला चेजिग रुम को रखवाया, जिसमे विशिष्ट अतिथि 95 बटालियन के श्री महेन्द्र मिश्रा जी उप कमांडेंट ने सभी दर्शनार्थियो को जागरुक करते हुए मां गंगा को स्वच्छ बनाने की अपील किया गंगा हरीतिमा अभियान के ब्रांड अम्बेसडर अनिल कुमार सिंह ने सभी को स्वच्छता, पर्यावरण की शपथ दिलाकर हर घाट पर अर्पण कलश एवं चेजिगं रुम रखने की बात कही, तथा मुख्य अतिथि महोदय द्वारा विशाल प्रोटक्शन फोर्स के जी एम श्री जय प्रकाश सिहं, डिप्टी कमान्डेट श्री महेन्द्र मिश्रा एवं अनिल कुमार सिहं को सम्मानित किया, जिसमे मुख्य रूप से सीआरपीएफ के प्रवीण सिंह पूरी टीम के साथ, जगन्नाथ ओझा, सुधीर सिहं दिवेन्दु सिहं एवं भाजपा के सभी सम्मानित कार्यकर्ता राजीव सिंह गोबिन्द मिश्रा राजेश चल्लू पार्षद आदि ने अपनी अपनी भागीदारी निभाई। जय मां गंगे, जय हिन्द जय भारत जय के उद्घोष से असि घाट गूंज उठा।

'फर्जी' सबसे ज्यादा देखी जाने वाली वेब सीरीज

मुंबई (वार्ता) । बॉलीवुड अभिनेता शाहिद कपूर की वेब सीरीज फर्जी सबसे ज्यादा देखी जाने वाली वेब सीरीज बन गयी है। शाहिद कपूर की डेब्यू वेब सीरीज'फर्जी'अमेजन प्राइम वीडियो पर 10 फरवरी को स्ट्रीम की गई थी। इस वेब सीरीज को काफी ज्यादा पसंद किया गया है हाल ही में एक सर्वे के बाद'फर्जी'को अब तक सबसे ज्यादा देखी जाने वाली भारतीय वेब सीरीज घोषित कर दिया गया है। बताया जा रहा है वेब सीरीज'फर्जी'को 37.1 करोड़ लोगों ने देखा है। इस तरह से इस वेब सीरीज ने कई पॉपुलर वेब सीरीज को पीछे कर दिया है।

■ नई दिल्ली (आईएएनएस)।

उच्च शिक्षण संस्थानों में

वैदिक गणित की तैयारी

भारतीय वैदिक गणित जल्द ही एक विषय के रूप में आईआईटी व ऐसे ही सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों के छात्रों का सिलेबस बन सकता है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों समेत कई अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों में भारतीय वैदिक गणित को लाने की तैयारी की गई है। भारतीय वैदिक गणित, भारतीय दर्शनशास्त्र, भारतीय संस्कृत और विज्ञान एवं भारतीय सौंदर्यशास्त्र, उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ाए जाएंगे। इसके लिए बकायदा शिक्षा मंत्रालय की ओर से बड़ी पहल की गई है और देश भर के उच्च शिक्षण संस्थानों से एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट मांगा गया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मुताबिक भारतीय वैदिक गणित के साथ-साथ भारतीय दर्शनशास्त्र, भारतीय संस्कृत और विज्ञान एवं भारतीय सौंदर्यशास्त्र भी उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ाए जाएंगे। यूजीसी का कहना है कि वह इन सभी क्षेत्रों में देशभर के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों से अभिरुचि की अभिव्यक्ति आमंत्रित कर रहा है।

यूजीसी चेयरमैन प्रोफेसर एम जगदीश कुमार के मुताबिक भारतीय वैदिक गणित, भारतीय दर्शनशास्त्र, भारतीय संस्कृत और विज्ञान एवं भारतीय सौंदर्यशास्त्र के प्रस्ताव पर उच्च शिक्षण संस्थान 30 अप्रैल से पहले अपना एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट ऑनलाइन जमा करा सकते हैं। यूजीसी चेयरमैन के मुताबिक इस संबंध में यूजीसी ने देश भर के सभी आईआईटी संस्थानों, सभी विश्वविद्यालयों के कुलपति व समस्त महाविद्यालयों के प्राचार्यों से आधिकारिक तौर पर संपर्क किया है। इन सभी को यूजीसी ने बकायदा एक पत्र भेजा है। पत्र में यूजीसी की ओर से कहा गया है कि यह कदम संस्कृत के विकास और गुणवतापूर्ण ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन संस्कृत शिक्षण अधिगम सामग्री को विकसित करने के उद्देश्य से उठाया गया है।

यही नहीं, वैदिक शिक्षा पर शिक्षा मंत्रालय ने और भी कई पहल की है। शिक्षा मंत्रालय का मानना है कि भारत में तो लोकतांत्रिक प्रणाली भी वैदिक काल से युगों से विकसित हुई है। इस पहलू को ध्यान में रखते हुए यूजीसी भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर) के सहयोग से देश भर के सभी 45 केंद्रीय विश्वविद्यालयों और 45 डीम्ड विश्वविद्यालयों में विशेष लेक्चर आयोजित किए थे। इस प्रक्रिया में सभी राज्यों के राज्यपालों को भी शामिल किया गया। राज्यपालों से अनुरोध किया गया था कि वे अपने-अपने राज्यों के सभी विश्वविद्यालयों को दिए गए विषय पर लेक्चर आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

वैदिक सूत्र सहज ही में समझ में आ जाते हैं

वैदिक गणित के विशेषज्ञ एके त्रिपाठी बताते हैं कि यह सूत्र सहज ही में समझ में आ जाते हैं। इनका अनुप्रयोग सरल है तथा सहज ही याद हो जाते हैं। यह ऐसा ज्ञान है जिसके माध्यम से कैलकुलेशन की प्रक्रिया मौखिक भी हो जाती है। ये सूत्र गणित की सभी शाखाओं के सभी अध्यायों में सभी विभागों पर लागू होते हैं। शुद्ध अथवा प्रयुक्त गणित में ऐसा कोई भाग नहीं जिसमें उनका प्रयोग न हो। अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, समतल तथा गोलीय त्रिकोणमितीय, समतल तथा घन ज्यामिति (वैशेषिक), ज्योतिर्विज्ञान, समाकल तथा अवकल कलन आदि सभी क्षेत्रों में वैदिक सूत्रों का अनुप्रयोग समान रूप से किया जा सकता है। विशेषज्ञों के मुताबिक छोटी उम्र के बच्चे भी सूत्रों की सहायता से प्रश्नों को मौखिक हल कर उत्तर बता सकते हैं। वैदिक गणित का संपूर्ण पाठ्यक्रम प्रचलित गणितीय पाठ्यक्रम की तुलना में काफी कम समय में पूर्ण किया जा सकता है।

छिटपुट पहल शुरू

वैदिक शिक्षा को लेकर देश के कई बड़े व प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में कुछ छिटपुट पहल शुरू हो चुकी हैं। बीते दिनों दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया में सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि व इस वेद वाक्य को आधार बनाकर वैदिक संगोष्ठी करने का निर्णय लिया गया था। दिल्ली के जामिया विश्वविद्यालय में यह वैदिक संगोष्ठी महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान उज्जैन इस आयोजन में जामिया का सहयोगी था। दोनों प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा यह संयुक्त त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक आयोजन किया गया।

■ इसके लिए शिक्षा मंत्रालय की ओर से बड़ी पहल की गई है और देश भर के उच्च शिक्षण संस्थानों से एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट मांगा गया है

तब्बू के साथ रोमांटिक रिश्ता रखना चाहेंगे

मुंबई (आईएएनएस)। अभिनेता दीपक डोबरियाल ने अभिनेता अजय देवगन की फिल्म भोला में एक नेगेटिव कैरेक्टर निभाने के बारे में बात की और उस अभिनेत्री का खुलासा किया जिसके साथ वह फिल्मों में काम करना पसंद करेंगे। दीपक ने कहा, हर अभिनेता अपने कौशल को निखारने के लिए अभिनय की विभिन्न शैलियों में काम करना चाहता है और इसलिए मैं इस किरदार को निभाना चाहता था।

किरदार में ढलने के लिए, लगभग एक साल तक मैंने अपने व्यक्तित्व में बदलाव किया ताकि किरदार में बेहतर तरीके से फिट हो सकूं। मैंने सॉरी, थैंक यू, या किसी का अभिवादन करना बंद कर दिया था और इससे मैं थोड़ा और आक्रमक हो गया था। लेकिन यह इस तथ्य को नहीं बदलता है कि मैं एक दयालु व्यक्ति हूं, लेकिन जब भूमिका की बात आती है, तो मुझे चरित्र को मूर्त रूप देना होता है। स्क्रीन पर, मैं तब्बू जी के साथ एक रोमांटिक रिश्ता रखना चाहूंगी। वह इतनी प्रतिभाशाली और मजेदार अभिनेत्री हैं। मेरे फिल्मी करियर की शुरूआत अजय भाई और तब्बू जी के साथ हुई थी और तब से मुझे किसी शिक्षक की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। उन्होंने अपनी फिल्म भोला का प्रचार करने के लिए बॉलीवुड सितारों अजय देवगन और तब्बू के साथ एक सेलिब्रिटी अतिथि के रूप में कपिल शर्मा के शो की शोभा बढ़ाई।

अकेले दम पर 20 फीट गहरा तालाब खोद डाला

रांची (आईएएनएस)। झारखंड के पश्चिम सिंहभूम के कुमरिता गांव में रहने वाले चुम्बरू तामसोय ने अकेले दम पर 100 गुणा 100 फीट वाला 20 फीट गहरा तालाब खोद डाला। न कभी सरकारी मदद की चाहत रखी और न किसी और से सहायता मांगी। उनके बनाए तालाब से पूरे गांव के पानी की जरूरतें पूरी होती हैं।

72 साल के चुम्बरू तामसोय ने अपनी पूरी उम्र इस तालाब की खुदाई और उसके विस्तार में खपा दी। उम्र के थपेड़ों ने उन्हें शारीरिक तौर पर कमजोर जरूर कर दिया है, लेकिन उन्होंने पानी बचाने और हरियाली फैलाने के अपने जुनून और हौसले में कोई कमी नहीं आने दी। चुम्बरू तामसोय के जिद-जुनून का यह सफर तकरीबन 45 साल पहले शुरू हुआ। वह 1975 का साल था। इलाके में सूखा पड़ा था। घर में दो वक्त के लिए अनाज तक का संकट था। तभी उत्तर प्रदेश से इस इलाके में आया एक ठेकेदार गांव के कई युवकों को मजदूरी के लिए अपने साथ रायबरेली ले गया। इनमें चुम्बरू तामसोय भी थे। वहां उन्हें नहर के लिए मिट्टी खुदाई के काम में लगाया गया। पूरे दिन काम करने के एवज में ठेकेदार जो मजदूरी देता, वह बहुत कम थी। डांट और प्रताड़ना भी झेलनी पड़ती। यहां काम करते हुए चुम्बरू के दिल में खयाल आया कि अगर घर से सैकड़ों मील दूर रहकर मिट्टी की खुदाई ही करनी है तो क्यों नहीं यह काम अपने गांव में किया जाए। करीब दो-ढाई महीने बाद ही चुम्बरू गांव लौट आए।

■ झारखंड के इस 'जलयोद्धा' ने अकेले दम पर खोद डाला विशाल तालाब

यहां उन्होंने अपनी जमीन पर बागवानी शुरू की, लेकिन जब सिंचाई के लिए पानी की जरूरत हुई तो पास स्थित तालाब के मालिक ने साफ मना कर दिया। यह बात चुम्बरू के दिल पर लगी और उसी रोज उन्होंने अकेले तालाब खोदने की जिद ठान ली। खेती-बाड़ी के साथ हर रोज चार-पांच घंटे का वक्त निकालकर तालाब के लिए मिट्टी खुदाई करने लगे। वह बताते हैं कि अगर किसी रोज दिन में समय नहीं मिला तो रात में ढिबरी जलाकर खुदाई किया करते थे। गांव के लोग हंसते। कुछ लोग उन्हें मूर्ख कहा करते थे।

इसी बीच चुम्बरू गृहस्थी की डोर से बंधे। शादी हुई और इसके बाद एक संतान हुई। उन्हें आस थी कि कम से कम पत्नी उसके तालाब खोदने के अभियान में साझीदार बनेगी, लेकिन गांव के बाकी लोगों की तरह वह भी इसे चुम्बरू का पागलपन समझती थी। पर इससे बेरपवाह चुम्बरू की आंखों में एक ही सपना था कि एक ऐसा तालाब हो, जिससे गांव के हर आदमी को जरूरत भर पानी मिल सके। एक रोज ऐसा भी हुआ कि पत्नी उनके इस 'पागलपन' से खीझकर उन्हें छेड़कर चली गई। उसने किसी और के साथ अपना घर बसा लिया। चुम्बरू आहत हुए, लेकिन उन्होंने तालाब खुदाई की गति और तेज कर दी। आखिरकार कुछ ही सालों में तालाब बनकर तैयार हो गया। उसमें इतना पानी जमा होने लगा कि उनकी बागवानी और खेती की जरूरतें पूरी होने लगीं।

चुम्बरू की अपनी खेती और बागवानी की जरूरतों के लिए छोटा तालाब तो वर्षों पहले बन गया था, लेकिन उन्होंने अपना अभियान किसी रोज थमने नहीं दिया। तालाब का व्यास और उसकी गहराई बढ़ाने के लिए हर रोज इंच-इंच खुदाई जारी रही और कुछ साल पहले इसका आकार सौ गुणा सौ फीट हो गया। अब इसमें सालों भर पानी रहता है। वह इसमें मछली पालन भी करते हैं। चुम्बरू इसी तालाब की बदौलत लगभग पांच एकड़ भूमि पर खेती करते हैं। उन्होंने पचास-साठ पेड़ों की बागवानी भी विकसित कर रखी है। यहां आम, अर्जुन, नीम और साल के पेड़-पौधे हैं।

तालाब के पानी का उपयोग गांव के दूसरे किसान भी खेती से लेकर नहाने-धोने के लिए करते हैं। इलाके में पहले वर्ष भर में केवल धान की एक फसल होती थी। अब चुम्बरू के साथ गांव के लोग अपने खेतों में टमाटर, गोभी, हरी मिर्च, धनिया आदि की भी खेती कर रहे हैं। चुम्बरू की चाहत है कि यह तालाब कम से कम 200 गुणा 200 फीट का हो जाए, ताकि आने वाले दिनों में पूरे गांव में कभी पानी का संकट पैदा न हो। वह आज भी इसके विस्तार के लिए थोड़ी-थोड़ी खुदाई करते हैं। वह बीच में बीमार भी पड़े, लेकिन स्वस्थ होते ही फिर से अपने अभियान में जुट गए। चुम्बरू कहते हैं कि जब तक हाथों में दम है, तब तक उनका यह अभियान नहीं रुकेगा। हैरत की बात यह कि सरकार या किसी संस्था ने उनकी अब तक कोई मदद नहीं की। वर्ष 2017 में एक बार रांची में मत्स्य विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में उन्हें जरूर सम्मानित किया गया।

'गैसलाइट' में काम करना चुनौतीपूर्ण रहा : सारा

मुंबई (वार्ता) । बॉलीवुड अभिनेी सारा अली खान का कहना है कि फिल्म 'गैसलाइट' में काम करना उनके लिये चुनौतीपूर्ण रहा है। गैसलाइट में सारा अली खान ,विक्रांत मैसी और चिागदा सिंह की मुख्य भूमिका है।यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म यानी डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर आ रही हैं। सारा इसमें मिसा के रोल में हैं, जबकि विक्रांत और चिागदा ने कपिल और रुक्मिणी का किरदार निभाया हैं। सारा अली खान ने बताया,'बतौर कलाकार मैं लगातार अलग अलग तरह की फिल्में करना चाहती हूं। गैसलाइट में मेरा किरदार पूरी फिल्म में व्हील चेयर पर हैं। वह मेरे चैलेंजिंग था, क्योंकि मैं हाई एनर्जी वाली लड़की हूं। हमेशा उछलती- कूदती रहती हूं। यहां तो पॉसिबल तो था ही नहीं।जब मैं अपने मिसा के किरदार को थर्ड पर्सन के नजरिए से देखती हूं तो पाती हूं कि बेहद कठिन परिस्थितियों के बावजूद वो अपने मकसद से हटती नहीं हैं। उसे देखकर मुझे बहुत प्रेरणा मिलती हैं कि यदि वो स्क्रॉन्ग रह सकती हैं, जो व्हील चेयर पर रहती हैं तो मैं बतौर सारा जिसके पास लविंग मदर और प्यारा माहौल है, उसके पास कोई बहाना नहीं है कि मैं हार मान लूं।'

नुसरत- सोहा ने पूरी की 'छोरी 2' की शूटिंग

मुंबई (वार्ता) । बॉलीवुड अभिनेी नुसरत भरुचा और सोहा अली खान स्टारर'छोरी 2'की शूटिंग पूरी हो गयी है। सोहा अली खान ने इंस्टाग्राम पर नुसरत के साथ एक मजेदार वीडियो साझा किया और इसे कैप्शन दिया, 2 छोरियां छोरी 2 की रैपिंग से बहुत खुश हैं। विशाल फुरिया निर्देशित 'छोरी'को ओटीटी प्लेटफॉर्म अमॉन प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम किया गया और दर्शकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। अब छोरी का सीक्वल छोरी 2 आ रहा है। नुसरत भरूचा ने बताया, छोरी हम सभी के लिए एक जुनूनी परियोजना है और मैं विशाल और टीम के साथ जुड़ने का इंतजार नहीं कर सकता क्योंकि हम कहानी को छोरी 2 के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

आलिया ने बच्चों को भेजे गिफ्ट्स

मुंबई (आईएएनएस)। एक्ट्रेस आलिया भट्ट ने अपने कपड़ों के ब्रांड से स्टार एनटीआर जूनियर के बच्चों अभय और भार्गव के लिए गिफ्ट्स से भरे दो बैग भेजे। एनटीआर जूनियर ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर एक फोटो शेयर की और उन्हें गिफ्ट्स के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने दो बैग की एक फोटो शेयर की, जिस पर आप मेरे पसंदीदा हयूमन बीन हैं लिखा। एक्टर ने कैप्शन में लिखा, थैंक यू आलिया, अभय और भार्गव के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए... उम्मीद है कि जल्द ही मेरे नाम के साथ एक बैग देखने को मिलेगा। एनटीआर जूनियर और आलिया एस.एस. राजमौली की फिल्म आरआरआर में साथ काम कर चुके हैं। एनटीआर जूनियर और राम चरण पर फिल्माए गए गाने नाटू नाटू को इस साल 95वें ऑस्कर अवॉर्ड से नवाजा गया। इसने गोल्डन ग्लोब और क्रिटिक्स च्वाइस अवार्ड भी जीता। वर्कफ्रंट की बात करें, अभिनेता ने एनटीआर 30 की शूटिंग शुरू कर दी है, इसमें उनके साथ बॉलीवुड एक्ट्रेस जान्हवी कपूर है। आलिया जल्द ही रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में नजर आएंगी। फिल्म में आलिया के अलावा रणवीर सिंह, धर्मेंद्र, जया बच्चन और शबाना आजमी हैं।

बजरंगी भाईजान का सीक्वल करेंगी पूजा!

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेी पूजा हेगड़े सुपरहिट फिल्म बजरंगी भाईजान के सीक्वल में काम करती नजर आ सकती है। 'बजरंगी भाईजान' में सलमान खान, करीना कपूर और नवाजउद्दीन सिद्दिकी ने मुख्य भूमिका निभायी थी। के.वी. विजयेंद्र प्रसाद ने हाल ही में'बजरंगी भाईजान'का सीक्वल बनने की बात कंफर्म की थी। उन्होंने बताया था सीक्वल के आइडिया के साथ सलमान को अप्रोच किया गया। सलमान को आइडिया पसंद आया, जिसके बाद फिल्म की स्क्रिप्ट पर काम चल रहा है। सलमान खान ने यह पुष्टि की थी कि बजरंगी भाईजान का सीक्वल बनेगा और उसका नाम पवन पुा भाईजान होगा। कहा जा रहा है कि'पवनपुत्र भाईजान'में पूजा हेगड़े को कास्ट किया गया है।

जैकलीन और सोनू सूद शुरू करेंगे 'फतेह' की शूटिंग

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेता सोनू सूद, जैकलीन फर्नांडीस के साथ अमृतसर में फतेह की शूटिंग शुरू करेंगे। सोनू सूद और जैकलीन फर्नांडीज अमृतसर पहुंचे हैं। वह जल्द ही अपनी फिल्म'फतेह'की शूटिंग शुरू करने जा रहे हैं। फिल्म की शूटिंग से पहले उन्होंने अपने पूरे क्रू के साथ गोल्डन टेंपल में माथा टेका। सोनू सूद ने कहा कि वह बचपन से अपने परिवार के साथ माथा टेकने यहां आते

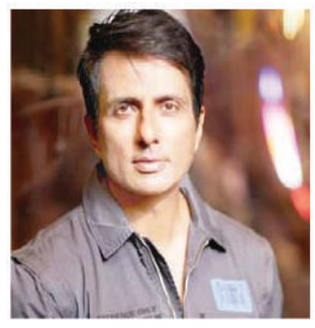

रहे हैं, लेकिन अब वह अपने फिल्म के परिवार के साथ यहां पहुंचे हैं। बताया जा रहा है कि फिल्म'फतेह'एक एक्शन थ्रिलर है, जो पंजाब पर ही आधारित है। इसे सोनू सूद की ही होम प्रोडक्शन शक्ति सागर प्रोडक्शंस के बैनर तले ही तैयार किया जा रहा है। सोनू सूद ने बताया कि इस फिल्म की शूटिंग को वह अमृतसर से शुरू करने जा रहे हैं। इस फिल्म को वैभव मिश्रा निर्देशित कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि यह फिल्म हैकर्स पर आधारित होने वाली है।

जुनैद के साथ काम करेंगी खुशी कपूर!

मुंबई (वार्ता) । बॉलीवुड अभिनेी खुशी कपूर, आमिर खान के पुत्र जुनैद खान के साथ लव तुडे के हिंदी रीमेक में काम नजर आ सकती हैं। बॉलीवुड में चर्चा है कि फैंटम फिल्म तमिल सुपरहिट फिल्म लव टुडे का हिन्दी रीमेक बनाने जा रहा है। इसके लिए खुशी को अप्रोच किया गया है। खुशी कपूर को लव टुडे की कहानी पसंद आई और जो किरदार उन्हें ऑफर हुआ है, वो उन्हें काफी अच्छा लगा है। इस फिल्म में जुनैद खान भी नजर आएंगे। खुशी कपूर बोनी कपूर और श्रीदेवी की छोटी बेटी हैं। खुशी कपूर जल्द ही फिल्म'द आर्चीज'से डेब्यू करने जा रही हैं। इसमें शाहरुख खान की बेटी सुहाना खान के अलावा और भी कई स्टारकिड्स नजर आएंगे।

राम चरण ने कियारा के साथ काटा बर्थडे केक

मुंबई (आईएएनएस)। फिल्म अभिनेता राम चरण सोमवार को 38 साल के हो जाएंगे। उन्होंने अपना जन्मदिन अपनी आगामी फिल्म आरसी15 के सेट पर अपने क्रू और सह-कलाकार कियारा आडवाणी के साथ मनाया। राम चरण ने शनिवार को सेट पर अपना जन्मदिन मनाया और केक काटने की रस्म भी अदा की। उन पर गुलाब की पंखुड़ियां बरसाई गईं। उनके साथ कियारा, निर्देशक एस. शंकर और कोरियोग्राफर-अभिनेता प्रभु देवा भी शामिल हुए। सोशल मीडिया पर कई तस्वीरें वायरल हो रही हैं, जहां राम चरण नीले रंग की शर्ट, पैन्ट्स और सनग्लासेज पहने नजर आ रहे हैं। कियारा व्हाइट टॉप और ब्लू जींस में थी। खबरों के मुताबिक, आगामी फिल्म वर्तमान समय की राजनीति के साथ एक एक्शन ड्रामा के रूप में पेश की जाएगी। यह तीन भाषाओं - तेलुगु, तमिल और हिंदी में रिलीज होगी। फिल्म में एसजे सूर्या, जयराम, अंजलि और श्रीकांत भी हैं।

खबर संक्षेप

रेलवे ने वंदे भारत के लिए टाटा स्टील को दिया ऑर्डर

नई दिल्ली। 'वंदे भारत' ट्रेन के लिए टाटा स्टील दिए गए ऑर्डर के संबंध में कंपनी ने स्पष्ट किया है कि रेलवे ने वंदे भारत ट्रेन की सीटों और अंदरूनी पैनलों का ऑर्डर दिया है। यह उसके कोच या डिब्बों के विनिर्माण का ऑर्डर नहीं है। टाटा स्टील के प्रौद्योगिकी और नई सामग्री कारोबार विभाग के उपाध्यक्ष देवाशीष भट्टाचार्य ने पीटीआई-भाषा से कहा, 'टाटा स्टील 225 करोड़ रुपये के ऑर्डर के तहत वंदे भारत रेल के 23 डिब्बों के लिए हल्की सीटें और 16 डिब्बों के लिए फाइबर से लैस पॉलिमर कम्पोजिट-आधारित अंदरूनी पैनल की आपूर्ति करेगी।' कुछ मीडिया संस्थानों ने खबर चलाई थी कि टाटा स्टील को वंदे भारत रेल के डिब्बे बनाने का ऑर्डर मिला है, जो कि 'गलत और निराधार है।

फ्यूचर रिटेल के कर्जदाताओं ने नए सिरे से बोलियां मांगीं

नई दिल्ली। फ्यूचर रिटेल लि. (एफआरएल) के कर्जदाताओं ने अब नये सिरे से रुचि पत्र आमंत्रित किये हैं। इसमें संभावित खरीदार कर्ज में डूबी पूरी कंपनी के लिये या फिर इकाइयों में बंटे उसके कारोबार के लिये बोली लगा सकते हैं। कर्जदाताओं की समिति (सीओसी) ने कंपनी के कारोबार को पांच संकुल में बांटा है। इसमें एक विकल्प के तहत बोलीदाता एक संकुल (क्लस्टर) या एक से अधिक संकुल के लिये बोली लगा सकते हैं। समाधान योजना आकर्षित करने में विफल रहने के बाद नये रुचि पत्र आमंत्रित किये गये हैं।

सेंसेक्स की शीर्ष पांच कंपनियों के पूंजीकरण में गिरावट

नई दिल्ली। सेंसेक्स की शीर्ष 10 कंपनियों में पांच के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में बीते सप्ताह सामूहिक रूप से 86,447.12 करोड़ रुपये की गिरावट आई। सबसे अधिक नुकसान इन्फोसिस, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) को हुआ। बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 462.8 अंक या 0.79 प्रतिशत के नुकसान में रहा। समीक्षाधीन सप्ताह में रिलायंस इंडस्ट्रीज, टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, इन्फोसिस और एसबीआई के बाजार मूल्यांकन में गिरावट आई। वहीं आईसीआईसीआई बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, आईटीसी, एचडीएफसी और भारती एयरटेल की बाजार हैसियत बढ़ गई।

कपड़ा क्षेत्र की 18 वस्तुओं के निर्यात पर मिलेगा आरडीटीईपी का लाभ

नई दिल्ली। सरकार ने साड़ी और लुंगी समेत कपड़ा क्षेत्र की 18 वस्तुओं का व्यापार बढ़ाने के उद्देश्य से इनको भी निर्यात उत्पादों पर शुल्क और करों की छूट (आरओडीटीईपी) के अंतर्गत लाभ देने का निर्णय लिया है। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) की एक अधिसूचना में कहा गया है कि शुल्क वापसी योजना- आरओडीटीईपी के अंतर्गत लाभ 23 मार्च से होने वाले निर्यात पर दिया जाएगा। आरओडीटीईपी के अंतर्गत, उत्पादन में काम आने वाले उत्पादों समेत अन्य पर लगाए गए केंद्र एवं राज्य सरकार के विभिन्न शुल्क, कर और उपकर निर्यातकों को वापस कर दिए जाएंगे। इसके अनुसार, आरओडीटीईपी के अंतर्गत 28 मार्च, 2023 से निर्यात के अंतर्गत 18 उत्पाद जोड़े जा रहे हैं।

एफएमसीजी क्षेत्र में चुनौती देने की तैयारी में रिलायंस

⏭ नई दिल्ली

गुजरे दौर के शीतल पेय ब्रांड कैम्पा को दोबारा बाजार में पेश करने वाली रिलायंस ने अब व्यक्तिगत एवं घरेलू उपभोग खंड में भी कदम रखकर और 30-35 प्रतिशत कम दाम में उत्पादों को उतारकर स्थापित एफएमसीजी कंपनियों के लिए चुनौती पेश कर दी है। रोजमर्रा के इस्तेमाल वाले उत्पाद (एफएमसीजी) क्षेत्र के जानकारों का मानना है कि स्थापित कंपनियों के उत्पादों की तुलना में कम दाम पर रिलायंस के उत्पादों के उपलब्ध होने से ग्राहक उन्हें आजमाने के लिए प्रेरित होंगे और फिर वे उनकी गुणवत्ता एवं प्रदर्शन को देखते हुए दोबारा इस्तेमाल करने के बारे में कोई फैसला करेंगे।

रिलायंस ने व्यक्तिगत और घरेलू उपभोग खंड में रखा कदम

आरसीपीएल के उत्पाद अभी चुनिंदा बाजारों में

रिलायंस रिटेल वेंचर्स लिमिटेड (आरआरवीएल) के पूर्ण स्वामित्व वाली एफएमसीजी अनुषंगी आरसीपीएल के उत्पाद अभी सिर्फ चुनिंदा बाजारों में ही उपलब्ध हैं लेकिन कंपनी इनके लिए अखिल भारतीय स्तर पर डीलरशिप नेटवर्क खड़ा करने में लगी हुई है। ऐसा होते ही उनके उत्पादों की उपलब्धता आधुनिक एवं सामान्य कारोबारी माध्यमों पर हो जाएगी।

क्षेत्र में एचयूएल, पीएंडजी व नेस्ले जैसी कंपनियों का दबदबा

उद्योग के एक जानकार सूत्र ने कहा, 'वे एक समर्पित वितरण नेटवर्क खड़ा कर रहे हैं जिसमें परंपरागत डीलर एवं स्टॉकिस्ट के साथ आधुनिक बी2बी चैनल भी शामिल होंगे।' रिलायंस की योजना 110 अरब डॉलर आकार वाले एफएमसीजी खंड में एक अहम स्थान पाने की है और अभी तक इस क्षेत्र पर हिंदुस्तान यूनिलीवर, पीएंडजी, रेकिट और नेस्ले जैसी कंपनियां का दबदबा है।

साबुन, डिटर्जेंट पाउडर आदि उत्पाद उतारे

रिलायंस ने हाल ही में नहाने के साबुन, डिटर्जेंट पाउडर और बर्तन धोने वाले साबुन के कई उत्पाद बाजार में उतारे हैं। इनकी कीमत स्थापित कंपनियों के उत्पादों की तुलना में 30-35 प्रतिशत तक कम है। इसके पहले रिलायंस ने कैम्पा को भी नए सिरे से बाजार में पेश कर पेप्सी एवं कोक जैसे ब्रांड को टक्कर देने की कोशिश की है।

पहले दूरसंचार क्षेत्र में किया उलटफेर

टेक्नोपार्क एडवाइजर्स के चेयरमैन अरविंद सिंघल ने कहा कि रिलायंस ने पहले दूरसंचार क्षेत्र में कम कीमत पर सेवाएं देकर बड़ा उलटफेर किया था और अब वह एफएमसीजी खंड में वही काम करना चाहती है। लेकिन उसके उत्पादों की गुणवत्ता थोड़ी भी कम हुई तो वह कामयाब नहीं हो पाएगी।

खुदरा मुद्रास्फीति छह प्रतिशत के संतोषजनक स्तर से ऊपर

रिजर्व बैंक की ब्याज दर में 0.25% की और वृद्धि संभव, 3 अप्रैल से एमपीसी की बैठक

एजेंसी ⏭ मुंबई

खुदरा मुद्रास्फीति के छह प्रतिशत के संतोषजनक स्तर से ऊपर बने रहने और अमेरिकी फेडरल रिजर्व समेत कई केंद्रीय बैंकों के आक्रामक रुख के बीच भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) भी अगली मौद्रिक समीक्षा में रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की एक और वृद्धि का फैसला कर सकता है। मौद्रिक नीति के निर्धारण संबंधी सर्वोच्च संस्था मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की द्विमासिक समीक्षा बैठक तीन अप्रैल से शुरू होने वाली है। तीन दिनों तक चलने वाली यह बैठक छह अप्रैल को नीतिगत दर संबंधी फैसले के साथ खत्म होगी।

- अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने आक्रामक रुख जारी रखा
- रेपो दर चार प्रतिशत से बढ़कर 6.50 फीसदी पर पहुंची

फरवरी में रेपो दर में 0.25 फीसदी की वृद्धि की गई

मुद्रास्फीति पर काबू पाने के लिए आरबीआई ने मई, 2022 से लगातार नीतिगत ब्याज दर में बढ़ोतरी का रुख अपनाया हुआ है। इस दौरान रेपो दर चार प्रतिशत से बढ़कर 6.50 प्रतिशत पर पहुंच चुकी है। गत फरवरी में संपन्न पिछली एमपीसी बैठक में भी रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की वृद्धि की गई थी।

एमपीसी सभी पहलू की समीक्षा करेगी

एमपीसी की बैठक में मौद्रिक नीति से जुड़े तमाम घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय पहलुओं की व्यापक समीक्षा के बाद कोई फैसला लिया जाएगा। इस दौरान खुदरा मुद्रास्फीति की स्थिति और फेडरल रिजर्व, यूरोपीय सेंट्रल बैंक एवं बैंक ऑफ इंग्लैंड जैसे प्रमुख केंद्रीय बैंकों के हालिया कदमों का भी गहन विश्लेषण किया जाएगा।

मुद्रास्फीति निर्धारित स्तर से अधिक

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित मुद्रास्फीति जनवरी में 6.52 प्रतिशत और फरवरी में 6.44 प्रतिशत पर रही है। खुदरा मुद्रास्फीति का यह स्तर आरबीआई के लिए निर्धारित छह प्रतिशत के सुविधाजनक स्तर से अधिक है।

दरों में वृद्धि का दौर खत्म भी हो सकता है

बैंक ऑफ बड़ौदा के मुख्य अर्थशास्त्री मदन सबनवीस ने कहा, 'पिछले दो महीनों से मुद्रास्फीति के छह प्रतिशत से ऊपर बने रहने और तरलता के भी अब लगभग तटस्थ हो जाने के बाद ऐसी उम्मीद है कि आरबीआई एक बार फिर रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की बढ़ोतरी कर सकता है। इसके साथ ही आरबीआई अपने रुख को तटस्थ घोषित कर यह संकेत भी दे सकता है कि दरों में वृद्धि का दौर खत्म हो चुका है।'

वित्त वर्ष में कुल छह एमपीसी की बैठक

इंडिया रेटिंग्स एंड रिसर्च के मुख्य अर्थशास्त्री डीके पंत का भी मत है कि एमपीसी की बैठक में रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की बढ़ोतरी की जा सकती है। इसके साथ ही उन्होंने इसके अंतिम दर वृद्धि होने की भी संभावना जताई। समूचे वित्त वर्ष में आरबीआई कुल छह एमपीसी बैठकों का आयोजन करेगा।

मुद्रास्फीति के पीछे आपूर्ति बड़ी वजह

हालांकि, पीडब्ल्यूसी इंडिया के भागीदार (आर्थिक सलाहकार सेवाएं) रानेन बनर्जी का मानना है कि भारत में मुद्रास्फीति के पीछे आपूर्ति कारकों के बड़ी वजह होने से एमपीसी इस बार ब्याज दर में वृद्धि का सिलसिला रोकने का फैसला भी कर सकती है। यह वित्त वर्ष 2023-24 की पहली मौद्रिक समीक्षा बैठक होगी।

अक्टूबर-दिसंबर में सिर्फ 15% दिवाला मामलों का समाधान

एजेंसी ⏭ मुंबई

राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) के पास अक्टूबर-दिसंबर, 2022 में दर्ज 267 मामलों में से सिर्फ 15 का निपटान हो सका है। भारतीय दिवाला एवं ऋणशोधन अक्षमता बोर्ड ने यह जानकारी देते हुए कहा कि इन मामलों में कुल दावा राशि की सिर्फ 27 प्रतिशत वसूली हो सकी है। कोटक सिक्योरिटीज द्वारा आईबीबीआई के हालिया आंकड़ों के विश्लेषण के अनुसार, कुल 45 प्रतिशत मामले परिसमापन के जरिये निपटाए गए। तिमाही आधार पर चालू वर्ष (2022-23) की दूसरी तिमाही में एनसीएलटी में 256 मामले दर्ज किए गए, जो वित्त वर्ष 2019-20 में समान समय में दर्ज 2,000 मामलों के बहुत कम है। विश्लेषण के अनुसार, कुल परिसमापन में से एक-तिहाई मामले ऐसे थे जिनमें कोई समाधान योजना नहीं मिली थी।

समाधान प्रक्रिया का समय अब भी बहुत अधिक

रिपोर्ट के अनुसार, समाधान प्रक्रिया का समय अब भी बहुत अधिक बना हुआ है लेकिन वित्त वर्ष 2020-21 की दूसरी तिमाही में दर्ज सर्वाधिक समय से कुछ कम हुआ है।

घरेलू शेयर बाजार की दिशा वैश्विक रुख पर होगी निर्भर

विदेशी कोषों की गतिविधियां भी बाजार पर असर डालेगी

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

डेरिवेटिव अनुबंधों के मासिक निपटान के बीच कम कारोबारी सत्रों वाले सप्ताह में स्थानीय शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव का सिलसिला जारी रह सकता है। विश्लेषकों ने यह आशंका जताते हुए कहा है कि वैश्विक कारक और विदेशी कोषों की गतिविधियां भी बाजार की धारणा को प्रभावित करेंगी।

कच्चे तेल की कीमत और रुपये का उतार-चढ़ाव भी बाजार की दिशा तय करने में अहम भूमिका निभाएंगी। 'रामनवमी' पर गुरुवार को बाजार में अवकाश रहेगा। स्वस्तिका इन्वेस्टमार्ट लि. के शोध प्रमुख संतोष मीणा ने कहा, 'मार्च के वायदा एवं विकल्प (एफएंडओ) के निपटान से स्थानीय स्तर पर उतार-चढ़ाव बढ़ सकता है। प्रमुख अंतरराष्ट्रीय बैंकों की स्थिति से वैश्विक स्तर पर बाजार की दिशा तय होगी।' मीणा ने कहा, 'बाजार की निगाह भू-राजनीतिक स्थिति पर भी रहेगी, क्योंकि रूस और यूक्रेन के बीच तनाव जारी है। इसके अलावा अमेरिका और सीरिया के बीच तनाव बढ़ रहा है। हालांकि, बाजार इसको ज्यादा तवज्जो नहीं दे रहा है। हाल के महीनों में विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की आक्रामक बिकवाली की वजह से संस्थागत प्रवाह भी बाजार के लिए महत्वपूर्ण रहेगा।' बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 462.8 अंक यानी 0.79 प्रतिशत टूट गया।

बैंकिंग क्षेत्र को लेकर चिंता बढ़ी

वैश्विक संकेतकों के अलावा विदेशी कोषों का प्रवाह और कच्चे तेल की कीमतें भी बाजार को प्रभावित कर सकती हैं। वैश्विक स्तर पर बैंकिंग क्षेत्र को लेकर चिंता बढ़ी है। इस बात को लेकर अनिश्चितता है कि फेडरल रिजर्व और अन्य केंद्रीय बैंक आगे चलकर ब्याज दरों को लेकर किस तरह का रुख अपनाते हैं।

2024 तक अमेरिका के मुकाबले का होगा देश का राजमार्ग ढांचा : गडकरी

भारतमाला : 635 किमी के रायपुर-धनबाद आर्थिक गलियारे का निर्माण हो रहा

एजेंसी ⏭ रांची

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी का दावा है कि भारत का राजमार्ग ढांचा 2024 तक अमेरिका के मुकाबले का होगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए समयबद्ध तरीके से मिशन के रूप में काम किया जा रहा है और हरित एक्सप्रेसवे और रेल ओवर ब्रिज का निर्माण भी किया जा रहा है।

गडकरी ने कहा कि 'भारतमाला-2' को जल्द मंत्रिमंडल की मंजूरी मिल जाएगी। एक बार मंजूरी मिलने के बाद यह देश में एक मजबूत बुनियादी ढांचे की जरूरतों को पूरा करेगी। गडकरी ने कहा, 'मुझे विश्वास है कि भारत का राजमार्ग ढांचा 2024 तक अमेरिका के मुकाबले का होगा। इसके लिए मिशन के रूप में काम हो रहा है।

साथ ही हरित एक्सप्रेसवे नेटवर्क का निर्माण भी किया जा रहा है।' गडकरी ने कहा, 'झारखंड में सात नए एक्सप्रेसवे, आर्थिक गलियारे और अंतर (इंटर) गलियारे का काम 70,000 करोड़ रुपए की लागत से किया जा रहा है।' उन्होंने कहा कि इसके अलावा ओडिशा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों से बेहतर संपर्क के लिए 50,000 करोड़ रुपये का काम किया जा रहा है। परियोजनाओं का विवरण देते हुए मंत्री ने कहा कि रांची-वाराणसी अंतर गलियारे के लिए 6,200 करोड़ रुपये की लागत से चार-लेन के अंतर गलियारे पर काम किया जा रहा है। इससे रांची और वाराणसी के बीच यात्रा के समय में काफी कमी आएगी। इसी तरह 15 हजार करोड़ रुपये की लागत से 635 किलोमीटर के रायपुर-धनबाद आर्थिक गलियारे का निर्माण हो रहा है। यह गलियारा बनने के बाद कोयला, इस्पात, सीमेंट और खनिजों का तेजी से आवागमन सुनिश्चित होगा।

बीते सप्ताह खाद्य तेल की कीमतों में गिरावट का रुख

नई दिल्ली। विदेशी बाजारों में खाद्य तेलों के दाम टूटने के बीच बीते सप्ताह दिल्ली तेल-तिलहन बाजार में खाद्य तेल, तिलहन कीमतों में गिरावट का रुख कायम रहा। सूरजमुखी तेल में इस गिरावट की वजह से लगभग सारे देशी तेल-तिलहनों के दाम पर दबाव रहा और सरसों, मूंगफली तेल-तिलहन, सोयाबीन तेल, कच्चा पामतेल (सीपीओ) एवं पामोलीन तथा बिनौला तेल कीमतें हानि दर्शाती बंद हुईं।

म्यूचुअल फंड

'नॉमिनी' का नाम देने की अंतिम तिथि 31 मार्च

ऐसा न करने पर खाते बंद कर दिए जाएंगे

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

म्यूचुअल फंड के मौजूदा निवेशकों के पास घोषणा फॉर्म जमा कर नामित (नॉमिनी) का नाम देने या इससे बाहर आने के लिए 31 मार्च तक का समय है। ऐसा नहीं करने पर उनके खाते बंद कर दिए जाएंगे और निवेशक अपने निवेश को नहीं निकाल सकेंगे।

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने 15 जून, 2022 को जारी अपने परिपत्र में म्यूचुअल फंड उपभोक्ताओं के लिए एक अगस्त, 2022 या उसके बाद नामित का विवरण भरना या इसके विकल्प से बाहर आने की घोषणा करना अनिवार्य कर दिया था। बाद में अंतिम तिथि एक अक्टूबर, 2022 कर दी गई। सभी मौजूदा म्यूचुअल फंड खातों (संयुक्त खातों सहित) के लिए अंतिम तिथि 31 मार्च, 2023 कर दी गई है, जिसके बाद खातों से निकासी को रोक दिया जाएगा। इस कदम के पीछे सेबी की मंशा समझाते हुए आनंद राठी वेल्थ लिमिटेड के मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) निरंजन बाबू रामायणम ने कहा कि पूर्व के कई निवेश खाते हो सकते हैं, जो बिना किसी को नामित किए खोले गए हों। यदि खाता धारक के साथ कुछ अप्रिय हो जाता है, तो नामित व्यक्ति को संपत्ति का हस्तांतरण किया जा सकता है।

अप्रैल में लू शुरू होने के बाद बिक्री बढ़ने की उम्मीद

बेमौसम बारिश से एयर कंडीशनर का बाजार 'ठंडा' पड़ा

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

बेमौसम बारिश से घरों में इस्तेमाल होने वाले एयर कंडीशनर (एसी) की बिक्री में गिरावट आई है। इस साल फरवरी मध्य में ही तापमान बढ़ने के बाद एसी की बिक्री में उछाल आना शुरू हो गया था। अब 15 मार्च के बाद एसी की बिक्री प्रभावित हुई है। हालांकि एसी विनिर्माता इसे अल्पकालिक ही मानते हैं और उन्हें उम्मीद है कि अप्रैल में लू शुरू होने के बाद एसी की बिक्री में आई गिरावट खत्म होगी और वह अपने बिक्री लक्ष्य को हासिल कर लेंगे। एसी उद्योग ने 2022 में 82.5 लाख इकाइयों की रिकॉर्ड बिक्री हुई थी और इस साल बहुत जल्दी तापमान बढ़ने और ऐसे ही पूर्वानुमान के बाद एसी उद्योग में वृद्धि दोहरे अंक में होने की उम्मीद होने लगी थी। पैनासोनिक लाइफ सॉल्यूशंस इंडिया ने कहा कि बेमौसम बारिश के कारण उसकी एसी बिक्री में मामूली गिरावट आई है। बेमौसम बारिश के प्रभाव के बारे में पूछने पर डाइकिन इंडिया के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक (सीएमडी) केजे जावा ने कहा, 'बाजार धारणा पांच-छह दिन के लिए बदल सकती है। यह अस्थाई है। इससे ज्यादा फर्क नहीं पड़ेगा। बाजार में बहुत ज्यादा मांग आने वाली है। बाजार में इस साल लगभग 20 प्रतिशत से ज्यादा वृद्धि होगी।' हायर अप्लायंसेज इंडिया के अध्यक्ष सतीश एन एस ने कहा कि तापमान में गिरावट ने उन्हें अपनी रणनीति तैयार करने के लिए पर्याप्त समय मिल गया है। उन्होंने कहा, 'उम्मीद है कि अगले कुछ सप्ताह में मौसम साफ हो जाएगा और एसी व

मई में गर्मी बढ़ने के संकेतः सिएमा

कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स एंड अप्लायंसेज मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (सिएमा) ने कहा कि दूसरे चरण में बिक्री में झटका लगा है लेकिन यह अस्थायी है। सिएमा के अध्यक्ष एरिक ब्रेगेंजा ने कहा, 'मई में बहुत तेज गर्मी होने वाली है। सभी रिपोर्ट यही संकेत दे रही हैं।'

अनुमान लगाना जल्दबाजी होगी :वोल्टास

वोल्टास ने कहा कि मार्च के तीसरे सप्ताह में देश के कुछ हिस्सों में बारिश हुई है। जून तक चलने वाली और देश के कई हिस्सों में जुलाई तक चलने वाली इन उत्पादों की बिक्री का अनुमान लगाने के लिए यह बहुत जल्दबाजी होगी। टाटा समूह की फर्म ने कहा कि इन उत्पादों को पहले से ही रखना होगा, जिससे अचानक लू चलने के बाद इसे तुरंत बाजार में खपाया जा सके।

मुंबई इंडियंस ने जीता पहला 'डब्लूपीएल' खिताब, दिल्ली को सात विकेट से हराया

एजेंसी ▶▶| मुंबई

मुंबई इंडियंस ने रविवार को दिल्ली कैपिटल्स को सात विकेट से हराकर पहला महिला प्रीमियर लीग खिताब जीत लिया। शिखा पांडे और राधा यादव के बीच दसवें विकेट के लिए 52 रन की साझेदारी की मदद से दिल्ली कैपिटल्स नौ विकेट पर 131 रन बनाए। जवाब में मुंबई ने तीन गेंद बाकी रहते तीन विकेट पर 134 रन बनाए। प्लेयर ऑफ द मैच स्किवेर ब्रंट ने एक छोर संभालकर 55 गेंद में 60 रन बनाए। कप्तान हरमनप्रीत कौर ने भी 39 गेंद में 37 रन की पारी खेली। आखिर में एमेलिया केर ने आठ गेंद में नाबाद 14 रन बनाकर टीम को जीत तक पहुंचाया।

मैथ्यूज, वोंग ने झटके 3-3 विकेट

मुंबई के गेंदबाजों ने कमाल का प्रदर्शन किया। दिल्ली का स्कोर 11वें ओवर में तीन विकेट पर 74 रन था। इसके बाद छह विकेट पांच रन के भीतर गिर गए और 16वें ओवर के बाद स्कोर नौ विकेट पर 79 रन हो गया। मुंबई के विदेशी गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन किया जिनमें से हीली मैथ्यूज ने चार ओवर में सिर्फ पांच रन देकर तीन विकेट लिए जबकि इसाबेल वोंग ने 42 रन देकर तीन और एमेलिया केर ने 18 रन देकर दो विकेट चटकाए।

हीली ने झटके कुल 16 विकेट

हीली मैथ्यूज, वोंग और केर ने आपस में आठ विकेट लेकर मुंबई को मजबूत स्थिति तक पहुंचाया। कैरेबियाई हरफनमौला मैथ्यूज ने टूर्नामेंट में 16 विकेट लेकर यूपी वारियर्स की सोफी एक्सेलेटोन की बराबरी कर ली। वोंग और केर ने टूर्नामेंट में 15-15 विकेट लिए।

मुंबई को मिले 6 करोड़

फाइनल मुकाबला जीतने वाली मुंबई इंडियंस को महिला प्रीमियर लीग का टाइटल जीतने पर 6 करोड़ रुपए की प्राइज मनी इनाम में मिली। दूसरे नंबर पर रही दिल्ली कैपिटल्स को 3 करोड़ और एलिमिनेटर हार कर तीसरे नंबर पर रहने वाली यूपी वॉरियर्ज को एक करोड़ रुपए मिले।

दिल्ली का प्रदर्शन

दिल्ली के लिए शिखा और राधा ने 52 रन की अटूट साझेदारी करके टीम को 100 रन के पार पहुंचाया। शिखा ने 17 गेंद में नाबाद 27 और राधा ने 12 गेंद में नाबाद 27 रन की पारी खेली। शिखा ने अपनी पारी में तीन चौके और एक छक्का लगाया जबकि राधा ने दो चौके और दो छक्के जड़े।

कप्तान हरमनप्रीत की कप्तानी में मुंबई ने रचा इतिहास

स्कोर बोर्ड

दिल्ली कैपिटल्स	रन	गेंद	4	6
मेग लानिंग रन आउट	35	29	5	0
शेफाली वर्मा का केर बो वोंग	11	04	1	1
एलिस कैप्सी का कौर बो वोंग	00	02	0	0
जेमिमा का मैथ्यूज बो वोंग	09	08	2	0
कैप का भाटिया बो केर	18	21	2	0
जोनासेन का और बो मैथ्यूज	02	11	0	0
अरुंधति का इशाक बो केर	00	05	0	0
शिखा पांडे नाबाद	27	17	3	1
मनी स्ट भाटिया बो मैथ्यूज	01	09	0	0
तानिया भाटिया बो मैथ्यूज	00	02	0	0
राधा यादव नाबाद	27	12	2	2

अतिरिक्त : 01, कुल : 20 ओवर में 131/9

गेंदबाजी : ब्रंट 4-0-37-0, वोंग 4-0-42-3, इशाक 4-0-28-0, केर 4-0-18-2, मैथ्यूज 4-2-5-3.

मुंबई इंडियंस	रन	गेंद	4	6
मैथ्यूज का रेड्डी बो जोनासेन	13	12	3	0
यस्तिका का कैप्सी बो यादव	04	03	1	0
नेट स्किवेर ब्रंट नाबाद	60	55	7	0
हरमनप्रीत कौर रन आउट	37	39	5	0
एमेलिया केर नाबाद	14	08	2	0

अतिरिक्त : 06, कुल : 19.3 ओवर में 134/3

गेंदबाजी : कैप 4-0-22-0, यादव 4-0-24-1, जोनासेन 4-0-28-1, पांडे 4-0-23-0, कैप्सी 3.3-0-34-0।

लवलीना ने कैटलिन पार्कर को 5-2 से दी मात

एक दिन पहले नीतू और स्वीटी ने जीते थे स्वर्ण पदक

जरीन ने 50 किग्रा वर्ग में ताम को 5-0 से हराया

गोल्डन संडे : निखत का वर्ल्ड बाक्सिंग में दूसरा स्वर्ण, लवलीना बनीं चैंपियन

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

शीर्ष भारतीय मुक्केबाज निखत जरीन ने रविवार को यहां दूसरा विश्व चैंपियनशिप खिताब जीता जबकि लवलीना बोरगोहेन ने कांस्य का सिलसिला तोड़ते हुए पहली बार पीला तमगा अपने नाम किया निखत ने 50 किग्रा वर्ग के फाइनल में वियतनाम की एनगुएन थि ताम पर 5-0 से जीत दर्ज कर लाइट फ्लाईवेट खिताब अपने नाम किया। वहीं दो बार की कांस्य पदक विजेता लवलीना ने आस्ट्रेलिया की कैटलिन पार्कर को 5-2 से मात दी। इस जीत से निखत महान मुक्केबाज एमसी मैरीकॉम (छह बार की विश्व चैंपियन) के बाद दो बार यह प्रतिष्ठित खिताब जीतने वाली दूसरी भारतीय बन गईं।

निखत ने पिछले साल 52 किग्रा वजन वर्ग में खिताब जीता था। उन्होंने कहा, 'मैं बहुत खुश हूं कि मैं दूसरी बार विश्व चैंपियन बनी, विशेषकर ओलंपिक वजन वर्ग में। आज का मुकाबला मेरे लिए कठिन था, वह एशियाई चैंपियन है और मेरा अगला लक्ष्य एशियाई खेल हैं और मैं उससे भिड़ सकती हूं इसलिए मैं कड़ी मेहनत करूंगी। मुकाबले में उसे और मुझे चेतावनी और 'काउंट' मिली। लेकिन मैं विजेता बनी।'

भारत ने जीता 14वां स्वर्ण

लवलीना के गोल्ड के बाद भारत के वर्ल्ड बॉक्सिंग चैंपियनशिप में कुल स्वर्ण पदक की संख्या 14 हो गई है। निखत, लवलीना से पहले नीतू और स्वीटी ने स्वर्ण जीते थे। छह बार की चैंपियन मैरीकॉम (2002, 2005, 2006, 2008, 2010 और 2018), सरिता देवी (2006), जेनी (2006), लेखा केसी (2006) और निखत जरीन (2022) ने यह कारनामा किया है।

लवलीना ने पहली बार जीता खिताब

टोक्यो ओलंपिक कांस्य पदक विजेता लवलीना ने 69 किलो वर्ग में पहली बार स्वर्ण पदक जीता। उनका यह भारवर्ग हालांकि ओलंपिक में नहीं है। पहले राउंड में उसे लंबे कद का काफी फायदा मिला हालांकि पार्कर ने भी सटीक वार किए। लवलीना ने हालांकि 3-2 की बढ़त ले ली। दूसरे राउंड में लवलीना ने अपनी रणनीति में बदलाव किया और करीब से आक्रमण किया। उसका हालांकि ज्यादा फायदा नहीं मिला और पार्कर ने बढ़त बना ली। आखिरी दौर में मुकाबला बराबरी का रहा और रिव्यू में लवलीना को विजयी घोषित किया गया।

पहला राउंड

जड़ा 'हुक' पंच

निखत अपने 52 किग्रा वजन वर्ग से कम वजन वर्ग में खेलीं, वह पहले थोड़ी सुस्त दिखी क्योंकि ताम ने पहले आक्रमण किया। लेकिन कुछ सेंकड बाद घरेलू प्रबल दावेदार ने हमले तेज कर दिए जिसके बाद उन्होंने दायीं ओर दो 'हुक' और फिर सीधे मुक्का जड़ा। ताम को जकड़ने के लिए एक पेनल्टी अंक दिया गया जिससे पहला राउंड निखत के पक्ष में हो गया।

दूसरा राउंड

3-2 से गंवाया

ताम ने दूसरे राउंड में मजबूत वापसी की और वह तेज मुक्के जड़ने लगी जिससे निखत नीचे सिर करके खेलने को मजबूर हो गई जिससे उन्हें एक पेनल्टी अंक मिला। वियतनाम की मुक्केबाज ने दूसरा राउंड 3-2 से अपने नाम किया।

तीसरा राउंड

'काउंट' अटैक

अंतिम तीन मिनट में दोनों मुक्केबाजों ने एक दूसरे पर हावी होने की कोशिश में आक्रमण किया। निखत के ताकतवर दाएं हाथ के मुक्के से ताम गिर गई जिससे ताम को 'काउंट' का सामना करना पड़ा और फिर ताम के मुक्के से भारतीय मुक्केबाज को 'काउंट' मिला।

सात्विक-चिराग की जोड़ी बनी स्विस ओपन चैंपियन

एजेंसी ▶▶| बासेल

चीनी जोड़ी शियांग कियांग को 54 मिनट में 21-19, 24-22 से रौंदा

भारत के सात्विक साइराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी ने चीन के रेन शियांग यू और तान कियांग को हराकर स्विस ओपन सुपर 300 बैडमिंटन पुरुष युगल खिताब जीत लिया। विश्व चैंपियनशिप 2022 कांस्य पदक विजेता दूसरी वरीयता प्राप्त भारत जोड़ी ने दुनिया की 21वें नंबर की जोड़ी को 54 मिनट में 21-19, 24-22 से हराया। भारत के लिए सत्र का यह पहला खिताब है।

पिछले सप्ताह ही सात्विक और चिराग की जोड़ी आल इंग्लैंड चैंपियनशिप के दूसरे दौर से बाहर हो गई थी। भारतीय जोड़ी के लिए यह पांचवां विश्व टूर खिताब है जिन्होंने पिछले साल इंडिया ओपन और फ्रेंच ओपन भी जीता था। इससे पहले 2019 में थाईलैंड ओपन और 2018 में हैदराबाद ओपन जीता था। सात्विक और चिराग ने 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीता था।

अब तक के भारतीय चैंपियन

भारत के लिए पी वी सिंधू (2022), साइना नेहवाल (2011 और 2012), किदाम्बी श्रीकांत (2015) और एच एस प्रणय (2016) स्विस ओपन खिताब जीत चुके हैं।

सामरा ने 50मी थ्री पोजिशंस में जीता कांस्य

एजेंसी ▶▶| भोपाल

निशानेबाज सिफ्ट कौर सामरा ने रविवार को यहां राइफल/पिस्टल विश्व कप में महिलाओं की 50 मीटर राइफल 3पी स्पर्धा का कांस्य पदक अपने नाम किया जो उनका सीनियर स्तर पर दूसरा अंतरराष्ट्रीय पदक है। चीन ने रविवार को भी अपना दबदबा बनाए रखा जिसमें झांग कियोंगयुवे ने इस स्पर्धा का स्वर्ण पदक जीता। मौजूदा राष्ट्रीय चैंपियन सामरा ने रैंकिंग दौर में कुल 403.9 अंक से तीसरा स्थान हासिल किया। झांग 414.7 अंक से पहले और चेक गणराज्य की अनेता ब्राबकोवा ने 411.3 अंक से दूसरे स्थान से खिताबी दौर में पहुंची। इसमें झांग ने चेक गणराज्य की प्रतिद्वंद्वी को 16-8 से पराजित किया। सामरा ने पिछले साल चीन के चांगवान में विश्व कप में कांस्य पदक जीता था।

वर्ल्ड यूथ वेटलिफ्टिंग : धनुष और ज्योश्ना ने जीते कांस्य

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

भारतीय भारोत्तोलक धनुष लोगानाथन और ज्योश्ना साबर ने अल्बानिया के डुरेस में चल रही आईडब्लूएफ विश्व युवा चैंपियनशिप के शुरुआती दिन अपने वजन वर्गों में कांस्य पदक जीते।

महिलाओं के 40 किग्रा वजन वर्ग में हिस्सा ले रहीं 14 वर्षीय ज्योश्ना ने शनिवार की रात कुल 115 किग्रा (स्नैच में 53 किग्रा और क्लीन एवं जर्क में 62 किग्रा) का वजन उठाकर तीसरा स्थान हासिल किया। ज्योश्ना ने स्नैच वर्ग में रजत पदक जीता लेकिन वह क्लीन एवं जर्क वर्ग में सात भारोत्तोलकों में छठे स्थान पर थीं। वहीं धनुष ने पुरुषों की 49 किग्रा स्पर्धा में कुल 200 किग्रा (88 किग्रा और 112 किग्रा) का वजन उठाया जिससे वह फिलीपींस के प्रिंस के. डेलोस सांतोस और इरोन बोरेस से पीछे तीसरे स्थान पर रहे। इस 16 वर्षीय भारोत्तोलक ने स्नैच वर्ग में रजत पदक जीता। युवा चैम्पियनशिप में 13 से 17 वर्ष के भारोत्तोलक हिस्सा ले सकते हैं।

तुम्हें देखकर अच्छा लगा छोटे भाई... पूर्व क्रिकेटरों ने पंत से की मुलाकात

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

सड़क दुर्घटना में घायल हुए भारत के स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत धीर-धीरे रिकवरी कर रहे हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर कई बार इसको लेकर जानकारी शेयर की थी। वहीं, अब उनसे भारतीय टीम के पूर्व खिलाड़ियों के मिलने का सिलसिला चल पड़ा है। रविवार को सुरेश रैना, हरभजन सिंह और श्रीसंत ने ऋषभ पंत से मुलाकात की।

पूर्व स्टार स्पिनर हरभजन सिंह ने ट्वीट कर लिखा, जीत की कहानी, भरोसा करें और जानें कि आपके अंदर कुछ ऐसा है जो किसी से भी बड़ा है, आप मुश्किलों का सामना करते हैं... आपको देखकर अच्छा लगा छोटे भाई। आपकी वापसी का इंतजार कर रहे हैं।

हॉकी मध्यप्रदेश दोनों ही वर्ग में बना पहला वेस्ट जोन चैंपियन

प्रथम हॉकी इंडिया वेस्ट जोन हॉकी चैंपियनशिप का शानदार समापन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| राजनांदगांव

हॉकी इंडिया द्वारा संचालित व हॉकी छत्तीसगढ़ की मेजबानी में आयोजित प्रथम हॉकी इंडिया वेस्ट जोन जूनियर हॉकी चैंपियनशीप के बालिका वर्ग में मध्यप्रदेश ने महाराष्ट्र को 6-1 से आसानी से पराजित करते हुए विजेता बना, वहीं महाराष्ट्र उपविजेता और राजस्थान तीसरे स्थान पर रहा।

मैच के प्रारंभ से ही स्पर्धा में अच्छे खेल का प्रदर्शन करने वाले मध्यप्रदेश की बालिकाओं ने आक्रमक हॉकी खेली और मैच के 9वें मिनट में ही गोल कर पहले क्वाटर में 1-0 की बढ़त बना ली। दूसरे क्वार्टर में इस बढ़त का फायदा उठाते हुए 3 और गोल कर मध्यांतर पूर्व 4-0 की बढ़त बना ली। उत्तरार्ध के खेल के 42वें मिनट में महाराष्ट्र की तनुश्री दिनेश ने गोल कर स्थिति 4-1 पर ला दी लेकिन चौथे क्वार्टर में मध्यप्रदेश ने 2 और गोल कर मैच 6-1 गोल से अपने पक्ष में करते हुए चैंपियनशिप जीत ली। हॉकी महाराष्ट्र उपविजेता रहा मध्यप्रदेश की ओर से मिताली शर्मा ने 2 खुशी काटारिया भुमिक्षा साहू, सोनिया कुमरे, और हुदा खान ने 1-1 गोल किया इस मैच मे मैन आफ द मैच का पुरस्कार प्रियंका यादव मध्यप्रदेश को दिया गया।

दीपक बने प्लेयर ऑफ द मैच

बालक वर्ग के संघर्षपूर्ण फाइनल मैच में हॉकी मध्यप्रदेश और हॉकी राजस्थान के मध्य खेला गया जो कि मैच प्रारंभ से ही काफी रोमांचक व संघर्षपूर्ण रहा। मैच के पहले क्वार्टर में दोनों ही टीम बराबरी पर रहीं, मैच के दूसरे क्वाटर में मध्यप्रदेश टीम की ओर से मंयक कर्मा ने मैदानी गोल कर 1 गोल की बढ़त बना ली थी किन्तु मध्यातंर पश्चात हॉकी राजस्थान को मैच के 36 वें मिनट में पैनाल्टी कार्नर मिला जिसे राहुल चौधरी ने गोल में बदलकर मैच की स्थिति 1-1 की बराबरी पर ला दी। अंतिम समय तक स्थिति यही रहा और मैच का निर्णय शूटआउट के द्वारा किया गया। जिसमें हॉकी मध्यप्रदेश से सौरभ तांडे, सौरभ महार, व विनय सैनिक ने गोल किया वही हॉकी राजस्थान की ओर से जितेन्द्र सिंह शेखावत, व कुलबीर सिंग ने गोल किए। इस प्रकार हॉकी मध्यप्रदेश ने 3-2 से प्रथम हॉकी इंडिया वेस्ट जोन का खिताब अपने नाम किया। आज के मैच के प्लेयर ऑफ द मैच दीपक सिंग को हॉकी मध्यप्रदेश को दिया गया।

अतिथियों ने किया सम्मानित

प्रतियोगिता के फाइनल मैच व पुरस्कार वितरण समारोह हेमा सुदेश देशमुख, महापौर के मुख्य अतिथ्यि, डॉ. रमन सिंह, पूर्व मुख्यमंत्री व विधायक राजनांदगांव की अध्यक्षता, किशन खण्डेलवाल, सदस्य खादी ग्रामोधोग बोर्ड, अंजुम अल्वी, कार्यपालन निर्देशन एबीस ग्रुप, ऋषि शास्त्री क्षेत्रिय पार्षद, हॉकी छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष व आयोजन समिति के सचिव फिरोज अंसारी, विजय वर्मा सह-सचिव हॉकी मध्यप्रदेश व हॉकी इंडिया के पर्यवेक्षक महेन्द्र सिंह नेगी की उपस्थिति में आयोजित हुआ। इस अवसर पर विजेता, उपविजेता व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीमों के प्रतिभागियों को स्वर्ण, रजत, व कांस्य पदक से सम्मानित किया गया।

टीम ने 14 में से 10 लीग मैच जीते, 20 अंक लेकर शीर्ष पर रही टीम

आईपीएल : प्रबल दावेदार के तौर पर उतरेगा गुजरात

एजेंसी ▶▶| मुंबई

हार्दिक पंड्या की अगुआई में पिछले साल अपने पदार्पण में इंडियन प्रीमियर लीग खिताब जीतने की उपलब्धि हासिल कर चुकी गुजरात टाइटन्स आगामी चरण में सभी सही कदम उठाने के प्रदर्शन को दोहराने के लक्ष्य से खेलने उतरेगी।

गुजरात टाइटन्स की टीम सिर्फ आईपीएल 2022 की ट्राफी उठाने वाली सर्वश्रेष्ठ टीम नहीं बनी बल्कि उसने सभी प्रतिस्पर्धी टीमों में अपनी योजना का बेहतरीन ढंग से कार्यान्वयन किया। टीम ने 14 में से 10 लीग मैच जीते, अंक तालिका में 20 अंक लेकर शीर्ष पर रही।

आईपीएल की खिताबी जीत के बाद पंड्या के कद में इजाफा हुआ जिन्हें भारतीय टीम का टी20 अंतरराष्ट्रीय में स्थायी कप्तान बना दिया और वनडे में जिम्मेदारी दी गई जबकि उनके युवा बल्लेबाज शुभमन गिल ने भी अपने प्रदर्शन से खुद को इतना स्थापित कर दिया कि तीन में से दो अंतरराष्ट्रीय प्रारूपों में उनका चयन निश्चित हो गया। पंड्या और गिल दोनों ने गुजरात टाइटन्स के लिए बल्ले से दमदार प्रदर्शन दिखाया जिसमें दोनों ने क्रमशः 487 और 483 रन बनाए और अपनी टीम के सर्वाधिक रन जुटाने वाले खिलाड़ी रहे। वहीं मोहम्मद शमी (20 विकेट) और राशिद खान (19 विकेट) गेंद से उनके मुख्य मारक गेंदबाज रहे। गुजरात टाइटन्स को अपने तेज गेंदबाज लोकी फर्ग्यूसन को जाने देना पड़ा लेकिन उनकी अनुपस्थिति से उनकी गेंदबाजी कमजोर नहीं होगी जिसमें आयरलैंड के तेज गेंदबाज जोश लिटिल, वेस्टइंडीज के अल्जारी जोसफ, शिवम मावी, यश दयाल और कुछ और गेंदबाज शामिल हैं।

गुजरात का कमजोर पक्ष

कागज पर देखें तो टीम ने पिछले सत्र के कमजोर पक्ष की भरपाई कर ली है। टीम की 'बेंच स्ट्रेंथ' इतनी मजबूत नहीं थी, मावी ने दावा किया था कि गुजरात टाइटन्स ने इसक समाधान ढूंढ लिया है। उदाहरण के तौर पर अगर पंड्या चौथे नंबर पर पारी को संभालने वाले खिलाड़ी थे तो अब उनके पास विलियमसन के रूप में एक और अच्छा विकल्प मौजूद है। टीम को भले ही फर्ग्यूसन के रूप में एक अदद तेज गेंदबाज और डेथ ओवर में उनकी पैनी गेंदबाजी की कमी खले, लेकिन यह बड़ी चिंता का विषय नहीं होना चाहिए क्योंकि उनके पास अब काफी विकल्प मौजूद हैं। साथ ही यहां पर योजना के अनुसार खेल दिखाना अहम होगा।

जापान सरकार चार सप्ताह पितृत्व अवकाश देने तैयार

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारत का मित्र राष्ट्र और दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति जापान में केवल 14 फीसदी पुरुषों ने ही 2021 में पितृत्व अवकाश लिया, जबकि सरकार का लक्ष्य तीन वर्षों में बढ़ाकर इसे 50 फीसदी तक ले जाने का है। प्रधान मंत्री फुमियो किशिदा ने पिछले हफ्ते ही मौजूदा स्थिति को उलटने का ऐलान करते हुए बाल पोषण और देखभाल नीति का ऐलान किया है, जिसके तहत पितृत्व अवकाश लेने वाले पुरुष श्रमिकों की संख्या को मौजूदा 14 प्रतिशत से बढ़ाकर 2025 तक 50 प्रतिशत और 2030 तक 85 प्रतिशत करना शामिल है। एक रिपोर्ट में जापान में प्रजनन दर गिर रहा है।

सुषमा की बेटी बांसुरी को भाजपा में मिला अहम पद

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भाजपा की दिग्गज नेता स्वर्गीय सुषमा स्वराज की बेटी बांसुरी स्वराज को भाजपा ने अहम जिम्मेदारी सौंपी है। उन्हें दिल्ली भाजपा के लीगल सेल का को-कन्वीनर यानी कानूनी प्रकोष्ठ का सह-संयोजक बनाया गया है। इस पद के मिलने के बाद बांसुरी सक्रिय राजनीति में एंट्री कर चुकी हैं। बांसुरी स्वराज सुप्रीम कोर्ट में वकालत करती हैं। दिल्ली भाजपा प्रमुख वीरेंद्र सचदेवा ने राज्य इकाई में अपनी पहली नियुक्ति में पार्टी के पूर्णकालिक प्रदेश अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभालने के बाद बांसुरी को कानूनी प्रकोष्ठ का सह-संयोजक नियुक्त किया। स्वराज की नियुक्ति तत्काल प्रभाव से लागू होगी।

प्रीतिंकर बने इलाहाबाद हाईकोर्ट के नए सीजे

प्रयागराज, (ब्यूरो)। इलाहाबाद हाईकोर्ट के नए चीफ जस्टिस के रूप में सीनियर जस्टिस प्रीतिंकर दिवाकर को रविवार को उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह चीफ जस्टिस की कोर्ट में संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रदेश सरकार की तरफ से मंत्री सुरेश खन्ना, चीफ सेक्रेटरी उत्तर प्रदेश, महाधिवक्ता अजय मिश्रा, अपर महाधिवक्ता एम सी चतुर्वेदी, नीरज त्रिपाठी, मनीष गोयल तथा न्यायिक अधिकारियों के अलावा बड़ी संख्या में वरिष्ठ व जूनियर वकील उपस्थित रहे। शपथ ग्रहण समारोह ठीक 11.00 बजे चीफ जस्टिस कोर्ट में हुआ।

अतीक का करीबी जर्रार पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार

फतेहपुर, (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में फतेहपुर जिले के खखरेरू क्षेत्र में पुलिस ने रविवार को माफिया डान अतीक अहमद के एक करीबी को एक संक्षिप्त मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार सिंह ने यहां बताया कि खखरेरू थाना क्षेत्र के हिस्ट्रीशीटर और अतीक अहमद का करीबी अतहर खां के दूसरे नम्बर के पुत्र मोहम्मद जर्रार की काफी दिन से पुलिस को तलाश थी। पुलिस ने इस पर 25 हजार का इनाम घोषित कर रखा था। आज खखरेरू पुलिस रहमतपुर के जंगल में कम्बिंग कर रही थी कि पुलिस को देख जर्रार ने फायरिंग की। जबाबी फायरिंग में जर्रार के पैर में गोली लगी और वह गिर पड़ा। मय इंग्लिस रायफल के गिरफ्तार किया।

यूएस में भारतीय राजदूत व दूतावास कर्मियों को धमकी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। पंजाब में खालिस्तान समर्थक अमृतपाल सिंह पर बढ़ती दबिश से बौखलाए खालिस्तान समर्थकों ने अब अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डीसी में भारतीय दूतावास के बाहर न सिर्फ विरोध-प्रदर्शन किया है बल्कि अमेरिका में भारत के राजदूत तरणजीत सिंह सिंधू और भारतीय दूतावास के कर्मियों की धमकी भी दी है। भारतीय दूतावास के बाहर जमा हुए खालिस्तान समर्थकों ने इस दौरान खालिस्तान के समर्थन में नारे भी लगाए। खालिस्तान समर्थकों ने आरोप लगाया कि लोकतंत्र की दुहाई देने वाले देश में सिखों के साथ दुर्व्यवहार हो रहा है। बौखलाए खालिस्तान समर्थकों ने वाशिंगटन में भारतीय पत्रकार ललित के झा पर हमला बोला था।

आज का इतिहास

- **1668:** इंग्लैंड के शासक चार्ल्स द्वितीय ने बांबे को ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंपा।
- **1884:** बोस्टन से न्यूयार्क के बीच पहली बार फोन पर लंबी दूरी की बातचीत हुई।
- **1901:** अमेरिका ने फिलीपीन्स के विद्रोही नेता एमिलियो एग्विनाल्डो को अपने कब्जे में लिया।
- **1923:** भारत की दिग्गज मसाला कम्पनी एमडीएच के मालिक धर्मपाल गुलाटी का जन्म।
- **1961:** आज के दिन से पहला विश्व रंगमंच दिवस मनाने की शुरुआत हुई।
- **2000:** रूस में 52.52 प्रतिशत मत प्राप्त कर रूस के कार्यवाहक राष्ट्रपति ब्लादीमीर ब्लादीमिरोविच पुतिन ने राष्ट्रपति चुनाव जीता।
- **2000:** 2006-यासीन मलिक ने कश्मीर में जनमत संग्रह कराए जाने की मांग की।

बेलारूस में परमाणु हथियार तैनात करेगा रूस, भेजे मिसाइल सिस्टम

नई दिल्ली, (एजेंसी)। यूक्रेन और रूस के बीच जारी सालभर पुरानी लड़ाई में परमाणु हमले की आशंका गहरा गई है। रूस ने अपने पड़ोसी और मित्र राष्ट्र बेलारूस में परमाणु हथियार तैनात करने की डील की है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने शनिवार को कहा है कि उन्होंने पड़ोसी देश बेलारूस के साथ एक समझौता किया है, जिसके तहत उनका देश यूक्रेन के उत्तर में स्थित बेलारूस में परमाणु हथियार तैनात करेगा। इसके साथ ही पुतिन ने कहा है कि बेलारूस में परमाणु हथियारों की तैनाती परमाणु निरस्त्रीकरण समझौतों का उल्लंघन नहीं होगा क्योंकि यूरोप में कई जगहों पर अमेरिका ने पहले से ही परमाणु हथियार तैनात कर रखे हैं।

पुतिन ने कहा कि परमाणु हथियारों का कंट्रोल रूस बेलारूस के हाथों में नहीं देगा। उन्होंने कहा कि हम इस बात पर सहमत हुए हैं कि हम भी वैसा ही करेंगे। मैं जोर देता हूं कि दायित्वों का उल्लंघन किए बिना परमाणु हथियारों के अप्रसार पर हम अंतरराष्ट्रीय दायित्वों का निर्वहन करेंगे। रूसी सरकारी टेलीविजन पर राष्ट्रपति पुतिन ने कहा कि नाटो के देश पोलैंड से सटे बेलारूस के राष्ट्रपति एलेक्जेंडर लूकाशेन्को लंबे वक्त से कहते रहे हैं कि रूस को भी बेलारूस में परमाणु हथियारों की तैनाती करनी चाहिए। पुतिन ने कहा कि आगामी एक जुलाई तक बेलारूस में परमाणु हथियारों के भंडारण के लिए निर्माण कार्य पूरा कर लेगा। उन्होंने यह भी कहा कि अगर कीव को पश्चिमी देशों से ऐसे हथियार मिलते हैं।

चेनाब पुल वंदे भारत के लिए हो रहा है तैयार : वैष्णव

नई दिल्ली, (एजेंसी)। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कटरा श्रीनगर रेल लाइन पर बन रहे दुनिया के सबसे ऊंचे चेनाब पुल का श्रीफल तोड़कर रविवार को उद्घाटन किया और पुल के ऊपर से जा रही रेल पटरी का ट्रॉली के जरिए जायजा लिया। श्री वैष्णव ने इसके बाद मीडिया से कहा की इस मार्ग पर वंदे भारत ट्रेन चलाई जाएगी और पुल पर 100 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से ट्रेन चल सकेगी।

कर्नाटक : चुनाव के दौर में अल्पसंख्यक आरक्षण पर भाजपा और कांग्रेस आमने-सामने

आरक्षण संविधान के खिलाफ: शाह

सत्ता में कांग्रेस आते ही लागू: डीके

कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कई हाईप्रोफाइल नेता जुटे

नई दिल्ली, (एजेंसी)। 2023 के लिए धुआंधार चुनाव प्रचार हो रहा है। दरअसल, कर्नाटक विधानसभा चुनाव में अब कुछ हफ्तों का समय बाकी है। ऐसे में सियासी जनाधार मजबूत करने की हरसंभव कवायद करने में भाजपा और कांग्रेस के हाईप्रोफाइल नेता जुटे हैं। भाजपा के चाणक्य कहे जाने वाले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को एक चुनावी रैली को संबोधित किया।

शाह ने अल्पसंख्यकों को मिले आरक्षण को संविधान के खिलाफ करार दिया। चुनावी जनसभा से पहले शाह ने गगनचुंबी तिरंगा भी फहराया। गृह मंत्री ने रिजर्वेशन के मुद्दे पर कहा कि अल्पसंख्यकों को दिया गया आरक्षण संविधान के अनुसार नहीं था। धर्म के आधार पर आरक्षण देने का संविधान में कोई प्रावधान नहीं है। कांग्रेस सरकार ने अपनी ध्रुवीकरण की राजनीति के चलते अल्पसंख्यकों को आरक्षण दिया। भाजपा ने उस आरक्षण को खत्म कर दिया और वोक्कालिगा और लिंगायत समुदायों को आरक्षण प्रदान किया।

आरक्षण भारत में सामाजिक और कानूनी के अलावा सियासी मुद्दा भी है। ऐसे में कर्नाटक कांग्रेस प्रमुख डीके शिवकुमार ने भी शाह के बयान पर पलटवार किया। बता दें कि डीके कर्नाटक में पूर्व डिप्टी सीएम भी रह चुके हैं। उन्होंने कहा कि कर्नाटक में आरक्षण एक मजाक बनकर रह गया है। यह असंवैधानिक है। वे (भाजपा) सोचते हैं कि आरक्षण को संपत्ति की तरह बांटा जा सकता है। बकौल डीके शिवकुमार रिजर्वेशन संपत्ति नहीं, अधिकार है। इस मिट्टी के

अल्पसंख्यकों के अपने अधिकार हैं। हम नहीं चाहते कि उनके चार प्रतिशत आरक्षण को खत्म कर दिया जाए और किसी भी प्रमुख समुदाय को दे दिया जाए। शिवकुमार ने कहा कि वोक्कालिगा, लिंगायत प्रमुख समुदाय है। इन्हें अन्नदाता कहा जाता है। वे जमीन की जुताई करते हैं और भोजन देते हैं। वे जमींदार हैं। यह सभी समुदायों का देश है।

हमारा देश हमारी संस्कृति से बहुत समृद्ध है। ये सभी हमारी समान रूप से मदद कर रहे हैं। पूर्व डिप्टी सीएम ने कहा कि अल्पसंख्यकों को अपना चार प्रतिशत आरक्षण मिल गया है और वोक्कालिगा और लिंगायत को 2 फीसद आरक्षण बांट दिया गया है। वोक्कालिगा और वीरशैव लिंगायत इस प्रस्ताव को ठुकरा रहे हैं। मुझे विश्वास है कि कांग्रेस अगले 45 दिनों के बाद सत्ता में आएगी। हम इन सभी आरक्षणों को समाप्त कर देंगे। चुनावी रैली को संबोधित करने से पहले शाह ने कर्नाटक में गगनचुंबी तिरंगा भी फहराया।

कन्नड़ को अधिक महत्व दिया: बोम्मई

बोम्मई ने कहा था कि सरकार ने कन्नड़ को अधिकतम महत्व दिया है और राज्य की भाषा के संबंध में कोई समझौता नहीं किया गया है। शुक्रवार को कर्नाटक रक्षण वेदिके (केआरवी) के रजत जयंती समारोह में मुख्यमंत्री बोम्मई ने कहा कि जब पड़ोसी महाराष्ट्र ने सीमा पर परेशानी पैदा की तो सरकार ने अपना साहसिक रुख दिखाया। बकौल बोम्मई, कर्नाटक में संगोली रायन्ना की मूर्ति तैयार है। बसवन्ना की मूर्तियां और केम्पे गौड़ा तैयार हो रहे हैं। इन मूर्तियों को विधान सौधा के सामने स्थापित किया जाएगा। दोनों व्यक्तित्व कन्नडिगाओं (कर्नाटक की जनता) की संस्कृति, साहित्य, विरासत और प्रशासन का प्रतिबिंब हैं। उन्होंने कहा कि एक रोजगार नीति तैयार की गई है। इसके तहत ग्रुप ए, बी, सी और डी समूह की नौकरी में कन्नडिगों के लिए 80 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान है।

इमरान ने पाक रैली में फिर किया हिंदुस्तान का गुणगान

इस्लामाबाद, (एजेंसी)। पड़ोसी देश पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के अध्यक्ष इमरान खान ने शनिवार-रविवार की दरम्यानी रात लाहौर के मीनार-ए-पाकिस्तान में एक सार्वजनिक रैली में फिर से भारत का गुणगान किया है। पाकिस्तान की आर्थिक बदहाली के लिए मौजूदा सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए इमरान ने कहा कि भारत में महंगाई दर जहां छह फीसदी के आसपास है, वहीं पाकिस्तान में पांच गुना ज्यादा यानी 30 फीसदी से ऊपर है।

पूर्व प्रधानमंत्री ने कहा कि पाकिस्तान बर्बादी की कगार पर खड़ा है। यहां की अवाम दाने-दाने को मेहताज हैं। रोटी के लिए लोग मर रहे हैं। इसके साथ ही उन्होंने देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने पर जोर दिया। रैली में उन्होंने पाकिस्तान की आर्थिक समृद्धि के लिए अपनी पार्टी का रोडमैप भी पेश किया।

आतंकी जाकिर नाइक पर कस रहा शिकंजा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि भारत सरकार भगोड़े विवादित इस्लामिक प्रचारक जाकिर नाइक को भारत लाने का हर संभव प्रयास करेगी। हाल ही में बागची ने कहा कि भारत में जाकिर नाइक के खिलाफ कई मामलों में केस दर्ज हैं। कानून की नजरों में वह भारत का भगोड़ा है। हम इस संबंध में ओमान सरकार के संपर्क में हैं। नाइक के प्रत्यर्पण के सवाल पर बागची ने कहा कि जहां तक प्रत्यर्पण का संबंध है, जिन देशों के साथ हमारी प्रत्यर्पण संधि है, उनकी लिस्ट पहले से ही पब्लिक डोमेन में है।

तालिबान से तुलना कर आरएसएस की छवि खराब हुई, जावेद अख्तर की याचिका पर बोला मुंबई कोर्ट

मुंबई,(एजेंसी)। देश के मशहूर गीतकार जावेद अख्तर को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तुलना तालिबान से किए जाने के मामले में मुंबई कोर्ट ने जावेद अख्तर की याचिका को खारिज करते हुए कहा कि मजिस्ट्रेट कोर्ट ने सही तथ्यों पर आदेश जारी किया है, जिसमें देखा गया है कि कैसे आरएसएस की तुलना तालिबान से करने से शिकायकर्ता की उसके दोस्तों और लोगों के छवि खराब हुई है, क्योंकि वह आरएसएस की विचारधारा का पालन करता है। मुलुंड मजिस्ट्रेट कोर्ट ने जावेद अख्तर को मानहानि के आरोपों का सामने करने के लिए तलब किया था, जिसके इस आदेश को जावेद अख्तर ने सेशन कोर्ट में चैलेंज किया था।

यूपीएससी भर्ती प्रक्रिया की अवधि होगी कम

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कार्मिक एवं प्रशिक्षण मामलों की स्थायी संसदीय समिति ने जोर देकर कहा है कि सिविल सेवा भर्ती की 15 महीने लंबी प्रक्रिया से उम्मीदवारों के महत्वपूर्ण साल जाया हो जाते हैं और इसके साथ ही उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

संसदीय समिति ने अधिसूचना की जारी

समिति ने संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) को सिविल सेवा भर्ती प्रक्रिया की अवधि को कम करने के लिए कहा है। संसदीय समिति ने अपनी नवीनतम रिपोर्ट में यूपीएससी से यह भी कहा है कि वे उन कारणों का पता लगाए जिनकी वजह से सिविल सेवा की परीक्षा देने वाले अभ्यार्थियों की संख्या कम हो रही है। उल्लेखनीय है कि यूपीएससी हर साल भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय विदेश सेवा और भारतीय पुलिस सेवा के लिए प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार सहित तीन चरणों में परीक्षा आयोजित करती है।

संसदीय समिति ने कहा कि यूपीएससी सिविल सेवा की परीक्षा के लिए अधिसूचना जारी करने से लेकर अंतिम नतीजे जारी करने के लिए औसतन 15 महीने का समय लेती है। रिपोर्ट में कहा गया कि समिति की राय है कि किसी भी भर्ती परीक्षा के लिए आमतौर पर छह महीने से अधिक समय नहीं लगना चाहिए क्योंकि भर्ती प्रक्रिया लंबी होने से उम्मीदवारों के जीवन के अहम साल बर्बाद हो जाते हैं।

नारी शक्ति ही भारत की प्राण वायु: मोदी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि महिलाएं और बेटियां भारत के सपनों को पूरा कर रहे हैं और नारी शक्ति ही भारत की प्राण वायु है।

श्री मोदी ने आकाशवाणी पर अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात के 99 वें संस्करण में राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा कि महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में अपना परचम लहरा रहीं हैं और अपना अलग स्थान बना रही हैं। ऐसी सभी महिलाएं, बेटियां भारत और भारत के सपनों को ऊर्जा दे रही हैं। नारीशक्ति की ये ऊर्जा ही विकसित भारत की प्राणवायु है। उन्होंने कहा कि यह नवरात्र का समय है, शक्ति की उपासना का समय है। आज, भारत का जो सामर्थ्य नए सिरे से निखरकर सामने आ रहा है।

अमृतसर की महज 39 दिन की अबाबत बनी सबसे छोटी ऊम्र की ऑर्गन डोनर

अमृतसर, (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी ने अपने मन की बात की 99वीं कड़ी में संबोधन करते हुए कहा कि देश में अंगदान के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ रही है। इसी संदर्भ में उन्होंने अमृतसर की सबसे छोटी ऊम्र 39 दिन की अंगदान कर्ता गुड़िया अबाबत कौर की बात करते हुए कहा अबाबत कौर के अंग दान कर उसके माता-पिता ने बड़ा परमार्थ किया है। अमृतसर के सुखबीर सिंह संधू और सुप्रीत कौर के घर एक बहुत सुंदर गुड़िया अबाबत कौर ने जन्म लिया था लेकिन अबाबत जब सिर्फ 39 दिन की थी, तभी वह दुनिया छोड़कर चली गई।

राहुल ने ट्विटर पर लिखा डिसक्वालिफाइड सांसद, प्रियंका बोलीं-पीएम कायर

भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने कसा तंज- रस्सी जल गई, बल नहीं गया

नई दिल्ली,(एजेंसी)। राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता रद्द करने के खिलाफ कांग्रेस रविवार को देशभर में संकल्प सत्याग्रह किया। प्रियंका गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, अधीर रंजन जैसे बड़े नेता राजघाट पर एकत्रित हुए। पुलिस ने यहां धारा 144 लगा दी, लेकिन नेता और कार्यकर्ता इसके बावजूद पहुंचे। उधर, राहुल गांधी ने रविवार को ट्विटर पर अपना बायो बदल दिया। उन्होंने अब खुद को डिसक्वालिफाइड सांसद लिखा है। प्रियंका गांधी ने कहा कि आज तक हम चुप रहे हैं तो आप हमारे परिवार का अपमान करते गए। मैं पूछना चाहती हूं कि एक आदमी का कितना अपमान करोगे। मुझ पर केस लगा दो, लेकिन सच ये है कि इस देश का प्रधानमंत्री कायर है। मामले में भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा बोले रस्सी जल गई है, लेकिन बल नहीं गया। भाजपा के पास कर्नाटक में मानहानि का मुकदमा दायर करने की शक्ति नहीं थी। कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद ने कहा कि इसे उलटने के लिए अपील ही सही रास्ता है।

राहुल की सदस्यता समाप्त करने पर कांग्रेस का बवाल

शहीद के बेटे को मीर जाफर कहा तब तो कोई केस नहीं हुआ

नई दिल्ली, (एजेंसी)। रविवार को कांग्रेस ने भाजपा पर हमला किया। प्रियंका गांधी ने कहा कि आप मेरे भाई, एक शहीद के बेटे को देशद्रोही और मीर जाफर कहते हैं। उसकी मां का अपमान करते हैं। सीएम कहते हैं कि राहुल गांधी को नहीं पता कि उनकी मां कौन है। आप हर दिन मेरे परिवार का अपमान करते हैं लेकिन कोई केस दर्ज नहीं किया जाता है। उन्होंने आगे कहा कि आपके प्रधानमंत्री लोगों से भरी संसद में कहते हैं कि ये परिवार नेहरू सरनेम का उपयोग क्यों नहीं करता है। वो कश्मीरी पंडितों के पूरे परिवार का अपमान करते हैं और एक पिता की मृत्यु के बाद बेटा परिवार के नाम को आगे बढ़ाने की प्रथा निभाता है तो उसका भी अपमान करते हैं। कांग्रेस ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने गांधी परिवार पर हमले किए और उनके कश्मीरी पंडित वंश का अपमान किया है। वहीं, प्रियंका गांधी ने राहुल गांधी को शहीद का बेटा कहते हुए भाजपा पर हर दिन उनका अपमान करने का आरोप लगाया है।

फट जाएगा टैंकर, भरा है 10 लाख बैरल तेल

नई दिल्ली, (एजेंसी)। समंदर में एक बड़ी तबाही के खतरे के अंदेशों के लेकर संयुक्त राष्ट्र ने भी आगाह कर दिया है। यह तबाही तेल से भरे टैंकर के फटने से आ सकती है। यमन के एक टैंकर को करीब आठ साल पहले समुद्र में छोड़ दिया गया था। इस टैंकर में 10 लाख बैरल से ज्यादा मात्रा में तेल भरा हुआ है। यह टैंकर अब किसी भी समय डूबने या फटने वाला है। इससे बड़े पैमाने पर मानवीय और पर्यावरणीय तबाही आ सकती है। यह खौफनाक चेतावनी संयुक्त राष्ट्र के एक सुरक्षा अधिकारी ने दी है। इस अधिकारी का कहना है कि एफएसओ सेफर टैंक को 2015 में व्यावहारिक रूप से छोड़ दिया गया था, क्योंकि देश में गृहयुद्ध शुरू हो गया था। इतने साल बाद अब यह जहाज टूट रहा है। संयुक्त राष्ट्र में यमन के अधिकारी डेविड ग्रेसली ने कहा कि हम नहीं चाहते कि लाल सागर काला सागर में बदल जाए यह एक पुराना जहाज है, 1976 का एक सुपर टैंकर। यह न सिर्फ पुराना है बल्कि छोड़ा हुआ भी है।

सलमान धमकी मामले में मुंबई पुलिस ने एक युवक को राजस्थान से दबोचा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। फिल्म अभिनेता सलमान खान को धमकी देने के मामले में मुंबई पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। आरोपी धाकड़ राम विश्नोई को पुलिस ने जोधपुर से गिरफ्तार किया है। मुंबई पुलिस और लूणी थाना पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई की। आरोपी ने ई-मेल के जरिए सलमान खान को जान से मारने की धमकी दी थी।

जान से मारने की धमकी का मामला-मुंबई के बांद्रा थाने में दर्ज हुआ था। गिरफ्तारी के बाद पुलिस रोहिचा कला निवासी 21 वर्षीय धाकड़ राम विश्नोई को मुंबई ले गई है। धाकड़ राम विश्नोई पर पंजाबी सिंगर सिद्धू मुसेवाला के पिता को भी धमकी देने का आरोप है। सलमान खान को मिल रही धमकियों के बाद पुलिस ने सुरक्षा को और मजबूत किया था।गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई ने सुपरस्टार से माफी मांगने को कहा था। माफी नहीं मांगने पर अंजाम भुगतने की चेतावनी दी गई थी।

बिश्नोई का नाम लिया तो मार देंगे

चंडीगढ़, (एजेंसी)। सिद्धू मूसेवाला के पिता बलकौर सिंह ने रविवार को आरोप लगाया कि उन्हें ईमेल के जरिए एक बार फिर जान से मारने की धमकी मिली है। दिवंगत पंजाबी रैपर के पिता ने आरोप लगाया कि मुझे राजस्थान से ईमेल पर धमकी मिली है कि मुझे जल्द मारा जाएगा। मुझे लॉरेंस बिश्नोई का नाम लेने से परहेज करने करने के लिए कहा गया है। इससे पहले भी उन्होंने आरोप लगाया था कि 25 अप्रैल से पहले उन्हें मार देने की धमकी मिली है। उन्होंने कहा कि मैं क्या गलत कर रहा हूं? क्या मुझे अपने बेटे का केस नहीं लड़ना चाहिए? मुझे 18, 24 और 27 फरवरी को धमकी दी गई थी कि मुझे 25 अप्रैल से पहले मार दिया जाएगा। मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि मेरी सुरक्षा वापस ले ली जाए। मैं लड़ना जारी रखूंगा। पुलिस के मुताबिक मूसेवाला के पिता को धमकाने के आरोप में अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। 7 मार्च को उन्होंने पंजाब विधानसभा के बाहर विरोध प्रदर्शन किया।

ध्रुव मार्क3 हेलीकॉप्टर की आपात लैंडिंग, टला हादसा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। केरल में कोच्चि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा लिमिटेड (सीआईएएल) स्थित एन्क्लेव से उड़ान भरने के ठीक बाद रविवार को तटरक्षक बल का एक हेलीकॉप्टर ध्रुव मार्क-3 दुर्घटनाग्रस्त हो गया, लेकिन पायलट की सूझबूझ की वजह से उसमें सवार तीन लोगों की जान बच गई।

भारतीय तटरक्षक बल (आईसीजी) की ओर से जानकारी दी गई है कि कोच्चि से परिचालित एएलएच एमके-3 हेलीकॉप्टर सीजी 855 ने सीआईएएल एन्क्लेव से दोपहर 12 बजकर 25 मिनट पर उड़ान भरी थी। हेलीकॉप्टर की मरम्मत की गई थी, जिसे परखने लिए उड़ान भरी गई थी।

नेपाल एयरलाइंस और एअर इंडिया विमान टक्कर से बचे

नई दिल्ली,(एजेंसी)। नेपाल में बीच हवा में एअर इंडिया और नेपाल एयरलाइंस के विमान टकराने के करीब आ गए। समय रहते चेतावनी प्रणाली के पायलटों को सतर्क करने से विमान हादसा होने से टल गया। दरअसल, मामला शुक्रवार का है, जब मलेशिया से आ रहा नेपाल एयरलाइंस का विमान और दिल्ली से आ रहे एअर इंडिया का विमान टकराने की स्थिति में आ गए।

27वें फेडरेशन कप कैरम टूर्नामेंट का रंगारंग उद्घाटन जीवनदीप शिक्षण संस्थान में कैरम का महाकुंभ शुरु

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। ऑल इंडिया कैरम फेडरेशन के तत्वावधान में आयोजित 27 वें फेडरेशन कप कैरम टूनार्मेंट का जीवनदीप शिक्षण संस्थान बड़ा लालपुर चांदमारी में रंगारंग उद्घाटन समारोह हुआ संपन्न` उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि अंतर्राष्ट्रीय कैरम महासंघ के अध्यक्ष जोसफ मेयर रहे जिन्होंने दीप प्रज्वलन एवं विशिष्ट अतिथियों के साथ कैरम बोर्ड पर स्ट्राइक करके टूनार्मेंट का शुभारंभ किया` समारोह के विशिष्ट अतिथि पंजाब नेशनल बैंक के जोनल मैनेजर ए0के0 सिंह और डिप्टी जनरल मैनेजर आनंद कुमार राय रहे` इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय कैरम महासंघ के सेक्रेटरी जनरल श्री बी0डी0 नारायण और राष्ट्रीय महासंघ की महासचिव भारती नारायण ऑल इंडिया कैरम फेडरेशन के एसोसिएट वाइस प्रेसिडेंट डॉक्टर अशोक कुमार सिंह उत्तर प्रदेश सिंचाई आयोग के पूर्व अध्यक्ष विजय शंकर पांडे तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति कई राज्यों के सचिव और तमाम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी इस रंगारंग समारोह के साक्षी रहे कार्यक्रम का संचालन उत्तर प्रदेश कैरम एसोसिएशन के अध्यक्ष और आल ईन्डिया कैरम फेडरेशन के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट बैजनाथ सिंह ने किया` समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि जोसेफ मेयर ने कहा की कैरम एक ऐसा खेल है जिसमें कलात्मकता भी है और ज्योमैट्रिकल एक्सरसाइज भी है आज दुनिया भर के लगभग 32 देशों में यह खेल अपनी पैठ बना चुका है अभी दो माह पूर्व ही इस कलात्मक खेल का वर्ल्ड कप टूनार्मेंट क मलेशिया में हुआ था जिसमें भारतीय टीम का झंडा सबसे ऊपर बुलंद हुआ था` इस मौके पर अंतर्राष्ट्रीय कैरम महासंघ के सेक्रेटरी जनरल बी0डी0नारायण ने कहा की कैरम खेल नित्य नई ऊंचाइयां छू रहा है हमें उम्मीद है कि कैरम खेल दुनिया में सर्वाधिक लोकप्रिय खेलों में अपनी पैठ बनाने में सफल होगा` ऑल इंडिया कैरम फेडरेशन की महासचिव भारती नारायण ने कहा कि भारत का कैरम इतना आगे बढ़ चुका है कि भारत के खिलाड़ी पिछले कई वर्षों से दुनिया में सबसे ज्यादा मेडल जीतने वाले खिलाड़ी बन गए हैं हमें इस बात का गर्व है कि देश के लगभग डेढ़ दर्जन सरकारी और अर्ध सरकारी प्रतिष्ठानों में कैरम खेल केन 500 से अधिक महिला पुरुष खिलाड़ी या तो सर्विस कर रहे हैं या स्कॉलरशिपपा रहे हैं इस अवसर पर संबोधित करते हुए जीवनदीप इंस्टीट्यूट के चेयरमैन औरटूनार्मेंट कमेटी के अध्यक्ष तथा ऑल इंडिया कैरम फेडरेशन के एसोसिएट वाइस प्रेसिडेंट अशोक सिंह ने कहा कि देश के सभी राज्यों से आए हुए खिलाड़ियों का जीवनदीप परिसर में बहुत-बहुत स्वागत और अभिनंदन है हमारा मानना है कि मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में खेलों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है खास करके के कैरम जैसा खेल जो कम संसाधनों में भी घर के अंदर खेला जा सकता है` समारोह को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि पंजाब नेशनल बैंक के जोनल मैनेजर ए के सिंह ने कहा कि खेलों से ही व्यक्तित्व का विकास होता है और कैरम जैसा इंदौर खेल हर व्यक्ति के विकास में जहां सहायक है वही दिव्यांगों के लिए भी बहुत ही उपयोगी है` समारोह का संचालन करते हुए उत्तर प्रदेश कैरम एसोसिएशन के अध्यक्ष बैजनाथ सिंह ने कहा कि इस आयोजन में सहयोग के लिए जीवनदीप शिक्षण संस्थान उसके निदेशक उसके चेयरमैन डॉ अशोक सिंह ,डॉक्टर अंशु सिंह के प्रति उत्तर प्रदेश कैरम एसोसिएशन वाराणसी कैरम एसोसिएशन हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता है` इसके अतिरिक्त आयोजन समिति के प्रमुख सदस्य रमेश वर्मा रणवीर सिंह, महेश सेखरी एनके जायसवाल, काशीराम राणा असली चक्रवात, संदीप यादव, रवि आर्या, अभिषेक विश्वकर्मा श्री प्रसाद शोएब अहमद रेणुका राय इत्यादि लो उपस्थित रहे।

विन्ध्याचल के दीवान घाट पर विन्ध्य गंगोत्सव कार्यक्रम के तहत किया गया भव्य आयोजन

प्रखर मिजार्पुर। विन्ध्याचल में चल रहे चैत्र नवरात्रि मेला-2023 के पाचवें दिन मां विन्ध्यवासिनी का दर्शन पूजन करने साथ ही भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने मां गंगा की वृहद आरती में भी भाग लिया। जिलाधिकाारी दिव्या मित्तल के विशेष प्रयास से आयोजत विंध्य महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत 26 मार्च 2023 की सांय गंगा घाट पर गंगा आरती, नौका दीपोत्सव व गगन दीपोत्सव (आतिशबाजी) का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मा0 विधायक नगर रत्नाकर मिश्र, मा0 विधायक मड़िहान रमाशंकर सिंह पटेल, सदस्य विधान परिषद श्याम नरायण सिंह उर्फ विनीत सिंह, अध्यक्ष जिला पंचायत राजू कनौजिया, राज्यसभा सासंद अरूण सिंह के प्रतिनिधि धनंजय पाण्डेय, जनपद

न्यायाधीश अनमोल पाल, मण्डलायुक्त डॉ मुथुकुमार स्वामी बी0, जिलाधिकारी दिव्या मित्तल, पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्र, मुख्य विकास अधिकारी श्रीलक्ष्मी वीएस, जिला अध्यक्ष भाजपा बृज भूषण सिह, अपना दल एस इंजीनियर राम लौटन बिन्द, अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 शिव प्रताप शुक्ल, नमामि गंगे अमरेन्द्र कुमार वर्मा, भू0/रा0 सत्य प्रकाश सिंह अपर पुलिस अधीक्षक श्रीकान्त प्रजापति व जनप्रतिनिधिगण सहित भारी संख्या में दर्शनार्थीगण उपस्थित रहे। गंगा आरती एवं गगन दीपोत्सव कार्यक्रम को देखने के लिये विन्ध्याचल स्थित दीवान घाट पर श्रद्धालुओं भारी भीड़ उमड़ी। गंगा की बीच धारा से आसमान को छूती आतिशबाजी का नजारा देख लोग भाव विभोर हो उठे। दिव्य और भव्य सजावट और आतिशबाजी के बीच गंगा आरती लोगो के लिये एक सुखद छड़ होने के साथ-साथ अविस्मरणीय पल भी रहा। इस दौरान जिलाधिकारी दिव्या मित्तल ने गंगा आरती एवं गगन दीपोत्सव कार्यक्रम को अद्भुत और अलौकिक बताते हुये कहा कि मां गंगा आरती से जीवन में एक अद्भुत आर्दश शक्ति का प्रवेश होता है अपितु गंगा आरती, दीपोत्सव के माध्यम से जीवन में प्रकाश का समावेश होता हैं।

परीक्षा नियंत्रक ने किया मूल्यांकन केंद्र का औचक निरीक्षण

प्रखर जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विवि के नवीन मूल्यांकन भवन में परीक्षा नियंत्रक वी. एन. सिंह ने सोमवार को मूल्यांकन केंद्र का औचक निरीक्षण किया। मूल्यांकन के लिए जरूरी दिशा निर्देश दिए, मूल्यांकन केंद्र द्वितीय के समन्वयक डॉ. रसिकेश के साथ उन्होंने मूल्यांकन केंद्र की व्यवस्था पर लंबी बातचीत की। ज्ञातव्य हो कि नई शिक्षा नीति के तहत स्नातक के प्रथम एवं तृतीय तथा परास्नातक के प्रथम सेमेस्टर की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन पिछले 10 दिनों से चल रहा है। समाजशास्त्र, हिंदी , भूगोल , सैन्य विज्ञान , पत्रकारिता , दर्शनशास्त्र विषयों में मूल्यांकन समाप्ति की ओर है। वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र विषय का मूल्यांकन सोमवार से शुरू हो चुका है। कुलपति प्रो.निर्मला एस

मौर्य के निर्देश पर इस बार से परीक्षकों के प्रपत्र ऑनलाइन लिए गए तथा उसकी सत्यापित प्रति को मूल्यांकन केंद्र पर सत्यापित होने के बाद ही परीक्षकों को उत्तर पुस्तिकाएं निर्गत की जा रही है। मूल्यांकन समन्वयक डॉ. रसिकेश ने बताया की परीक्षकों की सहूलियत और सुचिता के लिए ही विवि इस बार से ऑनलाइन डाटा परीक्षकों का तैयार कर रहा जिससे आगामी दिनों में मूल्यांकन को त्रुटिरहित बनाया जा सके। निरीक्षण के दौरान सह समन्वयक डॉ. संजीव कुमार सिंह , डॉ अजित प्रकाश यादव मूल्यांकन प्रभारी अनिल निगोह , मन्नू मिश्रा , मनोज , शैलेश यादव सहित कर्मचारी प्राध्यापक उपस्थित रहे।

भाकियू का प्रतिनिधि मंडल जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में अगलगी की घटना में नुकसान हुए खेत व किसान से मिल कर दी सांत्वना

प्रखर मिजार्पुर।चुनार छेत्र के गोरखपुर माफी में भारतीय किसान यूनियन का प्रतिनिधिमंडल जिलाअध्यक्ष कंचन सिंह फौजी के नेतृत्व में , रविवार को सायं लगभग 5 बजे शॉर्ट सर्किट की वजह से किसानों के गेहूं की खड़ी फसल लगभग 20 बीघे जल जाने से प्रदेश महासचिव प्रहलाद सिंह, मंडल अध्यक्ष अनिल सिंह, जिला अध्यक्ष कंचन सिंह फौजी ,महिला मोर्चा अध्यक्ष सावित्री देवी जिला मीडिया प्रभारी धर्मेंद्र सिंह ग्राम अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह चंद्रहास पटेल व लल्लन सिंह किसानो के बीच पहुंचकर हाल जाना और प्रहलाद सिंह प्रदेश महासचिव ने मांग किया की जिला प्रशासन से मांग किया कि किसानों को 20000 प्रति बीघे मुआवजा, व 5000 रु पशुओं के भूसा के लिऐ दिया जाय । जिला अध्यक्ष कंचन सिंह फौजी ने मांग किया की इस मौसम में अधिकतर आगजनी की शिकायतें मिलती रहती है जिसको देखते हुए जिला प्रशासन हर थानो पर दमकल गाड़ी की व्यवस्था उपलब्ध कराया जाए जिससे कहीं भी घटना हो वहां जल्द से जल्द पहुंच कर आग पर काबू पाया जा सके। इस घटना में गोरखपुर माफी , पकरी ,डुमरी, कौवासात, के। किसानों मे ध्यान सिंह मदन सिंह, अनिल कुमार सिंह, सुनील कुमार सिंह कृष्ण मुरारी ,राधिका ,मल्लू राम, रामसूरत ,पंचम, रामधनी, मुराहू, बुद्ध, राम जनम ,रामलोचन, राम लखन, गिरधारी, किशोरी, भगवान दास, केवला देवी, बलवंत, मालती देवी, बुड़ावन पाल, बंशीधर ,सुरेंद्र यादव, महेंद्र यादव ,जगदीश प्रसाद जोगी उर्फ राम जी, हीरा, राजन पटेल ,बहादुर पटेल फूलचंद, मूलचंद ,संदीप, रामचंद्र , समदेई व अन्य किसानों का गेहूं की खड़ी फसल जलकर राख हो गई। राजस्व लेखपाल अशोक कुमार जी द्वारा मौके पर निरीक्षण कर मुआवजे के लिए रिपोर्टिंग किए। इस मौके पर क्षेत्र के काफी किसान उपस्थित रहे जिसमें फूलचंद राजेश पाल शिवाकांत ,शशीकांत पटेल, जोगीराम, बुड़ावन पाल, मदन सिंह, नीतीश कुमार पटेल, जगदीश प्रसाद, रामसूरत, रामचन्द्र,।

भाकपा माले ने किया सरकार विरोधी धरना प्रदर्शन

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। भाकपा माले के कार्यकताओं ने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत राहुल गांधी की संसद सदस्यता भाजपा सरकार के इशारे पर लोकसभा सचिवालय द्वारा तत्परता से खत्म करने की लोकतंत्र-विरोधी कार्रवाई तथा एससी/एसटी भूमि खरीद के नियमों में संशोधन के खिलाफ, बेमौसम बरसात और ओलावृष्टि से किसानो के बर्बाद हुई फसल का मुआवजा दो आदि सवालों को लेकर कामरेड सरजू पांडेय पार्क में धरना - प्रदर्शन किया। धरना प्रदर्शन को संबोधित करते हुए भाकपा माले के जिला सचिव राम प्यारे राम ने कहा कि सूरत की कोर्ट ने सजा को 30 दिन के लिए स्थगित कर अपील करने की मोहलत दी है। इसके बावजूद आनन-फानन में राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता समाप्त कर दी गई। भाजपा नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की यह कार्रवाई लोकतंत्र पर सर्जिकल स्ट्राइक है। सरकार बदला लेने और दुर्भावना की राजनीति कर रही है। यह विपक्ष को चुप कराने की कार्रवाई है। उन्होंने ने कहा कि देश में बेलगाम आपातकाल चल रहा है। यह समय विपक्ष को एकजुट होकर भाजपा के फासीवाद के खिलाफ लड़ने और लोकतंत्र की रक्षा करने का है। उन्होंने कहा कि एससी/एसटी की जमीनों को खरीदने से पहले डीएम की अनुमति जरूरी था। योगी सरकार ने दलित विरोधी चेहरा उजागर करतें हुए संशोधन किया है योगी सरकार के इस संशोधन से दलितों की रही सही भूमि

की लूट का रास्ता खुल जाएगा। इससे दलित समुदाय का कोई भला नहीं, नुकसान होगा। उन्होंने कहा कि अभी दलितों गरीबों वनवासियों आदिवासियों के पट्टे की ढेर सारी जमीनें दबंगों के कब्जे में पड़ी है। उनके आशियाना और आजीविका के साधनों पर बुल्डोजर चल रहा है। उनके मालिकाना वाली जमीनों पर कारपोरेट की नजर है जिसे हथियाने के लिए योगी सरकार का आवास एवं शहरी नियोजन विभाग यूपी टाउनशिप नीति 2023 उक्त संशोधन के साथ हाजिर हुई है। उन्होंने एससी एसटी भूमि खरीद के नियम में संशोधन रद्द करने की मांग उठाई। अखिल भारतीय खेत व ग्रामीण मजदूर सभा के जिला सचिव राजेश वनवासी ने कहा कि दिल्ली के अंदर मोदी विरोधी पोस्टर लगाने पर 138 एफआईआर दर्ज किया गया। उन्होंने बेमौसम बरसात और ओलावृष्टि से किसानो की बर्बाद हुई फसल का मुआवजा देने और जिले समेत प्रदेश भर में किसानों के सभी तरह के कर, और कर्जे वह अन्य देनदारियों को भी माफ करने की मांग उठाई। अंत में महामहिम राष्ट्रपति, तथा महामहिम राज्यपाल को संबोधित 4 सुत्रीय मांग पत्र नायब तहसीलदार सदर को सौंपा। जखनियां में भी एसडीएम को मांग पत्र सौंपा गया। धरना- प्रदर्शन को इंकलाबी नौजवान सभा के प्रदेश उपाध्यक्ष मनोज कुशवाहा, एपवा जिला सह सचिव मंजू गोंड, प्रमोद कुशवाहा, गुलाब सिंह, लालबहादुर बागी शान्ति देवी, रामबृक्ष मौर्य शकुन्तला देवी, ने संबोधित किया अध्यक्षता मोती प्रधान, संचालन योगेन्द्र भारती ने किया।

मिशन शक्ति की वर्षगांठ पर डीएम ने किया स्कूटी रैली का नेतृत्व

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मिशन शक्ति की वर्षगांठ पर महिला सशक्तिकरण रैली का किया गया। आयोजन मिशन शक्ति अभियान के तहत बालिकाओं तथा महिलाओं की सुरक्षा व उन्हें और अधिक सशक्त व जागरूक बनाने के उद्देश्य से गाजीपुर पुलिस द्वारा प्रतिदिन जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। आज सोमवार को नवरात्रि पर्व के छठवें दिन थाना कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत भूतियाटाड से जिलाधिकारी आर्यका अखौरी द्वारा स्वयं स्कूटी चला कर व स्कूली छात्राओं व महिला पुलिसकर्मियों द्वारा निकाली गई स्कूटी रैली को पुलिस अधीक्षक गाजीपुर द्वारा उत्साहवर्धन करते हुए रैली को हरी झंडी दिखाकर गंतव्य के लिए रवाना किया गया। यह रैली भूतिया टायर से शुरू होकर सावित्री बालिका इंटर कॉलेज नंदगंज पर समाप्त हुआ। रैली की समाप्ति पर सावित्री बालिका इंटर कॉलेज में छात्राओं द्वारा महिला सशक्तिकरण से संबंधित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया तथा विभिन्न छात्राओं द्वारा महिला सशक्तिकरण पर प्रकाश डालते हुए संबोधित किया गया।निकाली गई उक्त जागरूकता रैली के माध्यम से महिलाओं/ बालिकाओं/छात्राओं को यूपी पुलिस द्वारा चलाई जा रही सुरक्षा संबंधित सेवाएं जैसे- वुमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, पुलिस आपातकालीन सेवा 112, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, स्वास्थ्य सेवा 102, एम्बुलेंस सेवा 108 एवं अपने अपने सीयूजी नम्बरों के बारे में विस्तृत जानकारी देकर जागरुक किया गया। सभी बालिकाओं/ महिलाओं को हेल्पलाइन नम्बरों का निर्भीक होकर उपयोग करने हेतु तथा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने व निर्भीक होकर अपने अपने क्षेत्र में कार्य करने तथा शिक्षा ग्रहण करने के लिये प्रेरित किया।

सैकड़ों छात्रों ने लिया ओलंपियाड प्ररीक्षा में भाग

प्रखर दानगंज वाराणसी। दानगंज क्षेत्र के उमा मेमोरियल पब्लिक स्कूल ढेरही में आयोजित हिन्दुस्तान ओलंपियाड परीक्षा में क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों के सौ से अधिक छात्रों ने भाग लिया।परीक्षा में 12 वी तक छात्र भाग लिये। विद्यालय के प्रधानाचार्य लक्ष्मी नारायण चौबे ने बताया कि हिन्दुस्तान ओलंपियाड में मेधावी छात्रों को उनके केरियर के तैयारी का प्लेटफार्म उपलब्ध कराता है। कौरोना काल के बाद चार साल बाद आफ लाइन हो रही परीक्षा को लेकर छात्रों में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। छात्रा स्नेहलता सिंह ने परीक्षा के बाद बताया कि पेपर काफी अच्छा था। और बोर्ड परीक्षा के हिसाब से था। मनीष कुमार, सोरभ, सौरय चौबे, नाव्या चौबे, आयुषी पाल, सृष्टि सोनी, आंचल आर्य चौबे आदि छात्र में कहा की कोरोना

काल में आयोजित परीक्षा हर साल होने से हमे काफी फायदा देगा।परीक्षा में संतोष सिंह,रामेश्वर गिरि,मनोज पाण्डेय,अशिता सिंह,विनिता शर्मा ने योगदान दिया।

संक्षिप्त खबरें

हरिशंकर बने ब्लाक अध्यक्ष

प्रखर चिरईगाव वाराणसी। आल इंडिया फेयर प्राइज शाप डीलर्स फेडरेशन उत्तर प्रदेश ईकाई के जनपद वाराणसी में ब्लाक चिर ईगाव के पदाधिकारीयों का गठन किया गया जिसमें सर्वसम्मति से श्री हरिशंकर यादव को ब्लाक अध्यक्ष चुना गया। जमुना को उपाध्यक्ष राम लखन पटेल उपाध्यक्ष हौसला प्रसाद उपाध्याय अजय सहगल उपाध्यक्ष महासचिव सर्वजीत यादव कोषाध्यक्ष सुनील गुप्ता सचिव प्रमोद जायसवाल प्रिती गौतम अरविंद यादव जगरनाथ को बनाया गया।

पूर्णतया स्वचलित रोबोटिक जोड़ प्रत्यारोपण कर एपेक्स बना मध्य भारत का उत्कृष्ट सेंटर

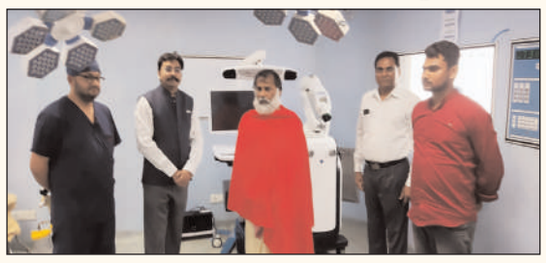

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। बीएलडब्लू स्थित एपेक्स सुपर स्पैशलिटी हॉस्पिटल वाराणसी में परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज की कृपा एवं आशीर्वाद से एवं उनके परम शिष्य वरिष्ठ संत श्री नारद जी महाराज के कर कमलों द्वारा विश्व की एकमात्र पूर्णतया स्वचलित एक्टिव रोबोटिक सिस्टम का शुभारंभ करते हुए एपेक्स अब मध्य भारत का नं वन उत्कृष्ट ओथोर्पेडिक सेंटर बन गया है चंदौली निवासी 56 वर्षीय एवं मिजार्पुर निवासी 63 वर्षीय महिलाओं का सफल जोड़ प्रत्यारोपण सम्पन्न एपेक्स के चेयरमैन वरिष्ठ ओथोर्पेडिक सर्जन डॉ एसके सिंह एवं जोड़ प्रत्यारोपण सर्जन डॉ स्वरूप पटेल द्वारा सम्पन्न किए गए जोड़ प्रत्यारोपण के उपरांत अवगत कराया कि रोबोटिक जोड़ प्रत्यारोपण के दौरान आर्टिफिश्यल इंटेलिजेंस द्वारा मरीज की ओटी में ली गई रियल टाइम 3डी सीटी इमेज, फीमर और टीबीय के एक्सिस को मिलाते हुए इंप्लांट का सटीक प्रतिस्थापन होने से स्वस्थ्य मांसपेशियां पूरी तरह सुरक्षित रहीं और कम दर्द एवं कम रक्त की हानि के साथ बिना किसी त्रुटि के सफल प्रत्यारोपण संपादित किया गया एपेक्स के चेयरमैन डॉ एसके सिंह ने स्पष्ट किया कि सर्जन द्वारा पूर्णतया स्वचालित रोबोट के माध्यम से की गई सर्जरी से सर्जिकल त्रुटियों, जटिलताओं एवं साइड इफेक्ट की समभावनाए नहीं होती हैं तेज रिकवरी और इंप्लांट की लंबी आयु के साथ मरीज एक बेहतर जीवनशैली का यापन करता है।

डिवाइन संस्कारशाला द्वारा नवदुर्गा देवियों की सजायी गयी झांकी बच्चों ने किया डांडिया और गरबा

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। नवरात्रि के पावन पर्व के उपलक्ष्य में वाराणसी के महमूरगंज स्थित डिवाइन संस्कारशाला द्वारा माँ जगदंबा के शक्तियों और स्वरूपों को दशार्ने वाली अति सुंदर, मनभावन चैतन्य नवदुर्गा देवियों की झांकी सजाई गयी` छोटी - छोटी कन्याओ द्वारा सजी चैतन्य देवियों की झांकी सभी को बहुत पसंद आई सभी बच्चों ने डांडिया और गरबा भी किया` इस कार्यक्रम में भाजपा महानगर कोषाध्यक्ष डॉ रचना अग्रवाल एवं होमियोपैथिक डॉ अश्विनी मुख्य अतिथि के रूप मे मौजूद रहे। इस कार्यक्रम में बीके लता, बीके अरुण, बीके यश, बीके हर्ष समेत कई लोग उपस्थित थे।

यूसूफपुर खड़वा के ठाकुर द्वारा में रामचरितमानस का अखंड पाठ प्रारंभ आज होगी समापन प्रसाद वितरण

प्रखर जखनियां गाजीपुर। राष्ट्र तथा मानवता की सेवा में रत आध्यात्मिक ऋषि मुनियों की सिद्ध पीठों की पवित्र धरती गाजीपुर के मनिहारी क्षेत्र के बेसो नदी तट पर यूसुफपुर (खड़वा) में स्थित अति प्राचीन राम जानकी मंदिर (ठाकुरद्वारा) में रामचरित मानस पाठ का अखण्ड पाठ किया जा रहा है। बताते चलें कि यह अत्यन्त प्राचीन मन्दिर, क्षेत्र के दर्जनों गावों के श्रद्धालुओं का पूजनीय स्थल है। विगत कई वर्षों से प्रत्येक मंगलवार को सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया जाता रहा है। मानवता की रक्षा तथा धर्म की स्थापनार्थ व लोगों में मानवीय भावना जागृत करने के उद्देश्य से इस वर्ष 27 मार्च दिन सोमवार को प्रातः नौ बजे से रामचरितमानस का पाठ का शुभारंभ किया गया है। कल मंगलवार को प्रातः दस बजे से संपूर्ण सुंदरकांड पंक्ति पर यज्ञाहुति हवन और प्रसाद का वितरण किया जाएगा। मंदिर के पुजारी ने भक्ति भावना से ओतप्रोत क्षेत्रीय जनों व श्रद्धालुओं से इस सुअवसर पर उपस्थित होकर प्रसाद ग्रहण करने का अनुरोध किया है।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट https://prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं